

श्रीश्रुतज्ञानअमीधारा सीरीज नंबर ५
विश्वहितबोधिदायक श्रीअमीविजयगुरुभ्यो नमः
सुगृहीतनामधेय श्रीमन्नेमिचंद्रसूरीश्वरगुम्फितं
श्रीअनन्तनाथचरित्रादुद्धृतं पूजाष्टकम्

संपादक

आचार्य विजयक्षमाभद्रसूरिः

प्रकाशक

शाह रायचंद गुलाबचंद मु० अच्छारी, पोष्ट भिलाड (गुजरात)

विक्रम संवत् १९९७

वीरसं. २४६६

इसवी सन १९४०

Published by Shah Raychand Gulabchand, Acchari Station Bhilad, B. B. & C. I. Ry.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya Sagar Press, 26-28,
Kolbhat Street, Bombay.

प्राप्तिस्थानम्—आचार्य श्रीविजयदानसूरीश्वर जैनग्रन्थमाला गोपीपुरा—मु० सुरत. पोष्टेज पेकिंग खर्च चार आना

श्रीश्रुतज्ञानअमीधारा ग्रन्थाङ्क नं: ५
श्रीमन्नेमिचन्द्रसूरीन्द्रगुम्फितं
श्रीअनन्तनाथचरित्रादुद्धृतं पूजाष्टकम् ।

विश्वहितबोधिदायकश्रीअमीविजयगुरुभ्यो नमः ।

जयइ जुगाइजिणिंदो परिवलिसिरसमवसरणचउरुवो । वागरिउं पिव सुहदाणसीलतवभावणाधम्मो ॥ १ ॥ सो
जयइ जिणोणंतो देसणदंसणंसुणो सया जस्स । केवलरविकिरणा इव तममवणिता वियंभंति ॥ २ ॥ सिरिवद्धमाण-
सामिं नमामि कणयाभदेहदित्तीए । कुणमाणं पिव भुवणं सबंपिय अत्तणो तुलं ॥ ३ ॥ सम्मत्तनिच्चलत्तं किरियाए जीए
होइ तं कहह । जह निच्चंपि हु पहु सिद्धिसाहयं तं करेमि अहं ॥ ४ ॥ तो आह तिजयनाहो नरिंद निमुणेसु तस्स
निच्चलया । जायइ जिणपूयाए भत्तीए तिसंज्झविहियाए ॥ ५ ॥ जिणपूया पावहरी जिणपूया जायए भवंतकरी । जिण-
पूया सब्बाणवि कल्लाणमणीण भंडारो ॥ ६ ॥ अवहरइ दरिदत्तं पणामए तिजयलच्छिविच्छडुं । जिणपूया कीरंती पणा-
सए सब्बदुरियाइ ॥ ७ ॥ कुसुमक्खयफलजलधूवदीवनेवज्जवासनिम्माया । पूया जिणेसराणं सा अट्टविहा विणिहिट्ठा
॥ ८ ॥ वरपरिमलेहिं कुसुमेहिं पूयए जो जिणे सबहुमाणं । पूयापत्तं जायइ जिणप्पसाया गुरूणवि सो ॥ ९ ॥ जो
जिणपयपउमपुरो पूयत्थं खिवइ अक्खए खिप्पं । सासयसोक्खे मोक्खम्मि अक्खओ होइ सो पत्तो ॥ १० ॥ एके-
णावि फलेणं जिणरत्तो जो उवायणं कुणइ । ता तप्पसायओ लहइ सो धुवं सब्बसिद्धिसिरिं ॥ ११ ॥ पत्तगएण जिणिंदं

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ १ ॥

जो सच्छस्साडसीयलजलेण । पूयइ सो तेणेवय पक्खालइ नियमलं नियमा ॥ १२ ॥ जो घणसारं अगरं च दहइ
जिणअंगधूवणनिमित्तं । सो घणसारो जायइ अगुरु धणओ वि जस्स पुरो ॥ १३ ॥ जो मंगलप्पईवेण पूयए सामिसा-
लजिणचंदं । सो दीवसिहा उज्जलमुत्ती सग्गासिरिं रमइ ॥ १४ ॥ जे निरवज्जं भोज्जं नेवज्जे जिणवरस्स जच्छंति ।
भोत्तूण ते अ(ऽ)णवज्जाइं ल(भ)वसुहाइं सिवं जंति ॥ १५ ॥ जो सुहवासेहिं जिणेसरस्स पूयइ पायसयवत्तं । सो सुहवासं
मि सया सिवालए सासओ वसइ ॥ १६ ॥ एयाओ अट्ठवि कुणइ जो सया भत्तिनिब्भरो भवो । सो अट्ठकम्ममुको
संपज्जइ सासओ सिद्धो ॥ १७ ॥ सवाहिंवि असमत्थो एक्काएवि पूयए जइ जिणं जो । ता सोवि भावसुद्धीए
पावए सिद्धिसंबंधं ॥ १८ ॥ एयाउ राय कहियाउ तुब्भ पूयाउ इय जिणुत्तम्मि । भणइ निवो पणयपहू सीमंतयरइय-
करकोसो ॥ १९ ॥ जयनाह साहसु महं महंतकोऊहलाउलमणस्स । दिट्ठंते अट्ठाणवि पूयाणिहिं कयपसाया
॥ २० ॥ जंपइ जिणेसरो सुणसु राय कयअप्पमत्तमणवित्ती । संपइ साहिज्जंते दिट्ठंते अट्ठ पूयासु ॥ २१ ॥ इह
डुंगदेव डुंगयपडाय वानरय चंदंतेयक्खा । साहससार अकिंचण रणसूर धर्णावहा पुरिसा ॥ २२ ॥ होउं कमेण एक्के-
क्कपूयकरणेण गरुयरायाणो । सिरिंकुसुमसेहरक्खयकिंत्तिफ़लसारं जलसारा ॥ २३ ॥ सिरिंधूवसुंदरो तह भुवणपई-
वो पईवसिहवत्तो । भुवणप्पमोयगो गंधबंधुरो सिवपुरिं पत्ता ॥ २४ ॥ कुलयं । कुसुमेहिं जेण पूइय जिणेसरं पाविया
महारिद्धी । तं कुसुमसेहरकहं कहिज्जमाणं निसामेह ॥ २५ ॥ पुरमत्थि फ़ुरियमहापहाविरायंतरयणपायारं ।
रयणप्पायारं नाम गुरुविमाणं सुरपुरं व ॥ २६ ॥ रयणीसु जत्थ ससिरयणचंदसालागलंतसलिलेण । भवणाइं
नीरयाइं भवंति मुणिमाणसाइं व ॥ २७ ॥ तत्थत्थि हत्थिहयरहजोहोहपसाहियाहियसमूहो । विलसिररयणाभरणो
रयणाभरणोत्ति नरनाहो ॥ २८ ॥ आयड्डियासिपडिफ़लियतरणिकिरणावलीकलियकाओ । पयडपयावप्पसरोव जो

कुसुम-
पूजायां
कुसुम-
शेखरकथा

॥ १ ॥

रणे रीण दुनिरिक्खो ॥ २९ ॥ सबंतेउरतरुणीपहुत्तपयवीपइट्टिया जाया । तस्सत्थि हत्थिमंथरगइगमणा रयण-
 मालत्ति ॥ ३० ॥ चित्तव चित्तवासा अमुक्कपासा सकीयछायव । निययपयइव सया जा दुम्मोया मणायंपि ॥ ३१ ॥
 ताणत्थि तारतारुन्नललियलायन्नपुन्नसवंगी । अंगीकयसयलकला कन्ना रयणावली नामा ॥ ३२ ॥ पीयाए सुराए
 इव दिट्ठाएवि जीए होइ उम्माओ । तरुणाण विवेईणवि अविवेईणं तु का गणणा ॥ ३३ ॥ सा जत्थ जत्थ कीला-
 करणकए जाइ रूवविजियरई ॥ गच्छंति तत्थ तत्थय परवसा सेवयव नरा ॥ ३४ ॥ कइयावि मयंकमुही सहीजुया
 सा सुहासणासीणा । सियलत्तचलिरचमरालंकरिया निग्गया नयरा ॥ ३५ ॥ पत्ता य मत्तमहुयरनामे सिसिर-
 हुमस्मि आरामे । दट्ठूण मयणभवणं उत्तिन्ना जा विसइ तत्थ ॥ ३६ ॥ ता नियइ रंगमंडवगवक्खभदासणट्टियं एक्कं ।
 रायकुमारं मयणं व निग्गयं भवणगब्भाओ ॥ ३७ ॥ करकलियकेलिकमलं नियरूवनियंबिणीजणियमयणं । सुसि-
 णिद्धमुद्धदीहच्छिजोण्हधवलीकयगनहं ॥ ३८ ॥ तं पेच्छिउं मयच्छी चित्तइ को एस दीसइ महप्पा । अच्चब्भुयरूव
 धरो सिंगारी चारुतारुन्नो ॥ ३९ ॥ नूणं पक्खलोच्चिय एसो धम्मो इमाउ संजायं । जं मज्झ अणिमिसत्तं सहसत्ति
 निरंतरायसुहं ॥ ४० ॥ पुवभवुप्पन्नमहापुन्ना रायेण तीए फलियव्वं । तूलिव्व अंगसंगं इमस्स जा पाविही बाला ॥ ४१ ॥
 सच्चिय जयप्पवित्ता विलसन्तसुवन्नरयणरमणीया । जा मुदियव्व लहिही करगहणमिमस्स सुहयस्स ॥ ४२ ॥ सच्चिय-
 उत्तमगमणा विवभमरहिण सुपत्तरसजाए । रमिही इमस्स जा माणसे सया रायहंसिव्व ॥ ४३ ॥ इय चित्तंती जाया-
 समसज्झससेयकंपकलियंगी । पक्खलियपया पविसइ अविइण्हं तं पलोयंती ॥ ४४ ॥ वरदाणपरंपि ममं
 मुत्तुमिमा नियइ अन्नमइनेहा । इय चित्तिय कुविण्णव कामेण सरेहिं पहया सा ॥ ४५ ॥ मयणेण नडिजंती थिर-
 सरलसिणिद्धवंधुरच्छीहिं । सच्चविया असरिसरूवहरियहियण्ण कुमरेण ॥ ४६ ॥ एयाए अहो रूवं मोहइ मणमवि

कुसुम-
 पूजायां
 कुसुम-
 शेखरकथा

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ २ ॥

पसंतमोहाण । गुरु रायायत्ताणं मह सरिसाणं तु का वत्ता ॥ ४७ ॥ सोच्चिय गुरुरायधरो सोच्चिय सरसो इमाए बालाए ।
सबंगसंगमं जो लिहिही घुसिणगरागोब ॥ ४८ ॥ सो चेव चारुवन्नो पवित्तगुरुमुत्तसियगुणमहग्घो । एयाए मयच्छीए
हियए हारोब जो वसिही ॥ ४९ ॥ इए चिंततो संतो मयणायत्तो ठिओ कुमारोवि । सूरचरिओवि कायरनरनियर-
निदरिसणं जाओ ॥ ५० ॥ धवलइ कुमरं बाला नियच्छिजोण्हाए सोवि रायसुयं । पञ्चुवरंति सिग्घं गरुया रइओव-
यारम्मि ॥ ५१ ॥ तं पेच्छरी कुमारी पत्ता पासंचि कामपडिमाए । सविणयपणामपुबं पूयं काउं समारद्धा ॥ ५२ ॥
परिपूयंती मयणं पुणो पुणो पेच्छरी कुमरवयणं । दंसइ मयणस्सव तं दइयमिमं देहि मज्झत्ति ॥ ५३ ॥ पूयाए जाइ मयणे
तद्धिटी निवसुएणुरायेण । रूवंतरं व दहुं पइक्खणं कामकुमराण ॥ ५४ ॥ पुच्छइय मयणिं नाम नियसहिं को वयंसि
एस जुवा । तीए कुमारथइयावहाउ नाऊण कहियं से ॥ ५५ ॥ सहि सुणसु कुसुमसुंदरनयरे निययप्पयावजिय-
तरणी । कुसुमावयंसयनिवो भज्जा कुसुमस्सिरी तस्स ॥ ५६ ॥ पउरगुणपउरनयरं ताण सुओ कुसुमसेहरो नाम ।
सयलकलाकलियतणू नियजोवणरमणिमणहरणो ॥ ५७ ॥ भत्तस्स विणीयस्सवि नीइपरस्सावि तस्स नरवइणा ।
केणावि कारणेणं पराभवो विरइओ दूरं ॥ ५८ ॥ तं अवमाणं काऊण माणसे अद्धरत्तसमयम्मि । परिमियपरिवार-
जुओ चलिओ देसंतरे कुमरो ॥ ५९ ॥ इह पत्तो विन्नातो तुह जणएणं अणिच्छमाणोवि । गंतुं पञ्चोणीए रिद्धीए
पवेसिओ एत्थ ॥ ६० ॥ संमाणिऊण भणितो मा गच्छसु वच्छ अच्छसु इहेव । जं मज्झ तुज्झ जणओ मित्तो अच्चंतगोरवो
॥ ६१ ॥ ठाउमणिच्छंतोवि हु निवोवरोहा इहट्ठिओ स इमो । अणभिमयं पि न गरुया दक्खिन्नपरा परिहरंति ॥ ६२ ॥ तं
सोउं रायसुया चिंतइ जुत्तो इमंमि अणुराओ । नवरं एसो रत्तो नो वा संपइ न याणामि ॥ ६३ ॥ कुमरेणुत्तो थइयावहो
अरे मंतिं किमेयाए । तेणुत्तं निवक्कनासहीए तुह पुच्छियं चरियं ॥ ६४ ॥ कुमरनिरिक्खणलुद्धा निवत्तियकामपडिम-

कुसुम-
पूजायां
कुसुम-
शेखरकथा

॥ २ ॥

पूयावि । तन्भवणपेच्छणछला महइं वेळं ठिया बाला ॥ ६५ ॥ वारं वारं चलसुत्ति सोविदल्लीहिं विन्नविज्जंती । पक्ख-
लियकमं तं पेच्छिरी गया जाणमारुहिउं ॥ ६६ ॥ गच्छंती कुमरेणं पलोइया सोवि तीए सच्चविओ । अणुरत्ते जंताइं
धरिउं को तरइ नेत्ताइं ॥ ६७ ॥ नयणपहमइकंताए तीए अरई कुमारमणुपत्ता । लहइच्चिय अवयासं कइयावि अणिट्ठ-
भज्जावि ॥ ६८ ॥ रंमं पि तच्चिओए उज्जाणं पिइवणं व दुक्खकरं । कलयंतो कुमरो तुरियं तुरयमारुहिय संचलिओ
॥ ६९ ॥ नयरपउल्लिं पविट्ठो सुणइ समाउलियलोयहलबोलं । नियइ य गुरुतरुघरपुरसालारूढं सभयलोयं ॥ ७० ॥
किमिमंति कयवियक्को पेच्छइ सुन्नासणं गयाहिवइं । पाडंतं पासाए मारंतं तुरय-नर-करहे ॥ ७१ ॥ चरणागरिसिय-
संकलसरेण नियडयखडक्खडाए य । गलगज्जिएण य जणं जो जाणावन्तो व धावेइ ॥ ७२ ॥ मा महभारकंता भूमी
मुच्छिज्जउत्ति कलिउं व । सिंचंतो गुरुफुक्कारसिक्करासारसलिलेण ॥ ७३ ॥ चलकन्नतालचालियससहरसिय-
चारुचमरजुयलेण । जो वीयइ दंतसुहासणट्ठियं रायलच्छि व ॥ ७४ ॥ दट्ठुं सुहासणट्ठियनिवतणयं धाविओ
करि तो । सा ज्झंपाए समुत्तिन्ना नियडेणत्थे थिरो को वा ॥ ७५ ॥ पीणपओहरगुरुतरनियंबभरमंथरक्कमगईए ।
नासिउमतरंती सा गहिया करिणा कुंरंगच्छी ॥ ७६ ॥ दूरुक्खित्ताए पवणप्पसारिओ तीए कुंतलकलावो । समयगय-
कडतडुड्डीणभमरनियरोव रेहेइ ॥ ७७ ॥ वियसियसिरीसकुसुमोहसमहियप्फासलालसेणं व । गाढं गण निय-
करदंडेणालिगिया बाला ॥ ७८ ॥ करिणा हरिणंकमुही सुमुही विहिया विहाइ गयणयले । नियकुंभतत्थणाण व
पीणत्तं दट्ठुकामेण ॥ ७९ ॥ मा मह भएण एसा मुच्छिज्जउ इय विभाविऊण करी । तं वीयइव चलकन्नतालजुयताल-
घंटेहिं ॥ ८० ॥ तं दट्ठुं रायसुओ झडित्ति मुत्तुं तुरंगमं वेगा । उद्धाइओ गयं पइ हक्कंतो कक्कससरेण ॥ ८१ ॥ रे रे
दुट्ठ गयाहम मोत्तुं नारिं वलेसु मह समुहं । जइ सत्तमत्थि इय सुयकुमरालावा भणइ कुमरी ॥ ८२ ॥ मह कीडिय-

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ३ ॥

कप्पाए कज्जे भुवणोवयारकरणखमं । नररयण मा विणाससु अत्ताणं करिकयंताओ ॥ ८३ ॥ सुयकुमरीविन्नवणो सो जंपइ तंपि भुवणगन्धम्मि । वससि तओ रक्खिस्सं चइउं पाणेवि तं नियमा ॥ ८४ ॥ मह करगयावि चाटूणि करेइ कुमरस्स इय विभावेउं । कुविण्ण व करिणा सा खित्ता दूरं गयणमग्गे ॥ ८५ ॥ विज्जाहरिं व गयणे गच्छंतिं तं पलोइरो कुमरो । जाओ पमत्तचित्तो तो संगहियो गइं देण ॥ ८६ ॥ मिलसु नियवल्लहाए तुमंपि इय चिंतिउं व कुविण्ण । करिणा कुमरो वि नहे खित्तो तीए पडंतीए ॥ ८७ ॥ मरिही एसा एइहहूरा रयनिवडियत्ति कलिऊण । परिसत्ता करुणाए नेहेण व तेण सा गाढं ॥ ८८ ॥ आलिं गियाए तीए पडइ अहो निवसुओ निराहारो । थीफासलालसाणं अहोगईए न संदेहो ॥ ८९ ॥ एत्थंतरंमि वेगागएण नहयरनरेण एक्केण । तहुगमवि अवरुंडिय नरनयणागोयरे नीयं ॥ ९० ॥ तो पलवंतो लोगो अतरंतो लग्गिउं खयरमग्गे । गंतूण कहइ रन्नो कुमारकुमरीणमवहरणं ॥ ९१ ॥ तं सोउं आउलितो चलितो राया निरिक्खणे ताणं । पेरियतरलतुरंगो परियडइ पुरस्स चउपासं ॥ ९२ ॥ अप्पत्तत्तप्पउत्ती दुरयरमहिं पलोइउं वलिओ । रुयइ रुयावि-यलोगो सहमागंतुं गुरुसरेण ॥ ९३ ॥ हा वच्छे हा वच्छे हहा अतुच्छे हहा विणयदच्छे (क्खे) । हा सुकुमाले बाले अवहरिया केण तं कहसु ॥ ९४ ॥ हे देव निहतो तं बालं पुत्तं तथा हरेऊण । कंनंपि अवहरंतो खयंमि खारं खिवसि खुइ ॥ ९५ ॥ हा मह सहा वि सुन्ना तुह विरहे कुसुमसेहरकुमार । एरिसदुह(दं) सणत्थं पवसंतो तं मए धरिओ ॥ ९६ ॥ अंतेउरपउरजणेणं राइणा तह तथा तहिं रुन्नं । जह नयणजलासारो वित्थरितो वरिसयालोव ॥ ९७ ॥ एवं पलवंताणं ताणं तइए दिणे तरणिष्ठदये । खयरविमाणगणेणं पत्तो कुमरीजुतो कुमरो ॥ ९८ ॥ पणतो य महीवइणो सखेयरो निवसुयावि तं नमइ । आपुच्छिय कुसलाइं ताइं निविट्ठाइं निवपुरतो ॥ ९९ ॥ रायाह कुमर साहसु हरणागमणाण निययवुत्तंतं । तो तं कुमराणाए कहिउं लग्गो खयरचक्की ॥ १०० ॥ देवत्थि दियवरम्मिं व वेयड्ढे गुरुगिरिम्मि मणिभवणं । नयरं रहनेउरचक्कवाल नामं मणभि-

कुसुम-
पूजायां
कुसुम-
शेखरकथा

॥ ३ ॥

रामं ॥ १ ॥ तं परिपालइ विज्जाहराहिवो नयणवेग अभिहाणो । गहियवयभरसिरिकिरिणवेगखयरिंदअंगरुहो ॥ २ ॥
दाहिणनंदीसरगरुयवेगवलिण तेण सच्चवियं । अन्नोन्नं परिसत्तं पडन्तमिंथीपुरिसजुयलं ॥ ३ ॥ अच्चंतरूवरमणीरमणं
पइ रइयबुद्धिणा तेण । तहुगमवि अवहरिउं नीयं सेले विसालगगे ॥ ४ ॥ तो थंभणीए विज्जाए थंभिउं पुरिसमाह रमणिं
सो । मं अणुरत्तं भत्तं भत्तारं सुब्भु मन्नेसु ॥ ५ ॥ तीउत्तं तं सुपुरिस भाया मह नियसहोयरसरिच्छो । ता उभयभवविरुद्धं
तुमए नो किंपि वत्तवं ॥ ६ ॥ अवरं च न सायत्ता अहं जतो जणायदिन्निया कन्ना । वीवाहिज्जइ सेच्छा जुत्ता न भवारि-
साणंपि ॥ ७ ॥ तुम्हारिसावि उत्तमकुलुब्भवा जइ मुयंति मज्जायं । ता बंधव अकुलीणाण पावकारीण का वत्ता ॥ ८ ॥
किं नियपियासरीराउ मह सरीरम्मि समहियं किंपि । दिट्ठं जं भाय तुमं संपइ जंपसि अवत्तवं ॥ ९ ॥ वित्थरइ
जरा परिगलइ जोवणं जाइ जीवियवंपि । किं नाम सासयं तुह देहे जमकज्जसज्जोसि ॥ १० ॥ मुत्तंतपुरीसवसावासे
दुग्गंधमलविलीणंमि । मह देहे किं सारं जं रायरसे तुहुकरिसो ॥ ११ ॥ एत्थंतरंमि चउनाणनायनियपुत्तपाववुत्तंतो ।
तबोहत्थं सिरिकिरणवेगसूरी तहिं पत्तो ॥ १२ ॥ तेणुत्तं भो सावय किं तुज्झ कुलक्कमो इमो जमिमं । पारद्धं
तुमए निंदणिज्जमुत्तमनराण जतो ॥ १३ ॥ लज्जिज्जइ जेण जणे मइलिज्जइ नियकुलक्कमो जेण । कंठट्टिएवि जीए
कुणंति न कयाइ तं सुयणा ॥ १४ ॥ किं पुत्त पिइपियामहपमुहेहिं वयं कयं हवइ जेसिं । ते इव निम्मज्जाया तुमं व
पावप्पिया हुंति ॥ १५ ॥ अवरं च इमा भइणी सहोयरा तुह मुणेमि नाणेण । जं रयणप्पायाराहिवरयणाभरणभूवइणो
॥ १६ ॥ तं अंगरुहो जेट्ठो एसावि सुया कणिट्ठिया तस्स । वच्छ मए तं हरिओ निवभवणा मासमेत्तवओ ॥ १७ ॥
कुमरीवयणविरत्ते चित्ते पिइसिक्खणेण संवेगो । लग्गो खेयरवइणो पासियवत्थम्मि रंगोव ॥ १८ ॥ तो तेण पाय-
जुयले लग्गोऊणं खमाविया भइणी । उत्थंभिउं कुमारं पणमिय सूरीण विन्नत्तं ॥ १९ ॥ पहु मोहमहाकूवे अविवेयजले

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ४ ॥

निमज्जिरो तुमए । नियवयणवरत्ताए उद्धरिओ हं दयानिहिणा ॥ १२० ॥ परिभोगो इयराएवि पररमणीए पयच्छए
नरयं । किं पुण नियभइणीए आजम्मं पूयणिज्जाए ॥ २१ ॥ ता पहु कंनाए समं नियरज्जं अप्पिऊण जणयस्स । संगहि-
यसवविरई तुह चरणाराहओ होहं ॥ २२ ॥ ठायवं तुब्भेहि रहनेउरचक्कवालनयरम्मि । इय जंपिय गुरु कुमरी
कुमरजुओ सो गओ सपुरे ॥ २३ ॥ दुगमवि सम्माणेउं वत्थाहरणेहिं खयरवलकलिओ । इह पत्तो तुम्ह सुतो सो हं
इय साहियं तुम्ह ॥ २४ ॥ ता ताय अहं जाओ दुप्पुत्तो तुम्ह जं मए दिन्नं । नियविरहेणं कुमरीहरणेण य दारुणं
दुक्खं ॥ २५ ॥ इय जंपंतो भणितो निवेण मा पुत्त खेयमुवहसु । दोसो न अम्ह दोण्हवि किं तु इमं दुक्कयकम्मफलं
॥ २६ ॥ पुवभवे तवचरणं कयं मए किं तु संतरायं तं । जं तुह सरिसो पुत्तो जातो हरिओ य मिलिओ य ॥ २७ ॥
जायं कन्नाहरणं कन्नाहरणंव परमक्कल्लणं । जस्सप्पभावतो मे सुचिरेणवि पुत्त मिलिओ तं ॥ २८ ॥ इय जंपिऊण
गाढं जणएणालिगितो सुतो तयणु । जणणीए नओ तीयवि अवहंडिय चुंविओ भाले ॥ २९ ॥ खेयरवइणा पुत्तो जणतो
तं गिण्ह ताय मह रज्जं । परिवज्जियसावज्जं पवज्जं पुण अहं काहं ॥ ३० ॥ तं भणइ पिया परिणयवयस्स मज्झवि य
जुज्जए दिक्खा । काहं नाहं विरहं इण्हिपि तए समं जाय ॥ ३१ ॥ दोण्हंपि सम्मएणं कुमरिं परिणाविऊण कुमरस्स ।
दिन्नं तं रज्जं तो पत्ता सवेवि वेयड्ढे ॥ ३२ ॥ तत्थवि अहिसिंचिय कुसुमसेहरं खयररायरज्जम्मि । खेयरनरनाहेहिं
गहिया दिक्खा गुरुसयासे ॥ ३३ ॥ पणमित्तु कुसुमसेहराया पुच्छइ गुरुं कहह भयवं । मह पुवजम्मसुकयं जं जाओ हं
खयरचक्की ॥ ३४ ॥ आह पहु आयन्नसु रयणवईए पुरीए तं राय । कम्मयरो आसि अईवदुग्गओ दुग्गदेवोत्ति ॥ ३५ ॥
कइयावि नाणनिउणाभिहाणसूरीहिं भवपरिस्राए । साहिप्पंतं निसुयं जिणिंदपूयट्ठगं तेण ॥ ३६ ॥ तहाहि ॥ फलकुसुमक्ख-
यजलधूवदीवनेवज्जवासनिम्माया । कीरइ एसा अट्ठप्पयारपूया जिणिंदाण ॥ ३७ ॥ सच्चाओवि असत्तो काउं सयवत्तपमु-

कुसुम-
पूजायां
कुसुम-
शेखरकथा

॥ ४ ॥

कुसुम-
पूजायां
कुसुम-
शेखरकथा

हसुमणेहिं । पूयइ जो जिणचंदे सो सामी हवइ सुमणाण ॥ ३८ ॥ माणुसभवेवि नूणं जिणपूया पुन्नपगरिसपभावा ।
अंगं पि कुसुमपरिमलमुगिरइ सयावि सत्ताण ॥ ३९ ॥ किं बहुणा भोत्तूणं असुरनरामरपहुत्तरिद्धीतो । सिद्धिं पि धुवं
पावइ पाणी जिणनाहपूयाए ॥ ४० ॥ इय आयन्निय बावन्नदेवउलियाजुयम्मि पत्तो सो । कीरविहाराभिहजिणहरम्मि
मणिकणयघडियम्मि ॥ ४१ ॥ जाईसरेण जं कीरपक्खिणा भणिय पुत्तजयसेणं । कारवियं नायज्जियधणेण बहुमाण-
सारेण ॥ ४२ ॥ जं चउदिसिपडिबिंबियपाडलकलियाहिं भमिरभमराहिं । नियइव भावरिउणो कोवारुणनयणनिय-
रेण ॥ ४३ ॥ आभाइ निरब्भनिसिप्पडिबिंबियतारतारयप्पयरं । जं भत्तिनिब्भरामरविरइयसियकुसुमवरिसं व ॥ ४४ ॥
तम्मि पविसिय नायज्जिएण दब्बेण गहिय कुसुमाइं । आणंदपुलइयतणू पूयइ सो रिसहजिणनाहं ॥ ४५ ॥ तप्पुन्नप-
भावेणं रिद्धिं भोत्तुं भवम्मि तम्मि ततो । जातो तं खयरवई इय कहियं राय तुह चरियं ॥ ४६ ॥ तं सोउं
जाईसरणनाणविन्नायपुबभवचरिओ । रायाह जह पहूहिं कहियं दिट्ठं मएवि तहा ॥ ४७ ॥ तो रयणाभरणमुणी भणइ
मुणिंदं कहेह मह भयवं । किं सुयसुयाण विरहो बहुथोवदिणाणि जाओ मे ॥ ४८ ॥ आह पहू आरामियपुत्तो कणकिन्न-
नामगामम्मि । आसी अंड(ब?)यनामो कीरसुओ गोविओ तेण ॥ ४९ ॥ तो तं अनियंतं कीरजुयलमच्चंतदुक्खियं जायं ।
करुणं कूयइ असूणि मुयइ मुच्छियएणुकलं ॥ ५० ॥ जणएणुत्तं पुत्तय मुंचसु तणयं सुयाणमिणिं हपि । मा पुत्तविउत्ताणं
इमाणमच्चाहियं होही ॥ ५१ ॥ तो तेणमइक्कंतेसु नवमुहुत्तेसु सुयसुओ मुक्को । तो संजातो तोसो कीरीकलियस्स कीरस्स
॥ ५२ ॥ समयंतरंमि कम्मवि अवहरिया सारसीसुया तेण । तो तज्जणणिं दुहियं दट्ठुं सहसत्ति सा मुक्का ॥ ५३ ॥
कइयावि मासखमणे आरामे तंमि संतिथं साहुं । निच्चं पि पज्जुवासइ भत्तिब्भरनिब्भरो संतो ॥ ५४ ॥ भोयणकरणनिविट्ठेण
तेण तत्थेव मासपारणए । पडिलाहितो मुणी सो सद्धासहियेण परमन्नं ॥ ५५ ॥ तप्पुन्नपभावा सो अमरो होउं तुमं

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्

॥ ५ ॥

निवो जातो । कीरजुएण वि भमिउं भवम्मि समुवज्जिउं(अं) सुकयं ॥५६॥ कीरो जाओ हं किरणवेगखयराहिवो सुई वि हु
मे । किरणावलित्ति कन्ना जाया नवरं अपुत्तो हं ॥५७॥ जा अंब(ड ?)एण हरिया सारसिया तीए सरतडे जणणी । बाणेण
लोइएणं विद्धा खवगेण सच्चविया ॥५८॥ पंचपरमेद्धिमंतो दिन्नो से तेण तयणु सा सग्गे । अमरत्तसिरिं भोत्तु संजातो
तुह इमो पुत्तो ॥ ५९ ॥ नहयलचलिएण मए दिट्ठो सपिएण मासमेत्तवओ । कीरहरणुत्थपावोदएण तुह सो मए हरिओ
॥१६०॥ पडिवन्नो पुत्तत्तेण नयणवेगोत्ति तयणु कयनामो । समयंमि तस्स रज्जं दाउं दिक्खा मए गहिया ॥६१॥ नंदी-
सरवलिएणं हरिया तुह कन्नया तओ तेण । अंबयभवसमुवज्जियसारसियाहरणपाववसा ॥ ६२ ॥ अंद्वारसघडियाहिं
अद्वारसवच्छराणि सुयविरहो । जाओ तह दिवसतिगं सुयाए सह अप्पपावेण ॥ ६३ ॥ ता सुमुणि कोउउप्पाइयं पि इय
दुक्खदायगं पावं । रागदोसवसकयं तं पुण वियरइ भवोहदुहं ॥६४॥ इय कहियं तुह चरियं तो रायरिसीवि जाइसर-
णेण । तं नाउमाह एवं जह पहु तुब्भेहिं कहियंति ॥ ६५ ॥ नवदिविखयमुणिजुत्तं नमिऊण गुरुं निवो कइवि दिवसे ।
भोत्तुं खेयररज्जं रयणप्पायारमणुपत्तो ॥६६॥ नीईए तत्थ पालइ रज्जं भुंजइ पियाए सह भोए । निच्चंमि कुणइ तित्थप्पभावनं
पूयइ जिणिंदे ॥६७॥ दंडिप्पवेसिएणं कइयावि हु जणयमंतिणा राया । नमिउं विन्नत्तो देव तुह पिया गिण्हिही दिक्खं ॥६८॥
रज्जारिहोत्ति केणइ हणिज्जिही एस इय विभावेउं । पिउणावमाणिओ तं न चेव पहु रागदोसेहिं ॥६९॥ ता तुम्हे पिउरज्जस्सि-
रिमागंतुं अलंकरह पहुणो । कारणकयावमाणणविसए खेओ न जुत्तो जं ॥ १७० ॥ तं निसुणिऊण सम्माणिऊण तं तेण
संजुओ राया । तत्थ गओ पयपणओ पिउणा आलिंमिओ गाढं ॥ ७१ ॥ संभासिय ससिणेहं निवेसिओ नियपए तओ
रन्ना । गीयत्थगुरुसयासे रिद्धीए कयं वयग्गहणं ॥ ७२ ॥ पालई सो रज्जतिगं नरखेयररायरइयपयसेवो । नंदीसराइठाणेसु

१ 'संजाओ तुह नरवर अद्वारसवच्छराणि सुअविरहो' इति पाठान्तरम् ।

कुसुम-
पूजायां
कुसुम-
शेखरकथा

॥ ५ ॥

अक्षत-
पूजायां
अक्षत-
कीर्तिकथा

जाइ सासयजिणे नमिउं ॥ ७३ ॥ उवभुंजिऊण रज्जेसु तिसुवि लच्छिं पभूयकालं सो । रयणावलीसुयं कुसुमपरिमलं
नाम ठविय पए ॥ ७४ ॥ गुरुनयणवेगपासे घेतुं दिक्खं कलत्तकलिण । उप्पन्नकेवलेणं पत्तं मोक्खम्मि नरवइणा ॥ ७५ ॥
कुसुमेहिं जहा रइया पूया एणण भूमिनाहेण । परमाणंदसुहत्थं कज्जा अत्रेण वि तहेव ॥ ७६ ॥ →* कुसुमपूजा *

卐 卐 卐 卐 卐 एसो हु कुसुमपूयाफलम्मि सिरिकुसुमसेहरो कहिओ । अक्खयपूयाए कहां अक्खयकित्तिस्स निसुणेह ॥ ७७ ॥ 卐 卐 卐 卐 卐

मसिणियघुसिणरसेणव अरुणारुणरयणभवणकिरणेहिं । रंजंती दिसिवयणाइं कित्तिकलिया पुरी अत्थि ॥ ७८ ॥ मणि-
कुट्टिमसंकंताहिं जीए निसि गिण्हणीउ मुद्धातो । विलयाओ वेलविज्जंति मोत्तियाइं ति ताराहिं ॥ ७९ ॥ ससहरजो-
ण्हाभरसरिसकित्तिपब्भारभरियभुवणययलो । निम्मलकित्ती नामेण नरवई विलसए तत्थ ॥ १८० ॥ वामकरेणेक्केणं इय-
रेणुब्भामियासिजणिण । फरणव विइणं धरिण रणंमि जो सहइ ॥ ८१ ॥ पट्टमहादेवीपयपहुत्तमुवहइ तस्स सिय-
सीला । लीलायमाणदेहा कित्तिसिरीनामिया दइया ॥ ८२ ॥ अच्चभुयस्सरूवं जीए रूवं पलोइउं दूरं । अरईए परिग्गहिया
रई वि सह तरुणलोण ॥ ८३ ॥ तीए समत्थि गुरुअत्थिसत्थपविइन्नअत्थवित्थारो । पुत्तो अक्खयकित्ती नामेणं कम्म-
णावि सया ॥ ८४ ॥ तेयस्सी दित्तिपहुव ईसरसिरसेहरो ससहरोव । पसमरसियमई सबया सुसाहुव जो सहइ ॥ ८५ ॥
निम्मलकलाकलावं परिकलयंतस्स तस्स पुणरुत्तं । जंति दिणाइं निरंतरपिउपयसेवापसत्तस्स ॥ ८६ ॥ सहितो कयाइ
समवयसिंगारियरायउत्तमित्तेहिं । आरुहिय तुरंगं तुरयवाहियालीए संपत्तो ॥ ८७ ॥ पुलभमिवारिक्काहिं (?) वाहिय तुरयं
निवारिउं मित्ते । दाऊण कसाघायं सो मुक्को तेण वेगेण ॥ ८८ ॥ विरइयगुरुतरवेओ हओ गतो जाव दुरदेसम्मि ।
मित्तेहिं ततो तुरया कुमरपहे पेरिया तुरियं ॥ ८९ ॥ महमग्गम्मि महीए इंति इमे नो नहत्ति कलिउंव । सहसत्ति समुप्प-
इतो कुमरतुरंगो नहयलेण ॥ १९० ॥ गुरुपवणनयणमणजवजइणा वेगेण जाइ गयणयले । कुमरतुरओ रयेणं जेउं पिव

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्

॥ ६ ॥

रविरहतुरंगे ॥९१॥ उग्रीवाणं मं पेच्छिराण पीडा भडाण भवहिति । परिभाविउं व तुरओ तन्नयणागोयरे पत्तो ॥९२॥
रायंगरुहे हरिए हियहियतो इव समग्गपरिवारो । कायवविमूढमई पत्तो रायंतियं झत्ति ॥ ९३ ॥ साहइ कुमारहरणं तं
सोउं मुच्छिओ महीनाहो । तबेलमेव जाओ निबेटो चत्तपाणोव ॥ ९४ ॥ चंदण रसछडासेयवससमुवलद्धचेयणसहावो ।
रुयइ सकरुणं पागयनरोव अंतेउरेण जुतो ॥ ९५ ॥ हा हा कुमार हा भुवणसार हा रइयरम्मसिंगार । हा विहलिय-
अब्भुद्धार हा हहा समरदुवार ॥ ९६ ॥ हा जाय जाय हा विहियनाय हा धरियरायमज्जाय । हा हा पररमणीभाय हा
हहा भुवणविक्खाय ॥ ९७ ॥ को उच्छंगे धरिऊण मह काम कुमर कोमलकरेहिं । संवाहंतो काही आणंदमहूसवुक्करिसं
॥ ९८ ॥ कुंडलसरलुत्तरियाकंकणकेऊरमणिमयाभरणे । रंजिज्जतो दाही दाणे को वंदिविंदाण ॥ ९९ ॥ इय पलवंते
संतेउरे निवेमंतिणा विमलमइणा । कुमरनिरिक्खणकज्जे तुरयाणीयं समाइट्ठं ॥ २०० ॥ तंपि दुवालसजोयणमाणम्मि
महियले परिब्भमिउं । नवरं कुमारवत्तामेतंपि न तेण संपत्तं ॥ १ ॥ तइयम्मि दिणे पसरंतसोयसंभारनिब्भरे
नयरे । कुमरो खयरविमाणाऊरिय गयणंगणो पत्तो ॥ २ ॥ नयणेहिं समं हरिसं वियासयंतो नरिंदलोयाण । पणओ
जणणीजणयाण तेहिं आलिंगिओ गाढं ॥ ३ ॥ तो चेडीचक्कजुया कुमरगुरूणं नया कुमरवहुया । आसिहिं ताण तुट्ठा
सुद्धंते संठिया गंतुं ॥ ४ ॥ जंपइ जणओ तुमए दिन्नो किं अम्ह पुत्त दुःखभरो । सो भणइ सुहदुहाणं दाया देवो न
चेव अहं ॥ ५ ॥ रायाह सुहदुहाणं जं अणुभूयं तएवहरिण । तं साहसुत्ति तो कुमरसुमरिओ आगओ अमरो
॥ ६ ॥ तं दट्ठुं मणिकुंडलकिरीडकेयूरकंकणाहरणं । विम्हियमणो नि(वो)पूई ऊण तस्सासणं देइ ॥ ७ ॥ तत्थुव-
विसिउं सो कुमरपेरिओ कहइ हरिणवुत्तंतं । पायालंमि पुरी अत्थि चमरचंचत्ति मणिभवणा ॥ ८ ॥ जीए सामारुण-
सियमणिभवणपहाहिं संबलिज्जन्ता । अमरा भमन्ति मयणाहिघुसिणचंदणविलित्तव ॥ ९ ॥ तथावट्ठियजोवणसुरंगणा-

अक्षत-
पूजायां
अक्षत-
कीर्तिकथा

॥ ६ ॥

गणविलासदुल्ललिओ । धुवंतचारुचमरो चमरो नामेण अमरवई ॥ २१० ॥ निवसंति तत्थ रवितेयचंदतेयाभिहा अमर-
कुमरा । रविचंदा इव भमिरा हरंति तेएण तिमिराई ॥ ११ ॥ निहालस्साइसरीरलिंगनिच्छइयचवणसम्भवो । जंपइ
रवितेओ मित्त चवणसमओ इमो मज्झ ॥ १२ ॥ ता मं पत्तनरत्तं पडिबोहेज्जसु तुमं अवसरम्मि । इय जपिउं चुओ सो
सुमरियजिणगुरुचरणकमलो ॥ १३ ॥ नयरम्मि धरासारे मणिमंदिररइयधरणिसिंगारे । जाओ राया सिरिरयणसुंदरो
नाम रम्मंगो ॥ १४ ॥ विलसंतरूवजोवणअभग्गसोहग्गसंगयंगीहिं । दइयाहिं समं विसए उवभुंजंतो गमइ कालं
॥ १५ ॥ कइयावि चंदतेएण मित्तदेवेण तस्स रयणीए । कहिओ सुरभवरइओ नरत्तपडिबोहवुत्तंतो ॥ १६ ॥ तं सोउं
जाईसरणनाणनयणेण दिट्ठपुवभवो । जंपइ राया तुमए पडिबन्नं पालियं किंतु ॥ १७ ॥ पडु जोवणं नवं मणहरा
सिरी असमसुहयरा वि सया । रत्ताओ कंताओ भत्ता मित्ता अपुत्तो हं ॥ १८ ॥ ता अज्ज वि असमत्थो अप्पहियं
काउमाह अमरो वि । परमत्थविमूढमईण राय इय उत्तराई जओ ॥ १९ ॥ रोयजराजोयविणस्सिरस्स तरुणियण-
मणहरस्सावि । का राय सारया जोवणस्स मोत्तुं तवच्चरणं ॥ २२० ॥ चोरानलजलरायग्गहाइबहुविहअवायसज्झाए ।
धम्मट्ठाणवयमंतरेण न सिरीए अत्थि गुणो ॥ २१ ॥ सरिसवसमसोक्खकरा सुरगिरिगुरुदुक्खदाइणो दूरं । अच्चा-
सत्तीए तणुक्खयं न किं दिंति निव विसया ॥ २२ ॥ अंतो निन्नेहाणं पवंचरयणाहिं रंजियजणाणं । किं सारं कंताणं
मरणंताणत्थहेऊणं ॥ २३ ॥ परदइयादवग्गहविरइयमेत्ती कुसुद्धहिययाण । किं वन्नेसि नरेसर सकज्जसज्जाण मित्ताण
॥ २४ ॥ परिपालिया वि परिपाडिया वि अप्पियधणावि निव नूणं । पुत्ता न परित्ताणं कुणंति नरए पढंताणं ॥ २५ ॥
भववासलालसाणं हवंति आलंबणाई एयाई । अणुसरियसीहवित्तीण न उण आसन्नसिद्धीण ॥ २६ ॥ थिरजोवणाहिं
अणुराइणीहिं पयईए सुरहिगंधाहिं । विसए देवीहिं समं भोत्तूण चिरं न जइ तित्तो ॥ २७ ॥ ता गलिरजोवणाओ

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ७ ॥

किञ्चित्तिमरायाओ दुरहिगंधाओ । नारीओ असुइभरियाओ विलसिरो किमिह तिप्पिहिसि ॥ २८ ॥ वसिउं समगसुह-
वत्थुपरिमलुगगारसुरहिसुरलोए । वसियस्स असुइगम्भे न विराओ तुह हहा मोहो ॥ २९ ॥ नियपडिवण्णे निरिणो
जाओहं राय तुह हियं कहिउं । ता कुणसु जमप्पहियं मा मज्जसु मूढ भवकूवे ॥ २३० ॥ इय सुयउवसमरसअमयवरिससम-
अमरदेसणो राया । सिरविरइयकरकोसो संविग्गमणो भणइ अमरं ॥ ३१ ॥ पढु तुमए अमएणव महमोहमहाविसं
हरेऊण । उप्पाइओ पबोहो उवयारपराऽहवा गुरुणो (पाठांतर भवे गुरुणो) ॥ ३२ ॥ ता इण्हि गिण्हिस्सं दिक्खं परिणावि-
उं दुहियमेगं । दाउं रज्जंपि वरस्स मित्त ता आणसु तयंति ॥ ३३ ॥ एवंति भणिय अमरो पत्तो नयरीए चमरचंचाए ।
अमरविणोयपमत्तो रायवरं सरइ दसमदिणे ॥ ३४ ॥ अक्खयकिञ्चित्तिकुमारं हरिऊणं रयणसुंदरनिवस्स । अप्पसु
झडत्ति इय भणिय पेसिएणुचरममरं सो ॥ ३५ ॥ इय पडिवज्जिय नयरीए किञ्चित्तिकलियाए झत्ति संपत्तो ।
कुमरे तुरंगनिचयं आवाहंतं पुरीए बहिं ॥ ३६ ॥ विहियममरेण निवसुयहयरूवं तंमि निवसुओ चडिओ । तो गंतुं दुरपहे
गयणेण गओ हओ सहसा ॥ ३७ ॥ गरुयगिरिसरियनयराइं गयणमग्गेण इक्कमंतेण । अमरतुरएण वेरी सच्चविओ
उज्जओ इतो ॥ ३८ ॥ तं दट्ठुं सो नट्ठो मोत्तुमणवलंबणं नरिंदसुयं । अप्पंमि विणस्संते परोवयारी हवइ विरलो ॥ ३९ ॥
निवडइ रायंगरुहो रएण गयणंगणा निराहारो । सट्ठाणभट्ठाणं गरुयाणवि होइ वा पडणं ॥ २४० ॥ अवरुंडिऊण धरिओ
निवपुत्तो वानरीए निवडंतो । सुहपुन्नपरिणईए जंतो जीवो व नरयम्मि ॥ ४१ ॥ कोमलकिसलयनिचये निवेसिउं तं
जलासया सलिलं । घेत्तूण पत्तपुडए धोयइ दासिब तच्चरणे ॥ ४२ ॥ खज्जरकयलिफलदाडिमाइ भोयविय पाइओ
सलिलं । तीए मिउदलरइए सत्थरए सोविओ तयणु ॥ ४३ ॥ उल्लयपूगप्फलनागवेल्लिदलदावदद्धगिरिचुन्नं । आणितु तीए
दिन्नं तंबोलं भुंजइ कुमारो ॥ ४४ ॥ उवविसिय सम्मुही सा करकयकयलीदलेण कुमरतणु । बीयंती अवलोयइ रायसुयं

अक्षत-
पूजायां
अक्षत-
कीर्तिकथा

॥ ७ ॥

साणुरायच्छी ॥ ४५ ॥ भंजइ अविरयमंगं समुब्रहंती समुच्चरोमंचं । परिकंपिरंगजट्टी सज्झसासेयमुब्रहइ ॥ ४६ ॥
 दट्ठूण वानरीविलसियं तयं सबमेव निवपुत्तो । असरिसविम्हयपरवसमणवित्ती चित्तिउं लग्गो ॥ ४७ ॥ एहदूरयरा
 निवडिरं न मं वानरी जइ धरंती । ता नूण विवज्जंतो अहं विभिन्नट्टिसंटाणो ॥ ४८ ॥ आसणपयसोहणभोयणाइं
 तंबोलदाणपज्जंतं । अणुरत्तपियाए इव इमीए मह सागयं विहियं ॥ ४९ ॥ एयं तु महच्छरियं जमिमा मं साणुराय-
 नयणेहिं । मयणवियारविनडिया नियइ तिरिच्छीवि तरुणिव ॥ २५० ॥ तह वानराण जाई सया चला होइ विज्जुल-
 इयव । एसा उ थिरप्पयई दूरं लक्खिज्जइ महिब ॥ ५१ ॥ ता निच्छयमेयाए वानरित्तम्मि कारणं किंपि । इय
 चित्तिय निवपुत्तो सप्पणयं तं पयंपेइ ॥ ५२ ॥ मह पाणे दाऊणं उवयारपरंपरा कया तुमए । ता तुह साहामई कं
 करेमि मह कहसु उवयारं ॥ ५३ ॥ रायसुओवि हु उवयारकरणपवणोवि तुह तिरिच्छीए । किमहं काहं दिन्ना ता
 नियपाणावि तुब्भ मए ॥ ५४ ॥ तो कामवियारेहिं विनडिज्जंतीए तीए कुमरपुरो । गहिऊण गवलखंडं लिहिया गाहा
 महीए इमा ॥ ५५ ॥ मह दाहिणं वियारिय ऊरुं कट्ठित्तु मूलियं नाह । नामेण कित्तिमालं मं निवकन्नं विवाहेसु ॥ ५६ ॥
 तं वाइऊण ऊरु वियारिया निवसुएण छुरियाए । कट्ठिय मूलिं बद्धा वणम्मि संरोहिणीमूली ॥ ५७ ॥ तो सा जाया
 रयणीयराणणा तहय हरिणसमनयणी । कंचणगोरी घणपीवरत्थणी नववया रमणी ॥ ५८ ॥ दट्ठूण तमच्छरियं
 उच्छलियअतुच्छकोउओ कुमरो । भणइ मयच्छि असद्धेयमत्तणो कहसु वुत्तंतं ॥ ५९ ॥ सा आह नाह निसुणसु
 अत्थि जहत्ये पुरे धरासारे । सिरिरयणसुंदरनिवो तस्स अपुत्तस्स पुत्ती हं ॥ २६० ॥ नामेण कित्तिमाला कीलंती
 सह सहीहिं भवणगे । खयराहमेण हरिऊणमेत्थ एक्केण आणीया ॥ ६१ ॥ भणिया य मह महातेखयरचक्किस्स
 भारिया भवसु । अविरुद्धमिणं जं कन्नया तुमं हमवि तुह रत्तो ॥ ६२ ॥ इय भोगत्थं अब्भत्थिया बहुं सामदाण-

अक्षत-
 पूजायां
 अक्षत-
 कीर्तिकथा

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्

॥ ८ ॥

दंडेहिं । जीवियनिरवेक्खाए वमन्निओ सो मए दूरं ॥ ६३ ॥ तो तेण वियारिय ऊरुयाए खिविऊण मूलियं विहिया ।
वानरिया हं संरोहिणीए वणमविय रोहवियं ॥ ६४ ॥ गंतूण नियट्ठाणे समेइ निच्चं पि पत्थिउं भणइ । जइ मं मन्नसि
दइयं ता साहसु गवलवन्नेहिं ॥ ६५ ॥ इय कुवंतस्स गयं दिणनवगं सामिसाल खयरस्स । अज्जं तु सुकयकम्मेण
आगया मज्झ इह तुब्भे ॥ ६६ ॥ उप्पाइयपेम्मं पि हु दाही मह तुम्ह दंसणं दुक्खं । जं सो खेयरराया मायावी दुज्जओ
एही ॥ ६७ ॥ दद्धं मह महिलत्तं मा काही किं पि तुम्ह सो णत्थं । ता पविसह तरुगुम्मे आगतुं जाव सो जाइ ॥ ६८ ॥
आह नरनाहपुत्तो वहारिहो इयरदवचोरोवि । माणुसचोरस्स पुणो लुणामि सीसं सहत्थेण ॥ ६९ ॥ किं होइ वराएणं
तेण न बीहेमि हं जमस्सावि । इय जंपंते कुमरे पत्तो सहसत्ति खयरोवि ॥ ७० ॥ पिच्छेउं नियरूवं कुमरिं कुमरं पि तीए
नियड्ठियं । कोवकयभीमभिउडी अवयरइ पयंपिरो एवं ॥ ७१ ॥ रे दुट्ठ को तुमं मह पियाए पासे समागतो कहसु ।
कुमरेणुत्तं रे रमणिचोर कह तुह पिया एसा ॥ ७२ ॥ तेणुत्तं एसा जह महप्पिया तह कहेमि खग्गेणं । इय भणिरो
करवालं कट्ठेउं धाविओ खयरो ॥ ७३ ॥ हुंकारंतो कुमरोवि उट्ठितो उक्खिवित्तु असिघेणुं । दोन्निवि दट्ठोट्ठा भिउडि-
उब्भडा जाव जुज्झंति ॥ ७४ ॥ ता अणुचरामरेणं कहिओ कुमरावहारवुत्तंतो । रिउदंसण-नियनासणपज्जंतो चंदतेयस्स
॥ ७५ ॥ नूणमणवलंबो निवडिऊण रायंगतो मओ होही । इय सविस ओ पत्तो कुमरसमीवे सुरो सहसा ॥ ७६ ॥ दद्धूण
कुमरमारणसज्जियघायं तयं खयरखेडं । बद्धो अमरेण अदिट्ठमोरवंधेहिं सो झत्ति ॥ ७७ ॥ संमाणिऊण(निव)नंदणस्स
अवहरणकारणं कहिउं । भणितो खयरो जीवसि जइ होसि कुमारभिच्चो तं ॥ ७८ ॥ मरिसि ध्रुवमन्नहा तं सोउं सो
भणइ देहि मे पाणे । पडु तुह आणं काहं तो सो मुक्को सुग्वरेण ॥ ७९ ॥ अमरं कुमरं कुमरिं च पणमिउं खामिउं च
तेणुत्तं । चलह जह रज्जमप्पिय कुमरस्स भवामि भिच्चो हं ॥ ८० ॥ तो सब्बाणि वि सुरकयविमाणमारुहिय झत्ति

अक्षत-
पूजायां
अक्षत-
कीर्तिकथा

॥ ८ ॥

अक्षत-
पूजायां
अक्षत-
कीर्तिकथा

पत्ताणि । वेयडुत्तरसेढीए गयणवल्लहपुरे ताणि ॥८१॥ उववेसिउं सहाए कुमरं खयरहिवेण रज्जसिरी । उवणीया भणिरेणं
तं सामी सेवगो हं ते ॥ ८२ ॥ कुमरेणुत्तं विलससु नियलच्छि जं मएविं तुह दिन्ना । नवरं मए समाणं अणुहवमाणो
सिणेहभरं ॥८३॥ तं सोउं खयरिंदेण हिट्टहियएण पूइउं अमरं । कुमरकुमरीण रइओ सम्माणो नियसिरिसरिसो ॥८४॥
तो अमरो कुमरीकुमरखेयराहिवबलेहिं संजुत्तो । चलिओ पत्तो य धरासारे नयरे गुरुरएण ॥ ८५ ॥ कुमरी अवहरण-
ससोयलोयपिहियावणं तमिक्खंतो । पत्तो विसन्नसिंगारहीणनिवलोयमत्थाणं ॥ ८६ ॥ दट्ठुं अमरं कुमरीए संगयं
नट्टसोयसंतावो । राया पूइय अमरं आलिंगइ कन्नयं हिट्टो ॥ ८७ ॥ काउं कुमारखयरेसराण सम्माणममरमुल्लवइ ।
मित्त सुयावुत्तंतं हरणागमणाण मह कहसु ॥ ८८ ॥ तो अमरेण समगं कन्नाकुमराण हरणवुत्तंतं । कहिउं भणिओ
राया परिणावसु कन्नयं कुमरं ॥८९॥ ठविउं रज्जम्मि इमं अप्पहियं कुणसु गहियपव्वज्जो । इय भणिए जा चिंतइ विवाह-
सामगियं राया ॥ ९० ॥ ता अमरेण ससचीए इत्ति मणिथंभयावलीकलिओ । वीवाहमंडवो पंचवन्नधयमालिओ
विहिओ ॥ ९१ ॥ रइया य हट्ठसोहा समंतओ देवदूसविसरेण । किंबहुणा निवचितियममरेण कयं समगंपि ॥ ९२ ॥
गुरुरिद्धीए कुमरी दिन्ना कुमरस्स तेण परिणीया । करमोयणम्मि दिन्नं रज्जं सत्तंगमवि तस्स ॥ ९३ ॥ एत्थंतंरंमि उज्जाण-
पालओ दंडिसूइओ पत्तो । पल्लवओ नामेणं नमिउं विन्नवइ नरनाहं ॥ ९४ ॥ देवुज्जाणे कलकोइलाभिहे केवली समो-
सरिओ । सोऊण तइं वियरइ राया पीइप्पयाणं से ॥ ९५ ॥ गुरुरिद्धीए सुरखेयरिंदनवनिवइपरिगओ तुरियं । पत्तो
उज्जाणे नमिय केवलं तत्थ उवविट्टो ॥ ९६ ॥ दट्ठूण केवलं नवनिवई मुच्छाए महियले पडिओ । सिसिरकिरिया-
समुवलद्धचेयणो पुच्छिओ रन्ना ॥ ९७ ॥ किं राय मुच्छिओ तं सो जंपइ केवलं पलोएउं । मह जाइसरणसंसूयगा इमा
आगया मुच्छा ॥९८॥ दिट्टो नियपुबभवो हुंतो कासीभिहाण देसे हं । दुग्गयपडागनामो आजम्मदरिहिओ विप्पो ॥९९॥

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ९ ॥

देसेसु परियडंतो कयाइ उववासतिगसुसियदेहो । पत्तो मज्झण्हे कणयसालपुर-तिलयउज्जाणे ॥ ३०० ॥ दट्ठूण तत्थ
नवसालितंदुले विक्किणंतए वणिए । आह अहं पहसंतो तिलंघणो देह ता किं पि ॥ १ ॥ तो तेहिं सालितंदुलपसइदुगं
गुरुदयाए दिन्नं से । तं घेत्तूण पविट्ठो उज्जाणब्भंतरे जाव ॥ २ ॥ ता नियइ केवलिमुणिं जिणपूयफलं जणाण
साहंतं । जो कुणइ जिणस्सट्ठवि पूया तो लहइ सो सिद्धिं ॥ ३ ॥ ताओ फलजलनेवज्जदीवधूवक्खएहिं परमेहिं । वासेहिं
कुसुमेहि य भणियाओ समयसन्थेसु ॥ ४ ॥ सवाओ वि असत्तो तं कुणइ जिणस्स अक्खएहिंवि जो । भोत्तुं सयल-
सिरीओ सो अक्खयसोक्खमवि लहइ ॥ ५ ॥ तं सोउं सो चिंतइ न पुब्बजम्मे मए कओ धम्मो । तेण न संपज्जइ मे
भमिरस्स वि भेक्खमेत्तंपि ॥ ६ ॥ ता जिणपूयं सालीए काउमज्जेमि सुकयसंभारं । जं भिक्खाभमणेणवि भविही
मह छुहपरित्ताणं ॥ ७ ॥ इय चिंतिय भत्तीए नमिय मुणिं भणइ कहइ कत्थ जिणो । पूएमि जहा तो सावण सो
जिणहरे नीओ ॥ ८ ॥ जं कणयमयं मणिकिरणकिन्नवणराइविलसिरउवंतं । कंचणगिरिष कप्पट्टुमावलीवेढियं सहइ
॥ ९ ॥ तंमि पविट्ठो पेच्छइ पसंतरूवं जिणेसरं रिसहं । आणदअंसुजलकलियलोयणो भत्तिकंटइओ ॥ ३१० ॥ मणि-
मयकुट्टिममिलमाणभालमभिनमिय सामिणो तेण । अक्खयढोयणपूया विहिया बहुमाणसारेण ॥ ११ ॥ दट्ठूण तस्स
भत्तिं नियगेहे सावण से दिन्नं । निद्धण्हभोयणं तद्दिणाउ सो सुत्थिओ जातो ॥ १२ ॥ तो कालगतो समभावसंगतो
निवसुतो हमुप्पन्नो । दट्ठूण केवलिमिमं जाईसरणं समुप्पन्नं ॥ १३ ॥ निब्भग्गस्सवि मज्झं रिद्धी सुगुरुवएसनायाए ।
जिणपूयाए कयाए जाया इय साहियं तुम्ह ॥ १४ ॥ तं सोउं संजाओ जणस्स जिणपूयणम्मि बहुमाणो । राथावि
सावरोहो दिक्खं गिण्हइ गुरुसयासे ॥ १५ ॥ पणमिय गुरुणो नवदिक्खिए य संभासिऊण नवनिवइं । खेयरवइं च
अमरो गओ सठाणम्मि कयकिच्चो ॥ १६ ॥ नवदिक्खियमुणिजुयकेवलिक्कमे नमिय नहरिंदजुतो । पत्तो पासाए तत्थ सुत्थयं

अक्षत-
पूजायां
अक्षत-
कीर्तिकथा

॥ ९ ॥

फलपूजायां
फलसार-
कथा

रइय रज्जस्स ॥ १७ ॥ खेयरविमाणसेणाए तुम्ह चरणंतियं समणुपत्तो । नमिय निविट्ठो पुट्ठो नियहरणं कहसु वच्छत्ति ॥ १८ ॥ तो एय सुमरिओ चंदतेयअमरो समागतो सो हं । कहितो यं हरणहेऊ जुत्तं तुम्हंपि हियकरणं ॥ १९ ॥ तं सोढं नरनाहो जंपइ भो अमर सुयणसिररयणं । निक्कित्तमोवयारी तमेव जो एवमुवइससि ॥ ३२० ॥ नियमेण वयं काहं रज्जं दाउं सुयस्स इण्हिपि । इय जंपिरे नरिंदे सहसत्ति तिरोहितो अमरो ॥ २१ ॥ तो रत्ता नवनिवई अणिच्छ-
माणोवि ठाविओ रज्जे । गीयत्थगुरुसयासे सयं तु अंगीकया दिक्खा ॥ २२ ॥ कइयावि हु सम्माणिय विसज्जिओ राइणा खयरचक्की । कज्जेसु ममाएसो देउत्ति पयंपिय गओ सो ॥ २३ ॥ पइदियहंपि पवुड्डुप्पयावपब्भारदुस्सहो दूरं । रिउमंडलाइं राया परितावइ गिम्हतरणिब ॥ २४ ॥ कइयावि हु वेयड्डे विलसइ विज्जाहरिंदवाहरिओ । कइयावि धरा-
सारे रज्जसिरिं चितए गंतुं ॥ २५ ॥ पयडइ नीइं पालइ पयाउ पूयइ जिणे गुरुं नमइ । साहइ देसे एवं वच्चंति निवस्स दिवसाइं ॥ २६ ॥ कालेण कित्तिमालादेवीए उदारकित्तिनाम सुओ । जातो संगहियकलो विवाहितो रायकन्नाओ ॥ २७ ॥ तं रज्जे अहिसिंचिय गिण्हइ सपिओ वयं जणयपासे । कयतवचरणो उप्पन्नकेवलो सिद्धिमणुपत्तो ॥ २८ ॥ जह अक्खएहिं विहिया जिणिंदपूया इमेण नरवइणा । सिद्धिसुहकंखिणा तह कज्जा अण्णेणवि नरेण ॥ २९ ॥ ॐ अक्षतपूजा ॐ

५ ५ ५ ५ ५ भणिओ अक्खयकित्ती अक्खयपूयाए संपयं तुब्भे । फलपूयाए निसामह फलसारं वागरिजंतं ॥ ३३० ॥ ५ ५ ५ ५ ५

विप्फुरिय—भूरिकरदुरवलोयमणिमंदिरावलिकलियं । सुरोहकयावासं व अत्थि सूरप्पहं नयरं ॥ ३१ ॥ अन्नोन्न-
मिलियमणिगिहकरकिन्ननहम्मि पक्खिणो नूणं । वित्थारियजालंमिव न जंमि पविसंति बंधभया ॥ ३२ ॥ सारयर-
विकरपसरियपयावसंतावियाहिओ तत्थ । अत्थि प्पयावसारो नामेण निवो रणवसणी ॥ ३३ ॥ सवंगचंग-
नियरूवगवनिज्जिणियअच्छराविसरा । तस्सत्थि हत्थिकुंभत्थलत्थणी जयसिरी जाया ॥ ३४ ॥ तन्नयणब्भमरणं

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ १० ॥

आणंदइ सुमणपत्तभरपरमो । फलसारो नामेणं दुमोव दूरुन्नतो कुमरो ॥ ३५ ॥ कइयावि सहासीणे निवंसि
कुमराइरायमंतिजुए । झणहणिरकिंकणिगणं विमाणमेगं समणुपत्तं ॥ ३६ ॥ तम्मज्झाउ पसरंतमणिमयाभरणकिरण-
दुनिरिक्खो । रविरहरयणाओ रविव खेयरो झत्ति नीहरिओ ॥ ३७ ॥ पडिहारकयपवेसस्स तस्स संमाणपुवमवणिवई ।
खयरारिहाय साहसु आगमणत्थंति जंपेइ ॥ ३८ ॥ सो आह ससहरसिओ वेयड्ढो नाम वामदेवोव । गंगासिंधुपरिगतो
अत्थि गिरी गरुयनयरसिओ ॥ ३९ ॥ नयनायरगुणनिज्जियसमग्गपुरपत्तवेजयंतिव । तत्थत्थि वेजयंती नयरी
मणीभवनकमणीया ॥ ३४० ॥ गोरीपन्नत्तीपमुहसिद्धविज्जापभावदुज्जेओ । विज्जाहरराया तत्थ अत्थि सिंगारसारोत्ति
॥ ४१ ॥ निम्मलनहकयसोहा पवित्तसब्भावभासियदिसोहा । तारावलिब जाया जाया तारावली तस्स ॥ ४२ ॥ तीसे
असेसभुवणेक्कभूसणं रूवरेहविजियरई । जाया मणुन्नकन्ना सिंगारतरंगिणी नाम ॥ ४३ ॥ सद्धिं सुहवणेणं कलाकलावेण
तारतारुणं । जायं तीसे सिंगारगारवुग्गारपरिकलियं ॥ ४४ ॥ कइयावि सा सहीयणसहिया मणिमत्तवारणासीणा ।
गयणे जंतं चारणमुणिदमिक्खिय गया मुच्छं ॥ ४५ ॥ चंदणरसच्छडासेयसिसिरकिरिओवलद्धचेयन्ना । संसुसही-
हिं सा पुच्छिया तुमं मुच्छिया किमिह ॥ ४६ ॥ आयन्नहत्ति जंपिय सा मुच्छाकारणं कहइ तासिं । संसारसरुवंपिव
अत्थि अरन्नं अदिट्ठंतं ॥ ४७ ॥ गुरुभूरिसाहिसाहासहस्सअंतरियअंतरिक्खंमि । सावयभीउव जहिं पक्खिवइ
करे न सूरुोवि ॥ ४८ ॥ पेच्छिजंतकुरंगं दरिइगामीण देवहरयं व । जं विगयरायचित्तं विरायए केवलिकुलं व
॥ ४९ ॥ तरुणो व विलसिरवओ विसालतो सरसकमलनियरो व । तत्थप्पसरियसालो अत्थि वडो पुरनिवेसोव
॥ ३५० ॥ बालायवदलनिम्मावियं व सबंगुपिंगपहरोमं । अच्चंतचंचलं जं तरुणीअणुरायरइयं व ॥ ५१ ॥ धरमाण-
मरुणवयणं मसिणियघणघुसिणरसविम्मिस्सं व । वानरजुयलं परिवसइ पायवे तम्मि घणनेहं ॥ ५२ ॥ जुयलं ॥

फलपूजायां
फलसार-
कथा

॥ १० ॥

फलपूजायां
फलसार-
कथा

कइयावि करहखरवसहसगडसेरहसहस्स—संजुत्तो । संपत्तो सत्थाहो नामेण धणावहो तत्थ ॥ ५३ ॥ आवासिओ
य वडविडवितडकए गडुरे गहीरम्मि । गुणिणीविमाणयाइसु जहजोगं सेसलोगोवि ॥ ५४ ॥ एत्थंतरंमि तवतेयभासुरो
रइयउत्तरासंगो । गिम्हतरणिव चारणसमणमुणिंदो हयतमोहो ॥ ५५ ॥ अंगीकयविरइरतो अनिरुद्धसुओ अविग्गहो
सययं । जयजणमणकयवासो सोहंतो कामदेवोव ॥ ५६ ॥ गयणंगणेण पत्तो तत्तो सत्थाहिवो सबहुमाणं । तं
नमिय निसीयावइ पट्टम्मि निसीयइ सयंपि ॥ ५७ ॥ दट्ठं तं नवजोवणमब्भयरूवं भणेइ सत्थाहो । किं पडु तुह वेरगं
जं लहुएणवि वयं गहियं ॥ ५८ ॥ आह पडू सत्थाहिव आयन्नसु अत्थि उड्डुलोगम्मि । बहुपुन्नपावणिज्जो सोहम्मो
नाम सुरलोओ ॥ ५९ ॥ जम्मि बहुरविकरदुरवलोयमणिमयविमाणहयतिमिरे । लज्जंतोव न पविसइ कायरपुरिसोव
सूरोवि ॥ ६० ॥ पुन्नप्पयरिसवसही निरुवमरूवो असीमइस्सरिओ । तं परिपालइ सक्को कयरिउगणमाणसधसक्को
॥ ६१ ॥ तस्सत्थि परममित्तो समस्सिरीओ समाणासिंगारो । नामेण सरीरेणय विक्खाओ अमियतेओत्ति ॥ ६२ ॥
विलसिरतणुकंतिमई कंतिमई नाम सहयरी तस्स । दइयवियोगं सा विसयलालसा न सहइ खणंपि ॥ ६३ ॥ भणइय मं
मोत्तुं तं मा गच्छसु सामि सक्कपासम्मि । जं तुह विरहुक्करिसो दूरं विहुरइ सरीरं मे ॥ ६४ ॥ पत्तमहाणंदा इव अमयइह-
संगसुहियदेहव । तुहसंगसंगया सामिसाल हं होमि नियमेण ॥ ६५ ॥ इय तवयणस्सवणा नियदेहाओ वि नियधणाओ वि ।
अब्भहियं तं मन्नइ दइयं सो जीवियाओवि ॥ ६६ ॥ सुरलोयसंभवासमविसयस्सासंगसत्तचित्तस्स । अन्नाओच्चिय
गच्छइ कालो से चत्तधम्मस्स ॥ ६७ ॥ समयंतरंमि महइं वेलं ठाउं सुरिंदपासम्मि । जा गच्छइ ता पेच्छइ न भारियं निय-
विमाणंमि ॥ ६८ ॥ कत्थ गया मे कंता कंतिमई इय विभाविउं जाव । तविरहविहुरिओ तं नाणेण पलोइउं लग्गो ॥ ६९ ॥
ता अंबरसिहरगिरिंदसंदवणदक्खमंडवतलम्मि । विसयासत्तं अवरामरेण सद्धिं तमिक्खेइ ॥ ७० ॥ गुरुरोसावेगा

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ११ ॥

रत्तनेत्तपहभरपिसंगियगनहो । तहुगदहणनिमित्तं निसट्टगुरुतेउलेसोव ॥ ७१ ॥ तो ताण मारणत्थं काउं वेगं गतो
गिरिसिरे सो । नट्टाइं दुयं दोन्निवि को ठाइ पुरो दुजयरिउणो ॥ ७२ ॥ नट्टे दुगेवि वेरग्गवासणावासिओ विविंतेइ ॥
पेच्छ अहं वेलवितो विवेयकलिओवि पावाए ॥ ७३ ॥ तुहविरहविहुरियाहं ठाउं चेट्टामि नो निमेसंपि । ताण भणियाण
जायं अवसाणं एरिसमिमीए ॥ ७४ ॥ धिद्धी धिरत्थु इत्थीण ताण जाहिं विमोहिया संता । मइरामत्तव विवेइणोवि
मूढत्तणं जंति ॥ ७५ ॥ जिणचवणजम्मदिकखाकेवलनिव्वाणपवपूयणओ । सुकयं समज्जियं नो मए पियामोहमूढेण
॥ ७६ ॥ जाण कए पाणावि हु तणगणणाए सया गणिज्जंति । तासिं इमं सरूवं ता धिद्धी धी सिणेहस्स ॥ ७७ ॥
घेप्पंति रूवजोवणविज्जाविज्जाणनाणदविणेहिं । नो पावप्पयईतो ता धिद्धी थीसिणेहस्स ॥ ७८ ॥ विस्सासिऊण वाहंति
दासवित्तीए मह समं मूढं । अप्पंति पुण न अप्पं ता धिद्धी थीसिणेहस्स ॥ ७९ ॥ वच्चंतु खयं विसया पज्जत्तं मज्झ
सव्वभज्जाहिं । जो हं अणप्पवसओ विंडंबणं एवमणुपत्तो ॥ ८० ॥ वेरग्गसंगओवि हु न सव्वविरइव्वयस्स जोग्गो हं ।
ता इह लोयसुहस्सव चुक्को परलोयसोकखस्स ॥ ८१ ॥ ता इह भज्जादुच्चरियसुमरणत्थं करेमि किंपि अहं । जं दहुं
परलोए उप्पज्जइ मज्झ पडिबोहो ॥ ८२ ॥ इय चित्तिऊण तेणामरेण विप्फुरियकिरणरयणेहिं । रोहणगिरिसिहरंपिव रुंदं
जिणमंदिंरं रइयं ॥ ८३ ॥ गीयत्थसूरिमज्झ(हत्थ?)प्पइट्ठियं तत्थ कारियं तेण । सिरिरिसहनाहबिंबं जाणंव भवन्नवुत्तरणे
॥ ८४ ॥ ता सक्केण सयं तत्थ अट्टदिवसाइं ऊसवो विहिआं । इय अणुदिण जिणपूयणसज्जियसुकओ चुओ
अमरो ॥ ८५ ॥ उप्पन्नो वेयट्ठे दाहिणमणीए अयलनामाए । नयरीए विजयप्पहरायपियाए जयाए सुतो ॥ ८६ ॥
विज्जुप्पहोत्ति विज्जावियक्खणो मित्तमंडलीकलिओ । चलिओ नहेण कइयावि कीलिउं तं गिरिं पत्तो ॥ ८७ ॥ दहूण
जिणहरं जायजाइसरणो पयासइ सु(स?)हीण । कुमरो अमरत्ते नियपियाकुसीलत्तवेरग्गं ॥ ८८ ॥ निंदइ दुस्सीलाओ

फलपूजायां
फलसार-
कथा

॥ ११ ॥

फलपूजायां
फलसार-
कथा

महिलाओ कहइ धम्मसवस्सं । भणइय भवं जायं जमज्जमिह कीलिउं पत्ता ॥ ८९ ॥ भज्जा दुच्चरियस्सरणकारण-
विरइयं जिणाययणं । जायइ जेण विराया भवंतरे सबविरई मे ॥ ३९० ॥ ता गिणिहय सामन्नं निस्सामन्नं तवं चरि-
स्सामि । ता मित्ता खमियव्वं जं तुम्ह मए कयमजुत्तं ॥ ९१ ॥ तो संविग्गा ते बित्ति तुम्ह मग्गं वयंपि अणुसरिमो ।
तो सबे मा(मो)यावियजणया दिक्खं पव्वज्जंति ॥ ९२ ॥ कयबालकालबंभवयावि संजायबहुसुया सबे । ता गुरुणा विपज्जुहो
ठवितो जोगोत्ति सूरिपए ॥ ९३ ॥ सो सबत्थवि भवे पडिबोहंतो विहारमायरइ । अज्जं पुण नंदीसरजिणबिंबे
वंदिउं चलिओ ॥ ९४ ॥ इह पत्तो सत्थाहिव तुमए वेरग्गकारणं जमहं । पुट्ठो तं तुह कहियं तं सोउं भणइ सत्थाहो
॥ ९५ ॥ पेच्छंति मयच्छीणं पट्टु सबेवि हु पभूयविलियाइं । नवरं कस्सवि जायइ न पडिबोहो जहा तुम्ह ॥ ९६ ॥
एयाउच्चिय भवसंभवसुहसवस्समेव मूढाण । रायरहियाण दूरं दुक्खपयं न उणमन्नयरं ॥ ९७ ॥ नूणं पट्टु
बहुकल्लाणठाणमत्ताणमेत्थ मन्नामि । रत्नेवि जेण पत्ता तुब्भे ता कहह सुहहेउं ॥ ९८ ॥ आह पट्टु भववासो आवासो
तिक्खदुक्खलक्खाण । ता पत्तं मणुयत्तं मा हारह करह अप्पहियं ॥ ९९ ॥ तं पुण सुँ-देवगुरुधम्मैतत्तजोएण जायए
नियमा । ता रागदोसअदूसियंमि देवे मइं कुणह ॥ ४०० ॥ आराहह निग्गंथं अणीहयं धम्मियं सुसीलगुरुं । जम्मि
चराचरजीवाण रक्खणं कुणह तं धम्मं ॥ १ ॥ जं वीयरायदोसेहिं दंसियं मुणह तं सया तत्तं । जं चत्तारि वि
चउगइहराइं एयाइं भवाण ॥ २ ॥ जइ वि हु गुरुप्पमाया गिहिणो न कुणंति सबगिहिधम्मं । तहवि हु जिणपूया तेहिं
अट्टहा भवहरी कुज्जा ॥ ३ ॥ तहाहि । जलधूवदीवनेवज्जकुसुमफलवासअक्खयसहावा । पूया अट्टपयारा कीरइ
भवेहिं अरिहाण ॥ ४ ॥ इय जइवि बहुविहा सा तहवि हु सुमहुररसुत्तमफलेहिं । अंबयबिज्जउराईहि विरइया वियरइ
सुहाइं ॥ ५ ॥ सुनरामरत्तसिवसुहफलाइं भत्तीए विरइया नूणं ॥ फलपूयकारण वियरए जेणिमं भणियं ॥ ६ ॥

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ १२ ॥

एकंपि फलं पुरओ जो ठवइ जिणस्स परमभत्तीए । तस्स फलंति अवस्सं नरस्स सयलाउ विदिसाउ ॥ ७ ॥
तं सोउं सत्थवई भत्तिभरप्पणयगुरुकमंबुरुहो । अंगीकरइ सयावि हु जिणपूयाभिग्गहं विणई ॥८॥ साहागयेण साहा-
मएण इय देसणं सुणेऊण । भणिया भज्जा दइए सुकरो धम्मो इमो अम्ह ॥ ९ ॥ जेणेह फलाहारो विहिणा अम्हाण
निम्मिओ पायं । संतिच्चय सुरसफला इह रत्ने भूरितरुणोवि ॥४१०॥ नूणं न किंपि सुकयं कयमम्हेहिं भवंतरम्मि पिए ।
जायाइं तेण दोन्नि वि निंदियतेरिच्छजाईए ॥११॥ एत्तो वि हु नियचावल्लदोससंजायपाय(व)पोसाण । अम्हाणं उप्पत्ती
कत्थइ भविही न याणामो ॥ १२ ॥ ता सुलहफलेहिं वयं पूइत्तु जिणं भवन्नवं तरिमो । साहामई पयंपइ कुणह
इमं चलह पउणम्हि ॥ १३ ॥ एत्थंतरम्मि भणिओ गुरुणा सत्थाहिवो वयं जामो । अंबरसिहरगिरिम्मि जिणिंद-
पयवंदणनिमित्तं ॥ १४ ॥ तो आह सत्थवाहो पहु सो केत्तियपहे गिरी कहह । भणइ गुरू एसोच्चिय आसण्णो
गयणगयसिंगो ॥ १५ ॥ सत्थाहिवो पयंपइ अहंपि पहु तत्थ आगमिस्सामि । तो संचलिया गुरुणो सपरियणो
सत्थवाहोवि ॥ १६ ॥ उत्तरिय दुमाओ दुयं कइदुगमवि सूरिणोणुमग्गेण । गच्छइ तरच्छकरिहरिणसवरसंचरजुए
रत्ने ॥ १७ ॥ तंमज्जे तरणिभया पिंडीहूओव तमभरो तेहिं । अंबरसिहरो नामेण सामलो सो गिरी दिट्ठो ॥१८॥
सामलसिहरानिलचलतमालदल अंतरुल्लसिरधाऊ । जो नवघणोव ईसिप्फुरंततडिसजुतो सहइ ॥ १९ ॥ तम्मि सीयर-
निवडिरनिज्झरणनीरसिक्करसमूहवि(व)हवाए(?) । आरूढा गुरुसत्थाहि(य)वानरा(र)म्मआरामे ॥ ४२० ॥ तस्सग्गे
पिंगमणिप्पहापिसंगियसमग्गदिसियकं । रविरहरयणंव नियंति उदयसेलम्मि जिणभवणं ॥ २१ ॥ रयणीसु जं विरायइ
पडिबिंबिय भूरितारयप्पयरं । केवलमुत्ताजालयविरइयसिंगारचंगंव ॥ २२ ॥ पेच्छंति तत्थ उवसंतकंतमुत्ति जिणेसरं
रिसहं । जहजोगं ण्हवणच्चणथवणे काउं निवट्ठा(विट्ठा?)ते ॥२३॥ दट्ठूण जिणवरं वानराइं बहुमाणजायपुलयाइं । आणं-

फलपूजायां
फलसार-
कथा

॥ १२ ॥

दवसपवत्तंसुपन्ननयणाईं पणमन्ति ॥ २४ ॥ तो तेहिं पक्कगंवरअंबयनारंगबीजपूरेहिं । कयलीफलदक्खादाडिमेहिं
गंतुं जिणिंदपुरो ॥ २५ ॥ पसरियभत्तिभरुभिज्जमाणरोमंचअंचियंगेहिं । रइय बालिं मुक्कं बीजपूरयं सामिकर-
कमले ॥ २६ ॥ जुयलं ॥ तत्तो अन्तो उल्लसियअसमआणंदमंदिरच्छीणि । भूपुट्टभालवट्टं नमंति तिहुयणपट्टं
ताईं ॥ २७ ॥ तो भत्तीए गुरूणं नमिउं जंपंति निययभासाए । पट्ट तुम्ह पसाएणं अम्हेहिं समज्जिओ धम्मो ॥ २८ ॥
भणइ गुरू धम्माओ नन्नं भुवणे वि अत्थि सारतरं । ता तिरियावि हु तुम्हे धन्नाईं जेसिमिय बुद्धी ॥ २९ ॥ इय
अणुसासिय वानरजुयलं आपुच्छिऊण सत्थाहं । नमिय जिणं अन्नत्तो गयणेणं विहरिया गुरूणो ॥ ४३० ॥
उत्तरिउं सत्थाहो गओ जहाभिमयदेसमसढमई । पावित्तु आउयंतं वानरजुयलंपि कइयावि ॥ ३१ ॥ मज्झिम-
परिणामज्जियनरत्तभावाहमेत्थ वेयड्डे । उप्पन्ना सो कत्थइ मज्झ पिओ तं न याणामि ॥ ३२ ॥ जह पुवजम्मसद्धम्म-
दायगो एस चारणमुणिंदो । जं दहुं संजायमह जाइसरणनाणमिणं ॥ ३३ ॥ मोत्तुं परभवदइयं सद्धम्ममुच्छाहयं
पवंगं मे । न नरंतरपरिणयणे म्णो मणोरहमवि करेइ ॥ ३४ ॥ तं सोऊण सहीहिं सबंपि हु साहियं खयरपट्टणो ।
तेणवि वाहरिय सुयं वुत्तं जुत्तं इमं पुत्ति ॥ ३५ ॥ किंतु न नज्जइ चउगइभवगहणे सो कहिंपि उप्पन्नो । ता
मोत्तुमसग्गाहं अवरवरं (वर) सु तं वच्छे ॥ ३६ ॥ सा आह मज्झ अंगे लग्गइ सो सुहयरो अहव अग्गी । तं सोऊण
जणओ जाओ चिंताउरो दूरं ॥ ३७ ॥ एत्थंतरंमि सुयदुंदुहिस्सरो दारवालमवणिवई । किमिमंति पुच्छिओ सोवि तस्स
तं मुणिय विन्नवइ ॥ ३८ ॥ पट्ट इण्हिचिय पत्तस्स सूरिणोणंतनाणमुप्पन्नं । तो केवलिमहिममिणं कुणंति अमरा सबहु-
माणं ॥ ३९ ॥ तं सोउं भत्तीए खयरवई कन्नयाजुओ सबलो । केवलिपासे पत्तो पणमिय तं देसणं सुणइ ॥ ४४० ॥
आह पट्ट संसारो धुवं असारो विणस्सरा रिद्धी । खणरायिणीउ रमणीउ गंतुरं जीवियत्तंपि ॥ ४१ ॥ इय देसणावसाणे

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ १३ ॥

खयरिंदो नमिय केवलिं भणइ । पहु मह सुयाभवंतरपई कई कथ उप्पन्नो ॥ ४२ ॥ तो कहइ विमलनाणी फलपूया-
करणपत्तपुन्नभरो । मरिउं सो सूरप्पहपुरायपयावसारस्स ॥ ४३ ॥ पुत्तो जाओ फलसारनामओ अत्थि चारुता-
रुन्नो । तं सोउं खयरवई पणयपहू मंदिरे पत्तो ॥ ४४ ॥ तो हं आलोचेउं सह भज्जासवमंडलीएहिं । तुब्भ सयासे पत्तो
नियतणयाए वरनिमित्तं ॥ ४५ ॥ ता राय भणसु नियपुत्तयं जहा मह सुयं विवाहेइ । तं सोउं नरनाहो जंपइ खेयरवइं
एवं ॥ ४६ ॥ पाविज्जइ खयरहिव अणप्पपुत्तेहिं तुह समो सयणो । चिंतामणिसंजोगो जायइ किं मंदभग्गाण ॥ ४७ ॥
इयरंपि खयरकुमरिं कल्लाणसिरिव को न ईहेइ । किं पुण भवंतरस्सरणजायनेहं तुहंगरुहं ॥ ४८ ॥ एत्थंतरे कुमारो
जाइसरणेण नायपुव्वभवो । जंपइ तह ताय तयं जह कहियमिमेण तुम्ह परो ॥ ४९ ॥ तं सोउं गुरुपरिओसपूरितो
कुमरमाह नरनाहो । गंतुं खेयरकन्नं विवाहिउं वच्छ आगच्छ ॥ ४५० ॥ इय जंपिय सम्माणियखयरवइं वत्थभूसण-
गणेण । पेसइ सह तेण सुयं राया चउरंगबलकलियं ॥ ५१ ॥ विज्जाहरिंदविज्जाबलेण पत्तो नहेण वेयड्डे । विहितो
तस्स पवेसे महूसवो खेयरजणेण ॥ ५२ ॥ सव्वुत्तुमम्मि लग्गे घणाणुराया महाणुरायेण । परिणीया कुमरेणं सिंगारतरं-
गिणी कुमरी ॥ ५३ ॥ गुरुगोरवप्पहिट्ठो दिणदसगं तत्थ संठिओ कुमरो । पच्छा ससुरमणुन्नविय आगओ नियपुरे सपिओ
॥ ५४ ॥ पिउणा पुरप्पवेसे सुयस्स असमो महूसवो विहिओ । अत्थाणठियं जणयं नमिय निविट्ठो तयाणाए ॥ ५५ ॥
नवरंगयनीरंगीअवगुंठियवयणपंकया बहुया । नयससुरा तस्सासीतुट्ठा अंतेउरे पत्ता ॥ ५६ ॥ अत्थाणट्टियं जणयं
सेवइ गोसप्पओससमएसु । न सुयइ कयाइ कुमरो कल्लाण पुणरुत्तमव्भासं ॥ ५७ ॥ काउं कयाइ रज्जाहिसेयपरमूसवं
कुमारस्स । गहियवउ निवो पत्तकेवलो मोक्खुमणुपत्तो ॥ ५८ ॥ नवनिवईवि नएणं पालेइ पयाओ दंडए दुट्ठे । मन्नइ
महायणीए पूयइ पुज्जे खले चयइ ॥ ५९ ॥ पुव्वभवोवज्जियसुकयकम्मसंभारभावतो सब्बे । खोणीवइणो तं देवयंव

फलपूजायां
फलसार-
कथा

॥ १३ ॥

जलपूजायां जलसार- कथा

आराह्यन्ति सया ॥ ४६० ॥ एगायवत्तधरणीवइत्तसंपत्तउत्तमजसस्स । तस्सुप्पन्नो कइयावि पुत्तओ पट्टदेवीए ॥ ६१ ॥
विहिउं वद्धावणयं नामं कुमरस्स कित्तिसारोत्ति । दिन्नं रत्ता सम्माणिऊर्णं निस्सेसपुरलोयं ॥ ६२ ॥ परिवड्डिउमारद्धो
कमेणमज्झावयाणमुवणीओ । समहीयकलो जातो समलंकियजोवणो कुमरो ॥ ६३ ॥ परिणाविओ य उव्वणजोवणकम-
णीयरायकुमरीओ । समयंमि तमभिसिंचिय रज्जे राया गुरुविराया ॥ ६४ ॥ नाणधरसूरिपासे गहिउं दिक्खं तवं तविय
तिक्खं । उप्पन्नणंतनाणो पत्तो सो सिद्धिसंबंधं ॥ ६५ ॥ जह विहिया फलपूया फलसारेणं महामहीवइणा । अन्नेणवि
सिवसुहमिच्छुणा तहच्चेव कायवा ॥ ६६ ॥ →❧फलपूजा❧←

❧ ❧ ❧ ❧ ❧ फलपूयं अणुसरिउं फलसारो भूवई इमो भणिओ । इण्हिं जलपूयाइ जलसारकहं निसामेह ॥ ६७ ॥ ❧ ❧ ❧ ❧ ❧
भूरिहिमनिम्मिओ इव पुंजियकप्पूरदलसमूहोव । रूपयमओ विसालो वेयड्डो नाम अत्थि गिरी ॥ ६८ ॥
रूपयमयम्मि तम्मि तमालकंकेलिकयलिसंडाई । दिट्ठारुणमरगयमणिसिहराई पिव विरायंति ॥ ६९ ॥ तम्मि य
रहनेउरचक्कवालनामं समत्थि गुरुनयरं । जम्मि तिमिराणभिन्नो लोओ मणिमहपहालोए ॥ ७० ॥ जत्थ गुरुमुत्तियाओ
हरिसहिययाओ सुपयचक्कातो । सउणासियसयवत्ता सईउ सरसी उवहसंति ॥ ७१ ॥ पणमंतखयरनिवइसिरपिंग-
मणिप्पहापिसंगपओ । जलहरसारो नामेण तत्थ खेयरवई अत्थि ॥ ७२ ॥ नियदाणबुद्धिजियजलहरावली जलहरा-
वलीनाम । तस्सत्थि हत्थिमंथरसंचारा सहयरी सारा ॥ ७३ ॥ तीए समत्थि जलरासिसिविणसूइयगहीरयावासो ।
जलसच्छप्पयईचिय कुमरो नामेण जलसारो ॥ ७४ ॥ मयणोव अतणुरूवो समग्गजणविहियहिययवासो जो ।
कमलायरोव गुरुमित्तदंसणुल्लसियसुवियासो ॥ ७५ ॥ उत्तमकुलावयंसो वयंसजणसंगतोवि रायसुतो । कीलाकए कया-
इवि पत्तो सायरगयगिरम्मि ॥ ७६ ॥ वेलजलचलणविघुट्टफुट्टगुरुसुत्तिमोत्तियप्पयरो । सामे जम्मि दिणम्मि वि विभाइ

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ १४ ॥

तारयसमूहोव ॥ ७७ ॥ तम्मि समित्तो कुमरो आरामपरंपरं परिब्भमिरो । आयन्नइ पक्काओ हक्काओ भिडंतसुहडाण
॥ ७८ ॥ के नाम इमे जुज्झंति किंवि (वा ?) वेरस्स कारणमिमेसिं । पेच्छामो पुच्छामोत्ति जंपिरो सो गतो तत्थ ॥ ७९ ॥
तो तेण ज्झत्ति दिट्ठा दोन्नि भडा दंतदट्ठनियउट्ठा । कयभीमभिउडिभाला रोसारुणलोयणकराला ॥ ४८० ॥ समरारंभ-
स्समवसगलंतपस्सेयविंदुजालेण । रेणुप्पसमणकज्जे रणरंगं सिंचयंतव ॥ ८१ ॥ जुयलं ॥ मा जुज्झह मा जुज्झह ता मह
नियवेरकारणं कहह । इय कुमरवारियावि हु जुज्झंति समच्छरा दोवि ॥ ८२ ॥ परारंति (पेरंति ?) अवसरंति य घडंति
विहडन्ति दिंति करणाइं । उम्मुक्कसीहनाया वगंतिय खगवग्गकरा ॥ ८३ ॥ अन्नोन्नल्लप्पहरप्पवंचअन्नायखग्ग-
घाएहिं । दोणहवि पडियाइं महीयलम्मि सहसत्ति सीसाइं ॥ ८४ ॥ ता तेसिं सीसाइं पमुक्कहुंकारपेक्कहक्काहिं । अन्नोन्नं
उच्छलिउं दंतेहिं डसंति अणुवेलं ॥ ८५ ॥ अवरोप्परासिदंडप्पहारजज्जरियअंगुवंगाइं । जुज्झंति कबंधाइंवि अच्छरिय-
कराइं कुमरस्स ॥ ८६ ॥ कुमरेणुत्तं मित्ता सीसकबंधाण रणरसुक्करिसं । पेच्छह अतुच्छअच्छरियकारयं रोसवसयाण
॥ ८७ ॥ ते विंति देव सिविणेवि नेव जं तंपि एत्थ सच्चवियं । इय जंपिराण पडियं धडदुगमवि पहरजज्जरियं ॥ ८८ ॥
सियदंतकोडितोडियअवरोप्परवयणगंडखंडाइं । निचेट्ठाइं होउं तस्सीसाइंपि पडियाइं ॥ ८९ ॥ तो ज्झत्ति पिंगकेसर-
सडाकडारियसमग्गदिसियक्कं । तडिपुंजपिंजरीकयजयंव जायं सरहजुयलं ॥ ४९० ॥ उक्खित्तकरप्पमुक्कफारफुत्कारसि-
क्करोसारो । वित्थारिज्जइ जेहिं दिणेवि तारयभरोव नहे ॥ ९१ ॥ अइघोरगज्जियारवरोहत्तं पेच्छिउं नरिंदसुओ ।
विम्हियहियओ जाओ भण्ण नट्ठा पुण वयस्सा ॥ ९२ ॥ तो भेरवभयजणयं सरहदुगंपि हु तिरोहियं सहसा । पेच्छइ
य पुरो बहुसूरकिरणभरसमहियं तेयं ॥ ९३ ॥ तं पेच्छिय विम्हयतो चिंतइ कुमरो किमिंदयालमिमं । मइमोहधाउ-
खोहाणमहव मह किंपि अन्नयरं ॥ ९४ ॥ इय चिंतंतो कुमरो जा थिरकयलोयणो तयं नियइ । ता तेयअंतरद्वियनर-

जलपूजायां
जलसार-
कथा

॥ १४ ॥

जलपूजायां
जलसार-
कथा

सरिसं पेच्छए किंपि ॥ ९५ ॥ नयणाणिमिसत्तप्पमुहलिंगविन्नायअमरसब्भावं । रइयकरकमलकोसो तं नमिय पयंपइ
कुमारो ॥ ९६ ॥ को पहु तुमं किमेवं भीसणरूवो ठिओ कहसु मज्झ । इय तेणुत्तो अमरो कुमरं पइ भणइ सुणसुत्ति
॥ ९७ ॥ अत्थि असमत्थसुहडं समत्थसुहडोहपत्तविजयंपि । जयसारं नाम पुरं विजयावहरायलंकरियं ॥ ९८ ॥
तत्थत्थि वित्तसियकरवियरणसंजणियजणमणपमोओ । सम्मयसहितो चंदोव चंदतेउत्ति अत्थवई ॥ ९९ ॥ चंदप्पहा-
भिहाणा मणोहरा तस्स पिययमा अत्थि । चंदप्पहमइरा इव सरूवकयजणमणुम्माया ॥ ५०० ॥ बहुधणवईवि दव-
ज्जगाय सो कुणइ भूरिववहारे । कयकिच्चेहिं वि महिओ जलही रयणत्थि अमरेहिं ॥ ५०१ ॥ काउं कयाणयाइं कयाइं
पउणाइं पवहणे चडिओ । चलियो य मलयसिंघलकडाहकेसाइदीवेसु ॥ २ ॥ गच्छइ पोओ दूरा नीरभरं मच्छए
तरंगे य । फाडंतो तासंतो भंजंतो भूरिवेगेण ॥ ३ ॥ अणुकूलवायविहिमणवियंभणप्पेरियं व जलजाणं । थेवेहिवि
दिवसेहिं बंछियदीवेसु संपत्तं ॥ ४ ॥ तत्थ मणवंछियत्तहियजायबहुलाहपत्तपरिओसो । गहिउं सदेसजोग्गे कयाणए
तयणु बाहुडिओ ॥ ५ ॥ पवणप्पसराऊरिज्जमाणसियवडपयंडवेएण । थोवदिणेहिंवि पत्तो पोओ जलरासिमज्झम्मि ॥ ६ ॥
एत्थंतरे अकालियघणपडलेहिं समग्गनहमग्गो । जीवोव अकज्जन्भवपावेहिं कलुसिओ दूरं ॥ ७ ॥ नहदप्पणे समुदो
संकंतो अह घणो जलहिसलिले । जणयंति विन्भमं दोवि सामला पेच्छिरनराण ॥ ८ ॥ झंपाए समुल्लसिरो सिंधुजले
निवडिऊण तडिपुंजो । वडवानलोव रेहइ नहमंडलजंतजालोहो ॥ ९ ॥ अच्चंतथूलामलजलधारासारसलिलसंभारं । मुंचइ
मेहो मोयाविउंव जलहिं समज्जायं ॥ ५१० ॥ सामघणाली गयणे सामुक्कलियावली समुदम्मि । गज्जंतीओ पसरंति दोवि
गुरुगयघडाओव ॥ ११ ॥ नीतो होइ घणो जलभरेण उल्लसइ तेण य समुदो । दोन्निवि मिलिणनिमित्ता परोप्परं संचरं-
तिव ॥ १२ ॥ एवं अकालभवमेहमंडलाडंबरं पलोएउं । सबोवि पवहणजणो जातो कायवमूढमणो ॥ १३ ॥ रोरसमी-

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ १५ ॥

रुक्कलियातोडियतणियागणो सियवडोवि । पवहणवइहिययंपिव पडितो सह कूवखंभेण ॥ १४ ॥ गुरुकलोलारोहावरोह-
आवत्तगतभमणाइं । अणुभविऊणं अन्भिडिय गिरितडे विहडिओ पोओ ॥ १५ ॥ अंगीकयगुरुकट्टा तरिया केवि हु
भवं व नीरनिहिं । अवरे उ अगुरुकट्टा भवेव मग्गा समुहम्मि ॥ १६ ॥ पवहणवईवि बहुधणविणासदंसणविसायविव-
संगो । मग्गो अगाहसलिले भववासे को सया सुहिओ ॥ १७ ॥ तयणु जलमाणुसीए मयणायत्ताए निययदइओत्ति ।
आलिंगितो जहडियवत्थुं न नियंति रायंधा ॥ १८ ॥ आयड्डिय सलिलाओ भोगत्थं तीए गिरितडे नीओ । सुहपरिणईए
जीवोव कड्डिओ नरयमज्झातो ॥ १९ ॥ सा तं दंहुं न इमो पिउत्ति भीया गया जले झत्ति । सावायपरट्टाणे को चिट्ठइ
नायपरमत्थो ॥ ५२० ॥ सेलतडसिलासीणो चित्तेई मज्झ चेव पडिकूलो । एस हयविहिविलासो पुवज्जियदुकयवसयस्स
॥ २१ ॥ जं अच्चब्भुयधणकणभरियंपि पवहणं विहडियं मे । मरणंतवसणं सिंधुमज्जणाहमवि संपत्तो ॥ २२ ॥ जं
जस्स जया जायइ सुहमसुहं वा तयं तथा तेण । धेज्जमवलंबिऊणं सहियवं जेणिमं भणियं ॥ २३ ॥ जंचिय विहिणा
लिहियं तं चिय परिणमइ किं वियप्पेण । इय जाणिऊण धीरा विहुरेवि न कायरा हुंति ॥ २४ ॥ एवं विभावणागय-
विसायवसजायमणअवट्ठंभो । अवलोइउं पवत्तो रमणीए पव्वयपएसे ॥ २५ ॥ गुरुसिहरगुहाकंदरनियंबनिज्जरसयाइं
पेच्छन्तो । भक्खंतो य फलाइं कइवयदिवसाइं तत्थ ठिओ ॥ २६ ॥ किच्छेणमवरदिवसे तगिरिसिहरंमि दुग्गमे चडिओ ।
अवलोयइ अइवहलं वणसंडं मेहखंडं ॥ २७ ॥ अनिलतरलाओ जत्तो निवडंतो नज्जए कुसुमनियरो । सुक्कोदयउत्थ-
भवघणपडलाउ व करयनिउरुंभो ॥ २८ ॥ जं मज्झट्टियकंचणमणिमयजिणभवणकिरणकब्भुरियं । कप्पहुमसंडंपिव सोहइ
आभरणगणजुत्तं ॥ २९ ॥ तंमज्झे गयणंगणगयसिगं जिणहरं सुवन्नमयं । मेरुंपिव अवलोयइ तलसंठियभद्दसालवणं
॥ ५३० ॥ आभाइ जस्स सिहरे संकंतानिलचला सियधयाली । सुरगिरिजिणण्हाणपवत्तदुद्धजलपवहपंतिव ॥ ३१ ॥

जलपूजायां
जलसार-
कथा

॥ १५ ॥

जलपूजायां
जलसार-
कथा

तस्मि पविट्टो सो नियइ निरुवमं रिसहसामिणो बिंबं । उम्मीलियभत्तिवसुलसंतरोमंचकंचुइतो ॥ ३२ ॥ नमइ य तं
भालतलगमिलियमहिमंडलो पहरिसेण । रइयकरजुयलकोसो नियइ य नाहिं अणिमिसच्छो ॥ ३३ ॥ एत्थंतरस्मि एगो
चारणसमणो नहेण संपत्तो । कयतिप्पयाहिणो रिसहसामियं थोउमाढत्तो ॥ ३४ ॥ तिहुयणगुरुणो सिरिरिसहसामिणो
नमियपायसयवत्तं । कयकरकोसो आणंदअंचिओ संथवं काहं ॥ ३५ ॥ कणयच्छविणो अंसावलंबिणो कसिणकुंतला तुव्वभ ।
मंदरगिरिणो पंडगतमालतरुणोव रेहंति ॥ ३६ ॥ जे सामिसाल तुह पयलीणा दीणावि ते नरा दूरं । भवताववज्जियंगा
विलसिरपउमालया हुंति ॥ ३७ ॥ मइसुयओहीमणपज्जवाणि तुह केवलस्मि मग्गाणि । तारयनक्खत्तग्गहससिणोव सहस्स-
करतेए ॥ ३८ ॥ तं सामि समवसरणंमि सोहसे रइयरम्मचउरूवो । नारयतिरियनरामरचउगइजणवोहणत्थं व ॥ ३९ ॥
रायाणं रंकाण स धम्मवएसं तुमं समं दिससि । किं जयमुज्जोयंतो मेच्छकुलाइं चयइ सूरु ॥ ५४० ॥ तुह मिलणे मह
जाओ बहुमाणवसेण रम्मरोमंचो । घणसमयंमि कयंबस्स सबओ कुसुमनियरोव ॥ ४१ ॥ इय नीइचक्कसिरिनेमिचंदमुणि-
नाहनमियपयपउम । जह जाया तुह सिद्धी तं तह मज्झवि पहु पयच्छ ॥ ४२ ॥ इय थोउं रिसहजिणं उवविट्टो तयणु
चंदतेओ से । पणमिय कयंजलिउट्टो उवविसिओ भणइ मुणिमेवं ॥ ४३ ॥ भयवं नरत्तनियजम्मजीवियवाण वसणठाणाण ।
देवगुरुदंसणेणं मन्ने अज्जेव सहलत्तं ॥ ४४ ॥ ता पहु मह कहसु अवत्थसमुचियं धम्ममह कहइ साहू । पूइज्जइ एस
पहू अट्टपगाराहिं पूयाहिं ॥ ४५ ॥ तहाहि । नेवज्जगंधअक्खयदीवयफलसलिलकुसुमधूवेहिं । जिणपूया भत्तीए रइया
वियरइ सिवसुहाइं ॥ ४६ ॥ दूरे धणक्कयुव्वभववासप्पमुहाउ सत्तपूयाओ । एक्कावि मुहा लब्भा जलपूया हरइ संसारं
॥ ४७ ॥ जओ । जलभरियपत्तमेत्तो संसारमहोयही फुडं तस्स । जो ठवइ जिणस्स पुरो सीयलजलपूरियं पत्तं ॥ ४८ ॥
फलिहेण व सच्छेणं अमएणव साउणा जिणवरिंदं । सीएणं सिसिरेण व जलेण अचंति कयपुन्ना ॥ ४९ ॥ जेण जिणाउ न

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ १६ ॥

अन्नं पूयापत्तं समत्थि तिजएवि । ता पूइऊणमेयं सहलं मणुयत्तणं कुणसु ॥ ५५० ॥ तं सोउं सो जंपइ नमिऊण
मुणिं निवद्धकरकोसो । भयवमणुगहिओ हं समयोचियधम्मकहणेण ॥ ५१ ॥ इय जंपिउं गओ गिरिनिज्जरणनिवायरुंद-
कुंडम्मि । कयकमलपत्तपुडए गहिय जलं जिणहरं पत्तो ॥ ५२ ॥ दहूणं भुवणगुरुं सुमरियपुबिह्लनियसिरिप्फुरणो । चिंतइ
तइया नाहो जिणनाहो मज्झ जइ हुंतो ॥ ५३ ॥ ता हं नियसिरिवित्थरसमवत्थगणेण (?) नूणमच्चंतो । इण्हं एयावत्थो करेमि
एयंपि जलपूयं ॥ ५४ ॥ इय चिंतिय असमुल्लसियभत्तिपब्भारपुलइयसरीरो । पसरन्तभूरिआणंदअंसुदंतुरियपमहच्छो
॥ ५५ ॥ मुंचइ पहुणो पुरतो जलपुडयं अत्तणो परिकलंतो । नरजम्मजीवियवण सहलयं भुवणपणयस्स ॥ ५६ ॥
भणइ मुणी धन्नो तं पयडइ पुलओ तुहंतरं भत्तिं । इति न दुद्धे पीए उगारा आरेनालस्स ॥ ५७ ॥ सिवलच्छि-
पेच्छियाणं उच्छाहो होइ एरिसोवम्मं । नहि सुकयसंगयाणं धम्मम्मि अणायरो होइ ॥ ५८ ॥ तेणुत्तं भयवं मे भवंतरे
वि हु भवेज्ज तं चेव । देवगुरुधम्मतत्ताण देसओ विरइयपसाओ ॥ ५९ ॥ इय जंपिय तेण नओ गओ मुणी नहयलं अलं-
करिउं । सोवि गुरुविरहविहुरो खणमेत्तमचेयणोव ठिओ ॥ ५६० ॥ नमिउं बहुमाणपुरस्सरं जिणं निग्गतो जिणाययणा ।
नियपुरगमणोवायं चिंतंतो गमइ दिणसेसं ॥ ६१ ॥ एत्थन्तरम्मि नहमगसंगिनग्गोहसाहिसिहरम्मि । अल्लीणा आगं-
तूण पक्खिणो झत्ति भारुंडा ॥ ६२ ॥ ते माणुसभासाए नियवुत्तंते कहिति पुत्ताणं । एक्केण जंपियमहं जयसारपुराउ
संपत्तो ॥ ६३ ॥ तप्पुरसमग्गवणिवग्गअग्गणीचंदतेयनामो जो । संभिन्नपवहणो सो मओ अपुत्तोत्ति जणवाओ ॥ ६४ ॥
निसुओ निवेण तो से गहितो निहूडिऊण घरसारो । जे जोयंति असंतंपि ते न किं संतमिह छिइं ॥ ६५ ॥ गुत्तंपि
धणं कहियं कयत्थणाकंपिराए कंताए । अप्पमि व णस्संतंते कज्जं किं सयणदविणेहिं ॥ ६६ ॥ एयं आरामियजणक-
हिज्जमाणं मए सुयं वच्छा । इय भारुंडपयंपियसवणा सो चिंतइ ससोओ ॥ ६७ ॥ पेच्छ जहा मह लच्छी पसरंत-

जलपूजायां
जलसार-
कथा

॥ १६ ॥

जलपूजायां
जलसार-
कथा

सुवन्नतारसारावि । सिंघं पि खयं पत्ता गिम्हसमुब्भूयरयणिव ॥ ६८ ॥ अत्थज्जणदुब्बुद्धी दिन्ना दिव्वेण मज्झ रुद्धेण ।
किं देइ करचवेडं कयाइ कुविओ विहिविलासो ॥ ६९ ॥ किं विणाण चक्कवट्टी जाओहं सब्बा जओ न मए । दव्वओ
विरइओ सुपत्तत्तिथेसु धणिणावि ॥ ७० ॥ किं सायरतरणधणज्जणं विणा मज्झमासि न वहंतं । जं मे गया सिरी
जीवियं पि संदेहमणुपत्तं ॥ ७१ ॥ पत्तावि पलइच्चिय अपुन्नवंताण निच्छियं लच्छी । किमभगगिहल्लीणा होइ थिरा
कामदुह्वेणू ॥ ७२ ॥ सुकुमालतणू पेम्मेक्कमंदिरं विमलसीलकलियंगी । कह सहिही मह कन्ता कयत्थणं रायभडज-
णियं ॥ ७३ ॥ नूणं न मए रम्मो धम्मो विहिओ भवंमि पुबिले । जमहं विडंबणाडंबरं इमं इह भवे पत्तो ॥ ७४ ॥
तत्थ गमणुस्सुतोवि हु गच्छामि कहं उवायहीणोहं । कहमक्कमचंकमणो पंगू वंछियपुरं जाइ ॥ ७५ ॥ जइ जामि तत्थ
लच्छि ता निवघत्थं पि नूण वालेमि । गुरुविसवेगविलुत्तं पि चेयणं मंतवाइव ॥ ७६ ॥ इय तस्स धणविणासासुहि-
यस्स निसा ठिया पहरसेसा । पुत्ताण गमणठाणाणि कहिय गच्छंति भारंडा ॥ ७७ ॥ जो चलिओ तन्नयरे पाए
सो तस्स दढयरं लग्गो । उड्डीणो भारंडो मणनयणजवेण जाइ नहे ॥ ७८ ॥ नवरं सो विहिविलसियवसेण विच्छुट्टि-
ऊण तप्पाया । पडिओ समुदसलिले विमुहविही कुणइ नो किं वा ॥ ७९ ॥ मज्जंतेणं तेणं जिणगुरुचरणाण सुमरियं
सहसा । तस्साणुभावओ मरिउमच्चुए सो सुरो जाओ ॥ ८० ॥ कलेण चारणस्समणतगुरू तंमि चेव कप्पस्मि ।
जातो सुरो वहा पुवभवभवो ताण नेहोवि ॥ ८१ ॥ नाऊणं नियचवणं तेणुत्तो गुरुसुरो सुही एवं । पत्ते मणुयत्ते मं
पडिबोहेज्जसु तुमं मित्त ॥ ८२ ॥ पडिवन्नं तेण तयं तो सो चविऊणमेत्थ वेयट्ठे । खयरिंदसुओ जाओ चलिओ य
पकीलिउं एत्थ ॥ ८३ ॥ एत्थंतरे मए सुरसुहसंगविमोहओ बहुदिणेहिं । सरिया पुवभवदुगपडिबोहब्भत्थणा तुज्झ
॥ ८४ ॥ तो भडधडसिररणसरहरूवप(पभईय)विरइयं पच्छा । नियसाहावियरूवं तुह विब्भमकारणे कुमर ॥ ८५ ॥

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ १७ ॥

ता वच्छ अपत्थंपिव नराण रज्जंपि होइ असुहाय । गिम्हनईनीरंपिव झिज्जइ अणुदिवसमवि आउं ॥ ८६ ॥ नरनय-
णाणिमिसत्तंव जोवणं नो कयाइ ठाइ थिरं । कलुससहावाउ सया बहुलनिसाओव मयच्छीओ ॥ ८७ ॥ किं बहुणा
सवंपि हु विणस्सरं भवसमुब्भवं वत्थु । सारयघणोव सोयामणिव जलबुब्बुतोहोव ॥ ८८ ॥ ता वीयरायदेवं पडि-
वज्जसु तं सरायमुज्झिता । पाविय वंछियफलं कप्पतरुं सरइ को निंव ॥ ८९ ॥ निगंथंमि गुरुंमि गुरुबुद्धिं कुणसु मा
पुण संगंथे । पत्तम्मि सुयणसंगे मग्गइ किं कोइ खलगोद्धिं ॥ ९० ॥ मुत्तुमतत्ते अंगीकरेसु जीवाइयाइं तत्ताइं ।
को गुंजाओ गिण्हइ चइऊण महग्घरयणनिहिं ॥ ९१ ॥ पडिबोहिउं तुममहं जाओ निरिणो नियम्मि पडिवन्ने । तं
सुणिय जाइसरणेण नियमवे पेच्छिय कुमारो ॥ ९२ ॥ जंपइ पणामपुवं पडिवनं पालियं तए साभि । तं मोत्तुं नन्नो
तिहुयणेवि परमोववयारी मे ॥ ९३ ॥ इण्हिं गिहधम्ममहं काहमसत्तोमिह सबविरइए । किं मयमुहगयसज्जं कज्जं
काउं तरइ कलहो ॥ ९४ ॥ इय तेणुत्ते तियसे सहसत्ति तिरोहिए गतो तेओ । अब्भंतरिए तरणिंमि दुरवलोओ
पयावोव ॥ ९५ ॥ संपत्तमित्तजुत्तो पत्तो नयरे गुरुक्कमे नमिउं । गिण्हइ गिहत्थधम्मं कल्लाणे को पमायपरो ॥ ९६ ॥
रंकेण व रयणनिही वरविज्जो वाहिणव संपत्तो । सद्धंमो तेणं सो कयकिच्चं कलइ अप्पाणं ॥ ९७ ॥ उम्मत्तजोवणुदाम-
कामकमणीयकायकंतीओ । नहयरनियंविणीओ पुत्तो परिणाविओ पिउणा ॥ ९८ ॥ तं अहिसिंचिय रज्जे पवज्जं गिण्हए
खयरराया । इहलोइयपारलोइयसुहकज्जे उज्जया गरुया ॥ ९९ ॥ जलसारखयरचक्की परचक्कमणकयमणुकरिसो । पालइ
पसरंतपहो नियरज्जसिरिं सुरिंदोव ॥ ६०० ॥ लीलाए परिचलिरम्मि जम्मि माणिकमयविमाणेहिं । गयणयलमलंकिज्जइ
सयावि किंकिणिकलरवेहिं ॥ १ ॥ वंदइ गुरुणो पूयइ जिणेसरे कुणइ संघबहुमाणं । जिणजत्ताउ पवत्तइ मंदरनंदी-

जलपूजायां
जलसार-
कथा

॥ १७ ॥

धूपपूजायां
धूपसुंदर-
कथा

सराईसु ॥ २ ॥ इय सद्धम्मं रज्जस्सिरिं च परिपालिऊण बहुकालं । नामेण रयणसारं कुमरं रज्जे ठवेऊण ॥ ३ ॥
नियजणयचरणमूले दिक्खं गहिऊण कयतवच्चरणो । पावियकेवलनाणो पिउणा सह सिद्धिमणुपत्तो ॥ ४ ॥ विहिया
जह जलपूया सिवसुहहेऊ इमस्स संजाया । तह जायइ खन्नस्सवि भत्तीए तीए ता जयह ॥ ५ ॥ ❧ जलपूजा ❧

卐 卐 卐 卐 卐 भणिओ जलपूयाए जलसारो संपयं पयंपेसि । निव धूवसुंदरकहं आयन्नह धूवपूयाए ॥ ६ ॥ 卐 卐 卐 卐 卐

अत्थि एफुरियमहानीलमणिसिलासालफलिहकविसीसं । सिरकुसुमियवणपरिवेढियं व नयरं महासालं ॥ ७ ॥
पडिमंदिरमणिभित्तिप्पडिबिंबियतरणिभासुरत्तेण । जं पेच्छिउंपि तीरइ न तस्स कत्तोरिपरिभूई ॥ ८ ॥ थिरमइपया-
वजियगुरुअहिमयरो जलनिहिब गंभीरो । चंदोव पवित्तकरो राया नयसुंदरोत्थि तहिं ॥ ९ ॥ बहुसंखमंडलग्गप्पहार-
परजयपवित्तयाकलिओ । जो एक्कमंडलग्गप्पहारपरजयपवित्तोवि ॥ ६१० ॥ तस्संतेउरतरुणीपहुत्तपयमस्सिया पिया
अत्थि । नामेण कम्मणावि हु विजयवई सीलकुलभवणं ॥ ११ ॥ डज्जंतागुरुनवधूवसुंदरो धूवसुंदरो नाम ।
तीएत्थि हत्थिमंथरगई रईसोवमसरीरो ॥ १२ ॥ समराइओ सुसाहुव समणधम्मोव जो सुहयमुत्ती । सक्कमलच्छि-
विलासो गयकरवाहो महुमहोव ॥ १३ ॥ कुमरो कयाइ आरुहिय खंधरं गुरुकरेणुरायस्स । छत्ततिरोहियतरणी तरुणी-
करचलिरसियचमरो ॥ १४ ॥ पुरओ पयट्टहयचट्टचडियनियमित्तपत्ति(पंति ?)संजुत्तो । पविसिय सहाए पणमिय पिउणो
पुरओ समुवविट्ठो ॥ १५ ॥ एत्थंतरम्मि रणवीरराइणो दारवालविन्नत्तो । दूतो दुयं नरिंदं नमिउं विन्नबिउमारट्ठो
॥ १६ ॥ पहु पिहुपयावपावयपुलुट्टपरिपंथिसत्थसलहेण । गयनयरपहुरणवीरेण पेसिओ तुह सयासे हं ॥ १७ ॥
मह पहुणा तुह आणा पट्टविया जह पयच्छ पइवरिसं । मह करमह न पयच्छसि धरियधणू होसु ता समुहो ॥ १८ ॥
असरिससामत्थेणवि तेण तुमं नीइपुवयं भणिओ । को महुरोसहसज्जे रोए कडुओसहं देइ ॥ १९ ॥ ता हरिही रज्जं पि हु

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ १८ ॥

जइ न धरसि तस्स सासणं सीसे । हरिणाहिवम्मि हरिणावमाणणा नणु अणत्थाय ॥ ६२० ॥ कहियं हियं तुह मए
तं कुणसु नरिंद जं मणोभिमयं । सप्पुरिसपयडियं पिहु गिण्हंति हियं न देवहया ॥ २१ ॥ छन्नोवि रायरोसो दूउत्तस्स-
वणओ ठिओ पयडो । किं उट्ठहिओ अग्गी जालिज्जंतो न पज्जलई ॥ २२ ॥ भिउडिघडणा निवइणो समंपि विसमत्त-
मुवगयं भालं । धिज्जाइयस्स वत्थं वमंदपवमाणतरलणओ ॥ २३ ॥ भणियं निवेण रे दूय तुह पहू मह करं गहितु-
कामो । अहयं तु नियकरेणं रणे गहिस्सं सिरं तस्स ॥ २४ ॥ तं पेसिय तुह पिहुणा विरोहिओ हं धुवं सनासाय ।
निदायत्तमइंदप्पडिबोहो किं सुहं देइ ॥ २५ ॥ आणसु तं नियनाहं नाहं जं से सहिस्समवराहं । साहूणं सिंगारो
अविणयसहणे न निवईणं ॥ २६ ॥ दूएणुत्तं निव नियघरट्ठिओ जह वहेसि भडवायं । तह जइ समरुच्छंगेवि ता
तुमं चेव वीरवई ॥ २७ ॥ रायाह जाहि आपेहि नियनिवं दूय देससीमाए । जह रणनिहसो दंसइ पोरुसकणयुब्भवं
वन्नं ॥ २८ ॥ इय जंपिय सम्माणिय विसज्जितो राइणा गतो दूतो । अच्चंतं कुवियावि हु उज्झंति नरेसरा न नयं
॥ २९ ॥ ताडाविया निवइणा रणभेरी भीरुभूरिभयजणणी । तो नयनिवेण कुमरेण पत्थिया समरगमणाणा ॥ ६३० ॥
नाऊण निब्बंधममच्चमंडलीजंपिएण दिन्ना से । रणगमणाणा तो सो चलिओ चउरंगबलकलिओ ॥ ३१ ॥ गुरुगयघडासु
तुरयावलीसु रणझणिरकिंकिणिरहेसु । रायाणो सामंता मंडलिया चडिय संचलिया ॥ ३२ ॥ परिकलयंता बहुआउहाइं
आओहणाय जोहोहा । कुमरं परिचारंता जंति पहे समरनिवडिया ॥ ३३ ॥ विरइयबहुप्पयाणयसयलंधियनिययदे-
ससीमाए । पत्तो कुमरो रिउनरवईवि सबलो सदेसंते ॥ ३४ ॥ उवभुत्तसपहुगरुयप्पसायनिककययुज्जमा सुहडा ।
अन्भिडिया असमुच्छलियमच्छरुच्छाहसंजुत्ता ॥ ३५ ॥ हरिकरिरहचडिएहिं हयगयसंदणठिया पडिक्खलिया । पय-

धूपपूजायां
धूपसुंदर-
कथा

॥ १८ ॥

चारिणो वि रुद्धा समच्छरं पायचारीहिं ॥ ३६ ॥ बावलसेल्लभल्लयमल्लीनारायसरपहारेहिं । भिज्जंता गुरुगयघडमड-
तुरया जन्ति जमगेहं ॥ ३७ ॥ अन्नोन्नं दंतेहिं तोडंति सिराईं मुक्कहक्काईं । निप्पसरअसिप्पहरे वियरंति य वगिर-
धडाईं ॥ ३८ ॥ नवरंगमेहडंबरसियछत्तेहिं मही जहिं सहइ । रत्तुप्पलइंदीवरपुंडरियकयोवहारव ॥ ३९ ॥ खग्गाहय-
गयकुंभगनिगयाउ पडन्तमुत्ताओ । रेहन्ति खग्गपाणीयगलिरगुरुबिंदुणोव जहिं ॥ ६४० ॥ असिघायुच्छलियठियं गयस्स
जस्सन्तिगे मुहं करिणो । सो सहइ तेण दुकरोव सचउकुंभोव दुमुहोव ॥ ४१ ॥ एयारिसे रउदे रणम्मि रणवीरराय-
कुमरेहिं । पारद्धं पहरेउं परोप्परं करडिचडिणहिं ॥ ४२ ॥ लल्लकमुक्कहक्कालप्पहारेहिं दोवि पहरंति । भिंदंति य
अन्नोन्नं दंतप्पहरेहिं करिणोवि ॥ ४३ ॥ रिउकरिणा कुमरकरी निवाडितो दसणपहरजज्जरिओ । पडिओ कुमरो गहिओ
य वेरिकरिणा करग्गेण ॥ ४४ ॥ उच्छालिओ य गयणे निवडन्ते निवसुए रिउनिवेण । धरिओ खग्गो उद्धं (हेट्टं?)
जह भिज्जइ निवडिरो कुमरो ॥ ४५ ॥ निवडंतेणं तेणं रिउखग्गं वंचिउं तओ झत्ति । पयघाएणं पट्टीए पहणिउं पाडि-
ओ वेरी ॥ ४६ ॥ पडिओ सो करिपुरओ कोवमयंघेण तयणु तेणावि । दिन्नो पाओ सीसे दलियकवालो मओ राया
॥ ४७ ॥ दट्टुं वेरिविणासं असुरामरखेयरेहिं परिमुक्का । कुमरसिरम्मि निवडिया अलिउलमुहला कुसुमवुट्ठी ॥ ४८ ॥
अहियंमि हए गहिया कुमरेणमनायगा सिरी सयला । “को वा कुणइ पमायं लाहे अच्चब्भुयत्थस्स” ॥ ४९ ॥ मोत्तुं निय-
पहुपुत्तं रिउसामंता कुमारमणुसरिया । “लज्जंति जियंताणवि सब्बे विरलच्चिय मयाणं” ॥ ६५० ॥ तो झत्ति समरवीरो
रिउपुत्तो कुमरमस्सिओ सरणं । “समयाणुवत्तणं सइ नीई किं पुण इय अवाए” ॥ ५१ ॥ कुमरेणावि विइन्नो तप्पिट्ठीए
निओ अभयहत्थो । “इयरम्मि वि निरणुसया किं पुण सरणागए गरुया” ॥ ५२ ॥ काराविय नियआणं दिन्नं तस्सेव
तज्जणयरज्जं । “असमाणच्चिय निच्चं कोवपसाया महंताण” ॥ ५३ ॥ तेणवि सिंगारसिरिभइणिं परिणाविओ नरिंद-

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ १९ ॥

सुओ । “पञ्चवयरियवे नो कालविलंबं कुणइ गरुओ” ॥ ५४ ॥ चलिओ सदेससमुहो रायंगरुहो जयजियजसोहो । “सिद्धे कजे को वा वसइ सयन्नो विएसम्मि” ॥ ५५ ॥ कुमरेण समं नवनरवईवि चलिओ सकीयबलकलिओ । “नियप-
हुपयसेवच्चिय मूलं लच्छीए न पमाओ” ॥ ५६ ॥ आगच्छंतो कुमरो पत्तो वियडाडईए एक्काए । हिंतालतालतालीतमाल-
वडसालकलियाए ॥ ५७ ॥ जा उत्तमसोहंजणविसालअक्खा मणोहरपवाला । पाडलअहरा पव्वयपओहरा सहइ रमणिब
॥ ५८ ॥ विलसंतसरलचित्ता गुरुहयमाराय साहुसेणिब । भवावलिब संजायपत्तबोही असोया जा ॥ ५९ ॥ मज्झंमि
तीए वणसंडवेढियं गयणलग्गगुरुसिहरं । सप्पायारंपि भयावहारयं नियइ जिणभवणं ॥ ६० ॥ रेहन्तरूवदारं नरिंद-
मिव पत्तमूलरेहं जं । संपूरियसुयणासं लसिरामलसारसहियं च ॥ ६१ ॥ सबत्तो अनिलचला कंकेलितमालसाहिणो
जस्स । जिणरायभयुब्भन्ता रागहोसब कंपंति ॥ ६२ ॥ दट्ठूण देवमंदिरमावासइ तत्थ निवसुओ सबलो । तम्मि
पविट्ठोच्चिय झत्ति मुच्छिओ पेच्छिऊण जिणं ॥ ६३ ॥ सिसिरकिरियाविरयणा संपावियचेयणो ठिओ सत्थो । आपुच्छिओ
य मुच्छाए कारणं मंतिवग्गेण ॥ ६४ ॥ जंपइ कुमरो मह देवदंसणा जाइसरणमुप्पन्नं । सच्चवियं तेण भवहुगमाय-
न्नह तयं तुब्भे ॥ ६५ ॥ पत्तरहराइयंमि सरेब आरामरम्मगामंमि । साहससारो नामेण आसि एगो तुरयचोरो
॥ ६६ ॥ गंतूण दूरदेसे अत्थत्थी हरइ गुरुयतुरंगे । विक्किणइ य दूरतरे “का वा लुद्धाण मज्जाया” ॥ ६७ ॥ नियभो-
गंमि निजुंजइ दविणं वियरइ य दीणवंदीणं । “मोत्तूण चागभोगे नन्नं लच्छिफलं अहवा” ॥ ६८ ॥ कइयावि कडीतड-
बद्धखग्गघेणू तुरंगहरणत्थं । पत्तो सुवासनामे गामे दिणपच्छिमे जामे ॥ ६९ ॥ मणपवणजवे विलसन्तलक्खणे
तेयतरलयाकलिए । पेच्छइ अतुच्छदुद्धादलाइं चरमाणए तुरए ॥ ७० ॥ तो सो चिन्तइ एयाण मज्झओ जइ हरामि
एक्कंपि । दालिइस्साजंमं ता देमि जलंजलिं नूणं ॥ ७१ ॥ इय चित्तियप्पओसे लग्गो मग्गंमि सो तुरंगाण । “जो जक्कजे

धूपपूजायां
धूपसुंदर-
कथा

॥ १९ ॥

धूपपूजायां
धूपसुंदर-
कथा

पत्तो स पमायं कुणइ किं तम्मि” ॥७२॥ गामाहिवस्स गेहे गया हया सूरतेयनामस्स । दारेच्चिय सो रहिओ “परघर-
माविसइ को सहसा” ॥७३॥ पविसन्तगोउलुच्छलियरयभरादिस्सदेहजट्ठी सो । तम्मि पविट्ठो “अप्पं न चोरजारा पया-
सन्ति” ॥७४॥ मं पेच्छिही महीए कोवित्ति विचिन्तिउं वडे चडिओ । “जह होइ अप्परक्खा दक्खा तह संपयट्ठंति”
॥ ७५ ॥ वडसंठिएण दिट्ठी पक्खित्ता तेण गेहमज्झम्मि । दिट्ठा य दीवउज्जोयपयडिया अंगणा एगा ॥ ७६ ॥ हरि-
णिंदखाममज्झा हरिणंकमुहीय हरिणसमनयणी । विहुमअहरा पीवरपओहरा कणयवन्नधरा ॥७७॥ तं पेच्छिऊणमस्साव-
हारओ चितए कयत्थो सो । नियरूवसिरी अहरीकयस्सिरी जरिस्समा भज्जा ॥ ७८ ॥ एत्थंतरम्मि दुद्धासु सयलसुरहीसु
सेरहीसुं च । बद्धेसु तुरंगेसुं जणप्पयारे ठिए विरले ॥ ७९ ॥ परिपालन्ते अस्सावहारिपुरिसम्मि हयहरणसमयं । मंदं
मंदं गेहाओ निग्गया सा मयंकमुही ॥८०॥ तं दट्ठुं संचरिओ सो झत्ति वरंडओवरिमसाहं । आगच्छंतिं तो नियइ वडतले
दारमग्गेण ॥८१॥ संपत्ता वडतलवियडअयडतडनियडविडभडसयासे । तीए अवलोइओ सो नववयदिढदेहसंठाणो ॥८२॥
मयणाहिमांसलामोयमणहरो रइयरम्मसिंगारो । परिपीडियतूणीरो करकलियपयंडकोदंडो ॥ ८३ ॥ दट्ठूण तयं उक्कं-
ठियाए तक्कंठठवियबाहाए । आलिं गिऊण भणियं किं सुहय तुहेत्तिया वेला ॥ ८४ ॥ सो जंपइ सुयणु जणप्पयारपसमं
ठिओम्हि पालन्तो । “अहवेरिसकज्जरओ पयडइ किं कोवि अत्ताणं” ॥८५॥ तुह मोहमोहियमई मयच्छि अहमागतो
गुरुरएण । “लीलावईविलासावहियमणाणं कुओ थिरया” ॥ ८६ ॥ गयगमणि तुह कज्जे मुत्तुं कंतं सिरिं च इह पत्तो ।
“अहवा तं सबस्सं जंमि मणो निव्वुइं वहइ” ॥ ८७ ॥ सा आह कहां तुमए नाओ अपयासिओ वि संकेओ । तेणुत्तं
बिंबाहरि आयन्नसु तुज्झ साहेमि ॥ ८८ ॥ गुरुरयतुरयं आरुहिय आगतोहमिह अप्पकज्जेण । सच्चविओ तुमएवि हु
वियसियकुवल्लयदलच्छीए ॥८९॥ हयकीलणच्छलेणं मयच्छि तं पेच्छिया मए सुइरं । “तुह रूवस्स न तिच्ची पत्ता जरि

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ २० ॥

एणव जलस्स” ॥ ६९० ॥ असमस्सिणेहसवस्सरसवसुफुल्लनयणकमलेहिं । अवलोइओ तए वि हु अहमणिमिसविब्भम-
धराए ॥ ९१ ॥ नाओ तुहाणुराओ मए तए वि हु ममाणुराओवि । “नयणेहिंचिय नज्जइ अहवा हिययट्ठिओ भावो”
॥ ९२ ॥ एत्थंतरम्मि तुमए धम्मिल्ला छोडिऊण कुसुमाइं । खित्ताइं इह पएसे अमिलाणाइं पि तवेलं ॥ ९३ ॥ मं
पेच्छिरीए उवेल्लिऊण केसेहिं विरइया वेणी । आमीलिय नयणाइं मं पेच्छिय तं गया सगिहं ॥ ९४ ॥ नाओ मएवि
भावो जह मह दिन्नो इमाए संकेओ । कहमन्नह अमिलाणाइं एत्थ कुसुमाइं खित्ताइं ॥ ९५ ॥ केसेहिं निसितमंमि
तह नयणनिमीलणेण सुत्तजणे । अहमाहूओत्ति वियड्डयाए नायं मए जेण ॥ ९६ ॥ “वंकभणियाइं कत्तो कत्तो अद्धच्छि-
पेच्छियाइं च । ऊससियंपि मुणिज्जइ छइल्लजणसंकुले गामे” ॥ ९७ ॥ ता रंभोरु तुहत्थे एत्थ अहं आगओ तुह विओगा ।
पज्जलियजलणजालाजलिरंगो इव दिणं गमिउं ॥ ९८ ॥ सा जंपइ चउजामोवि सामि मह वासरो सहसजामो । तुह
विरहविहुरयुस्मायजायतावाय संजाओ ॥ ९९ ॥ अमयमओ पिय तं जं तुह मिलणे मे गओ विरहतावो । “किं सिसिर-
किरणजोण्हाजोगो घम्मं न पसमेइ” ॥ ७०० ॥ इय रम्मपेम्मसवस्समुव्वहंतेहिं तेहिं तत्थेव । रइया रयकीला उल्लसंत-
मयमयणमत्तेहिं ॥ १ ॥ तव्विरइयरयविभ्राणविरयणा हरियहिययवावारा । सा आह कुणसु तह नाह जह सया होइ णे
जोगो ॥ २ ॥ फुट्टइ हिययं दज्जइ सरीरयं जाइ जीवियवंपि । मह तुह विरहे ताहमवि सहं तए आगमिस्सामि ॥ ३ ॥
तन्नेहमोहिओ सो जंपइ ता चलसु तयणु तीउत्तं । गहिउं निययाभरणं इण्हिपि समागमिस्सामि ॥ ४ ॥ ता अप्पसु
नियच्छुरियं जह पेडं दारिउं तमाणेमि । जायइ खडक्खडा तालयस्स उग्घाडणे जेण ॥ ५ ॥ तेणावि खग्गवेणू समप्पिया
गहिय तं गया सावि । नवरं महईवेलाए आगया तस्स पासंमि ॥ ६ ॥ कूवयकंठनिविट्ठस्स ज्झत्ति तीए समप्पिया
छुरिया । “सिद्धे कज्जे को वा परवत्थुं धरइ सक्करम्मि” ॥ ७ ॥ सह अप्पणा इमंपि हु पडु दिन्नं तुह समग्गमाभरणं । इय

धूपपूजायां
धूपसुंदर-
कथा ।

॥ २० ॥

जंपिरी तमप्पइ “किमदेयं वा सिणेहस्स” ॥८॥ संगोवियं समग्गं तेणवि तं बंधिऊण परिहाणे । “इयरंपि सुग्गहीयं कुणंति दक्खा किमु न दव्वं” ॥ ९ ॥ भणियं च तीए पिययम तुह कज्जे मारिऊण दइयंपि । इह पत्तत्ति पयासइ पयईतुच्छत्त-
मित्थीणं ॥ ७१० ॥ तं सोउं सो सुहडो जंपइ एयं तए कयमजुत्तं । जं सो हओ “न गरुया पावपवत्तावि निक्करुणा” ॥ ११ ॥ पररमणीपरिभोगो एक्कं बीयं तु तीए अवहरणं । तइयं धणावहारो तुरियमविणासिनरहणणं ॥ १२ ॥ जइ हं नागच्छंतो ता हुंतं एक्कमवि न पावं मे । आगंतुं चत्तारिवि पावाइं मए कयाइं पिए ॥ १३ ॥ एक्केक्कंपि समत्थं दाणे नेरइयदारुणदुहस्स । चउपावभरकंतो कहिं हयासो गमिस्समहं ॥ १४ ॥ नंदंतु नरा तेच्चिय चिरं न चिंतावि जाण संजाया । पररमणिविसयविसया सीलालंकारकलियाण ॥ १५ ॥ हा हा हयविहिविहिओहमिह महापावमंदिरं तुमए । कहमन्नह मं पत्ता एवंविहपावरिंछोली ॥ १६ ॥ गब्भाउ किं न गलिओ बालो मिलिओ न किं बिडालीए । जमहम-
कज्जपरंपरपत्तं जाओ अणज्जमई ॥ १७ ॥ एवं वेरग्गवसा वागरमाणं निसामिय तयं सा । चिंतइ नूण विरत्तो एसो एरिससमुल्लावा ॥ १८ ॥ ता मह सवत्तिपुत्ताण गोससमयंमि साहिही नूणं । ते मं कयत्थिऊणं दुम्मरणेणं हणिस्संति ॥ १९ ॥ ता किं इमिणा मह रक्खिणण नियवेरिणत्ति चिंतेइ । “खणरायविरायन्तं पायं पयई महिलियाण” ॥ ७२० ॥ पहु मह खमसुत्ति पयंपिऊण खामणमिसेण तप्पाए । उप्पाडिऊण अयडे झडत्ति सुहडं खिवइ पावा ॥ २१ ॥ तिवाणु-
राय(इ)णीविय संज्झव विराइणी दुयं जाया । “खणरायविरायत्ते महिलानहवा किमच्छरियं” ॥ २२ ॥ दट्ठूण भडं अयडे पक्खित्तं हयहरो विचिंतेइ । “धिद्धी धिरत्थु इत्थीण णत्थसत्थेक्कमूलाण” ॥ २३ ॥ उम्मीलिओ वि दूरं इमंमि सुहडे इमाए अणुरातो । सहसच्चिय पणट्ठो पवणाहयसरयजलओव ॥ २४ ॥ जस्संगं अप्पिज्जिइ दिज्जइ दुइयसव्वदव्वंपि । सो वि हु एवं हम्मइ “अहो महेलाण मूढत्तं” ॥ २५ ॥ पंचविहं विसयसुहं उवभुत्तं जेण सह सिणेहेण । तवेलं चिय सोवि हु

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रावुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ २१ ॥

खित्तो पावाए कूवंमि ॥ २६ ॥ ददूण कूडकवडाइं नूण महिलाण पुवरायाणो । मुत्तुं तणंव ताओ झत्ति तवच्चरणमकरिंसु
॥ २७ ॥ पवगिब चलसहावा महिला ल्खव्व जणियसंतावा । उप्पाइयवसणसया कुविंदसालव्व पडिहाइ ॥ २८ ॥ सुंदरवन्ना
आमोयमणहरा सुहरसाय भुज्जंती । महिला किंपागफलावलिब उप्पायइ अणत्थं ॥ २९ ॥ सूरुोवि कयत्थिज्जइ खंडिज्जइ
सव्वयावि रायावि । राहुसिरीए इव महिलयाए कलुसस्सहावाए ॥ ३० ॥ अंतोहुंतुम्मीलियपकामरसपूरिया परिब्भमरी ।
गयणं व कुलं मइलइ महिला नवमेहमालव्व ॥ ३१ ॥ दुहन्ता कुडिलगई परमपियविवज्जिया सुइविहूणा । कस्स न भय-
मुप्पायइ नियंबिणी सप्पिणीव्व सया ॥ ३२ ॥ कज्जम्मि जाण कीरइ धणज्जणं चोरियाइ काऊण । ताणेरिसं सरूवं ता
“पज्जत्तं ममित्थीहि” ॥ ३३ ॥ असरिसवेरग्गविभावणावमुल्लसियगुरुतरविवेए । अस्सावहारपुरिसे एवं परिभावयंतम्मि
॥ ३४ ॥ पविसिय गिहंमि गहिऊण हलकुसिं पइगिहे खणइ खत्तं । “किमकज्जं वा वज्जियमज्जायाणं महिलियाण” ॥ ३५ ॥
गंतुं मज्झे धाहावए जह धाह धाह धाहत्ति । पविसिय चोरेणं ठक्कुरो हओ नीयमाभरणं ॥ ३६ ॥ तं सोऊणं सहसा
ससंभमा साउहा सपाइक्का । ठक्कुरपुत्ता परिवेढयन्ति गिहमुग्गहक्करवा ॥ ३७ ॥ तुरयकुडिप्पमुहाइं ठाणाइं नियंति केवि
दीवकरा । अन्ने उ अंनिसंति य चोरपयं पयइनिउणनरा ॥ ३८ ॥ ददूण गिहावेढं हयावहारी विचिंतए एवं । मह संक-
डमावडियं छुट्ठिस्सं ता कहं इण्हि ॥ ३९ ॥ न तरेमि विणिगंतुं भडपडलावेडियाओ भवणाओ । दुक्कम्मभरावरिओ
नरयट्ठाणाउ जीवोव्व ॥ ४० ॥ जइ देमि गिहा बाहिं निग्गयसाहाए झत्ति झंपमहं । ता वियडे अयडम्मि पडामि सुहडो-
व्व निव्वभन्तं ॥ ४१ ॥ नूणं मह हयहरणप्पवेसभवपावपडलविडविस्स । इह मरणेणं कुसुमं फलं तु होही नरयपडणं
॥ ४२ ॥ मं ददुमिमे गोसे चोरोत्ति विचिन्तिउं हणिस्सन्ति । ता तमतिरोहिओ वडठिओवि अप्पं पयासेमि ॥ ४३ ॥
इय चिन्तिय तेणुत्ता ते तुम्हाणं कहेमि सवंपि । वुत्तंतं मं पच्छा मुंचेज्जहवा हणेज्जाह ॥ ४४ ॥ तं सोउं तेहुत्तं इहट्ठि-

धूपपूजायां
धूपसुंदर-
कथा

॥ २१ ॥

धूपपूजायां
धूपसुंदर-
कथा।

ओवि हु कहेसु तो तेण । कहिओ आमूलाओ नियओ तीए य वुत्तंतो ॥ ४५ ॥ भणियं च जइ न पत्तियह मज्झ ता
नियह कूवयस्संतो । सुहडं धणुतूणीराभरणजुयं संपयं चेव ॥ ४६ ॥ तं सोउं पक्खित्तो तेहिं वरत्ताए दीवओ कूवे ।
सच्चविओ य तरंतो जहकहियगुणो मओ सुहडो ॥ ४७ ॥ कुवाओ तमायड्डिय गहिऊणाभरणमुज्झियं मडयं । “निज्जीवेण
वि कज्जं जेण तयं धिप्पए नन्नं” ॥ ४८ ॥ एयविरहं न सत्ता सहित्तं विचित्तित्तं पुत्तेहिं । लहुमायावि हु बद्धा
सद्धिं मडएण कुविएहिं ॥ ४९ ॥ तं पि विणिग्गहणिज्जो चोरोत्ति पयंपिओ हयहरो वि । “पावन्ति चोरजारा जइ वा किं
कत्थई पूयं ॥ ७५० ॥ नवरं तुमए सबंपि साहियं तेण तं विमुक्कोसि । “उवयारओ सदोसोवि मुच्चए जेणिमा नीई”
॥ ५१ ॥ मडयं चडावियं सूलियाए निद्धाडिया य लहुजणणी । “रोसो न मयरिउम्मिवि गच्छइ किं पुण जियंतंमि” ॥ ५२ ॥
धरिऊण सबहुमाणं दिणत्तिगं अस्सहरयपुरिसंपि । पिउमयकिच्चं काउं सम्माणेउं विसज्जन्ति ॥ ५३ ॥ अप्पं संपइ
जायंव जममुहा निग्गयंव मन्नंतो । वच्चंतो नियगामे पत्तो सो इह अरंनंमि ॥ ५४ ॥ पेच्छइ उस्सग्गठियं मुणिमेगं
मुत्तिमंतमिव धम्मं । पच्चक्खं पसमंपिव संकेयंपिव मुणिगुणाण ॥ ५५ ॥ पुवुप्पन्नविराओ अवलोइय सो मुणिं ठिओ
हेट्ठो(हिट्ठो?) । दारिदभरक्कंतो नरोव संपत्तरयणनिही ॥ ५६ ॥ तो तं पणमइ तच्चलणकमलमिलमाणभालफलओ सो । सहलत्तं
कलयंतो सजम्मजीवियनरत्ताणं ॥ ५७ ॥ आबद्धपाणिपउमो पुरओ उवविसिय जंपए एवं । रत्ते अमाणुसे पहु किं तवह
तवंति मह कहह ॥ ५८ ॥ पारियकाउस्सग्गो उवविसिउं तस्स साहए साहु । खेयरमुणी महायस अहमिह आयाविउं
पत्तो ॥ ५९ ॥ जेणमिह तिरियविरइयकयत्थणा हणइ मज्झ दुक्कम्मं । वेज्जोवइट्ठपरमोसहं व रोयं समग्गंपि ॥ ७६० ॥
तेणुत्तं पहु मह कहह कं पि धम्मं गिहत्थजणजोगं । “तीरइ निवाहेउं जो सो उक्खिप्पए भारो” ॥ ६१ ॥ आह मुणी
गिहिणोवि हु जायइ धम्मो जिणिंदपूयाए । सा होइ अट्ठभेया अट्ठमयट्ठाणनिम्महणी ॥ ६२ ॥ नेवज्जधूवदीवयअक्खय-

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ २२ ॥

फलसलिलवासकुसुमेहिं । पूयंति जे जिणं ते पुज्जा तिजयेस्स वि हवन्ति ॥ ६३ ॥ कीरंति एक्केक्कावि हरइ गुरुरोगसो-
गदोगच्चे । किं पुण सव्वाओ वि हु विरइज्जंतीउ भत्तीए ॥ ६४ ॥ सव्वाओवि असत्तो काउं जइ कुणइ धूवपूयंपि । ता
धूवेण समं सो धुवं नियं दहइ दुक्कम्मं ॥ ६५ ॥ ढज्झंतधूवभवधूमधूविओ इव सुयंधसवंगो । जायइ भवंतरेवि हु जीवो
उक्खिवियजिणधूवो ॥ ६६ ॥ तं सोउं सो जंपइ पहु नूणमहं कयत्थजणपढमो । मरणंतवसणविणिग्गएण तं जेण संपत्तो
॥ ६७ ॥ इय भणिय पणमिय मुणी लग्गो सो निययगाममग्गमि । गच्छंतो संपत्तो गामे सिरिसारनामंमि ॥ ६८ ॥
तंमि तवणीयकलसं नहग्गलगं जिणालयं नियइ । सिंगग्गसंगिनवतरणिमंडलं उदयसेलंव ॥ ६९ ॥ तं दट्ठुं सो चित्तइ
दिणदुगसंबलयदविणकीएण । धूवेण जिणं पूइय पुन्नप्पसरं समज्जेमि ॥ ७० ॥ इय परिभाविय गहिउं कप्पूरागरुवि-
मिस्सियं धूवं । पत्तो जिणालए पेच्छिउं जिणं हरिसिओ दूरं ॥ ७१ ॥ उल्लसिरमणो संदंतलोयणो वित्थरन्तरोमंचो ।
पसरंतभत्तिभावो धूवं उक्खिवइ जगगुरुणो ॥ ७२ ॥ तयणु मणुयत्तनियजम्मजीवियव्वाण सहलयं कलिउं । वारं वारं
भूमिलियभालमभिनमइ जिणनाहं ॥ ७३ ॥ संचलिओ नियगामे पत्तो य तहिं पमुक्कअन्नाओ । तम्मि वि भवम्मि रिद्धी
जाया से धम्ममाहप्पा ॥ ७४ ॥ संपत्तआउअंतो जातो अमरो सणंकुमारे से । नायं च धूवपूयाए अत्तणो तेणममरत्तं
॥ ७५ ॥ परिभावइ य जहाहं करेमि जिणमंदिरं जमिक्खेउं । जायइ भवंतरे मे बोहिति विचिंतिउं तेण ॥ ७६ ॥
रइयं जुगाइजिणजुयमुत्तुंगं जिणहरं कणयकलसं । दुट्ठदमयाभिहसुरो आइट्ठो तस्स रक्खत्थं ॥ ७७ ॥ जिणचवण-
जम्मदिक्खाकेवलनिव्वाणगमणदिवसेसु । समगममरेसरेणं भत्तीए महुसवे कुणइ ॥ ७८ ॥ इय समुवज्जियसुकओ
भुत्तं सुरलोयसंभवसुहाइं । चविय तओ इह जाओ एसो हं तुम्ह पच्चक्खो ॥ ७९ ॥ ता एयं जिणमंदिरमवल्लोइय
सुमरिया मए जाई । जह जिणधूवुक्खेवो जाओ कल्लणहेऊ मे ॥ ८० ॥ तं सोऊणं मंडलियमंतिणो बिंति जयइ जिण-

धूपपूजायां
धूपसुंदर-
कथा

॥ २२ ॥

धूपपूजायां
धूपसुंदर-
कथा

धम्मो । अप्पस्स वि जस्स कयस्स हुंति महईओ रिद्धीओ ॥ ८१ ॥ तयणु कुमारेण रिसहस्स सामिणो भत्तिपुल्ल-
कलिण्ण । पणमिय विहिओ अट्ठाहियामहो गरुयरिद्धीए ॥ ८२ ॥ तो चउरंगचमूचयसंचाराऊरियक्खमावीढो । अब्भंलिह-
धवलहरे संपत्तो नियपुरे कुमरो ॥ ८३ ॥ ऊसियसियद्धयोहे निम्मियमंचाईमंचकयसोहे । पविसइ पुरम्मि कुमरो विल-
सिरसिंगारजियअमरो ॥ ८४ ॥ गंतुं सहाए पणओ पिउणो पयसयदलं तओ तेण । आलिंगिऊण कुसलप्पउत्तिमापु-
च्छिओ पुत्तो ॥ ८५ ॥ सो आह ताय मह तुह पसायसुहियस्स सबया कुसलं । इय जंपिय उवणीया पिउपुरओ तेण
सत्तुसिरी ॥ ८६ ॥ पणओ सत्तुसुओवि हु तस्स कओ राइणावि सम्माणो । “पणयम्मि वच्छलच्चिय पट्टुणो सत्तुम्मिवि
निएव” ॥ ८७ ॥ पणयाए वहुयाए भव पुत्तवइत्ति जंपियं रत्ता । “भणइ परे वि हियं चिय गरुओ किं माणुसे न निए”
॥ ८८ ॥ कइवयदिणावसाणे रज्जम्मि निवेसिओ सुओ रत्ता । पुत्तं मुत्तं नन्नस्स होइ सबस्ससामित्तं ॥ ८९ ॥ सुवि-
हियसूरिसयासे गहिया दिक्खा निवेण रिद्धीए । “इहलोइयं जहा तह परभवकज्जंपि कुणइ गुरू” ॥ ९० ॥ चरिय तवं
उप्पाडिय केवलनाणं निवो सिवं पत्तो । “किमसज्झं वा दुक्करतवस्स भावेण विहियस्स” ॥ ९१ ॥ नवनिवईवि नयपरो
पयाउ पालइ अभिइवइ दुट्ठे । वंदइ गुरूणो पूयइ जिणेसरे मन्नए मित्ते ॥ ९२ ॥ साहम्मियवच्छलं कुणइ पयट्ठावए
अमारीओ । किं बहुणा तित्थसमुन्नईकरं कुणइ सबंपि ॥ ९३ ॥ तप्पुन्नपगरिसागरिसियव आगंतुमवणिवइणो तं ।
सेवंति सबदेसुब्भवावि गुरूभत्तिराएण ॥ ९४ ॥ तेणावलोइओ जो मन्नइ सो अप्पगममयसित्तं व । आभासिओ पुणो
तिहुयणेक्करज्जाहिसित्तं व ॥ ९५ ॥ एवं बहुकालं पालिऊणमकलंकरज्जमवणिवई । कुमरं पयावसारामिहं ठवेऊण रज्जंमि
॥ ९६ ॥ निगंथगुरुसमीवे दिक्खं घेतुं कयुग्गतवचरणो । उप्पन्नविमलनाणो संपत्तो मोक्खमक्खेवा ॥ ९७ ॥ जह

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ २३ ॥

धूवुभभवपूया जाया एयस्स मोक्खसोक्खकए । तह अन्नस्सवि जायइ ता भव्वा तीए उज्जमह ॥ ९८ ॥ धूपपूजा ॥
 ५ ५ ५ ५ ५ ५ एसो हु धूवपूयाए साहिओ धूवसुंदरो इहिं । भुवणप्पईवनिवइं दीवयपूयाए निसुणेह ॥ ९९ ॥ ५ ५ ५ ५ ५ ५
 उल्लसियरायसिरिकरणसुंदरं ललियविलयपरिकलियं । अत्थि सरगामजुयं गीयंपिव भुवणविजयपुरं ॥ १०० ॥
 कलहसियरायभवणं कलहसियविरायमाणसुयणं जं । कलहरियरहियसलिलं कलहरियउत्तप्पहीणजणं ॥ १ ॥ पूरिय
 पउरपयासो सवुत्तमनिद्धपत्तआहारो । दीवोव महीनाहो कुलप्पईवोत्ति तत्थत्थि ॥ २ ॥ सरहोवि विउलवच्छो
 विदीहबाहोवि विलसिरगओवि । सारंगोवि न तिरिओ उत्तमपुरिसोच्चिय सया जो ॥ ३ ॥ गोरीवि अभीमपिया
 सायरतणयावि अजडसयणसिया । तस्सत्थि धारिणिपिया सईवि जाणिंदपियभोया ॥ ४ ॥ तीए समत्थि परिपंथि-
 हत्थिकुलदलणकेसरिकिसोरो । भुवणप्पईवनामो कुमरो गिरिसोव गुरुक्कित्ती ॥ ५ ॥ अप्पवउदयजुत्तो अब्भ-
 सिअकलोय बीयचंदोव । जो नवरति(वि)व पुवाभासी जयजणसुहकरो य ॥ ६ ॥ समवयवेसालंकारसारसामंतमंति-
 पुत्तेहि । सद्धि बंधुरकीलं कुबंतो गमइ कालं सो ॥ ७ ॥ कइयावि कसिणअट्टमिनिसीहसमयंमि जग्गए जाव ।
 तो आयन्नइ आउज्जतालगीयस्सरं कुमरो ॥ ८ ॥ तस्सरमणुसरमाणो दिट्ठिं पक्खिवइ मुक्कपल्लंको । नियइ दुवालसमुयं
 पेच्छणयपरं नरं तिसिरं ॥ ९ ॥ दोहिं करेहिं पडहं दोहिं मुइंगं च दोहि तालाओ । वीणं दोहिं वंसं च दोहिं हत्थेहिं
 वायंतं ॥ १० ॥ नट्टवसुबेल्लिरभुयकरजुयविन्नाससंचरं तत्थ । घणमणिकुंडलमंडियमहिलाएक्काणणसणाहं ॥ ११ ॥
 वीएण मणोमयरायवासणावसविमुक्कप्फुक्केण । रमणीमुहेण वंसं वायंतेणं विलसमाणं ॥ १२ ॥ तइएण
 महुसरगाममुच्छणाजणियसवणजुयसोक्खं । उग्गायंतं गीयं मज्झट्टियपुरिसवयणेण ॥ १३ ॥ 'कुलयं' ॥ इय अच्च-
 भुयअदिट्टपुवपेच्छणयपेच्छणुत्तालो । वंचित्तु पमत्ते अंगरक्खभडचेडपमुहनरे ॥ १४ ॥ नवमेहडंबरवरपावरणालक्खि-

दीपक-
पूजायां
भुवन-
प्रदीपकथा

॥ २३ ॥

दीपक-
पूजायां
भुवन-
प्रदीपकथा

यंगसंठाणो । करयलकयकरवालो वासहरा निग्गओ कुमरो ॥ १५ ॥ 'जुयलं' ॥ तं पेच्छंतो गच्छइ उच्छलियअतुच्छको-
उउक्करिसो । चिन्तइ य अहो एयं भुवणंतवहिभवं किंपि ॥ १६ ॥ जं कुच्चकलियमेगं नरस्स मुहमित्थियाण पुण दोन्नि ।
गेवेज्जयमणिकुंडलभालट्टियतिलयकलियाइं ॥ १७ ॥ सुवन्ति इह भविस्सासत्थेसु दसाणणत्तिमुंडादो । नवरं ते
पुरिसच्चिय एसो नरनारिरूवो उ ॥ १८ ॥ इय चिंतंतो पत्तो रायंगरुहो वि तस्समीवंमि । सोवि हु पच्छाहुत्तं गच्छइ
करणक्कमच्छउमा ॥ १९ ॥ थोवप्पसरप्पउरावसरणकरणक्कमे कुणंतेण । तेणाहियहियहियओ दूरं नीओ नरिंदसुओ
॥ ८२० ॥ तहंसिय अवरावरविन्नाणालोयवियलियविवेओ । न मुणइ नयरं दूरे न गणइ मग्गस्समलवंपि ॥ २१ ॥
एत्थंतरम्मि सहसा सो नट्टवरो सरूवमुज्जेउं । उक्खायनिसायअसी जमोव जाओ भडो कुद्धो ॥ २२ ॥ जंपइ रे
दुट्ठाहम कुमार तं सरसु देवयं इट्ठं । मा भणसु पमत्तो हं विणासिओ केणइ छलेण ॥ २३ ॥ तं निसुणिउं कुमारो
चिन्तइ सुरअसुरनहयरन्नयरो । कोवि इमो मह वेरी छलेण जेणाणिओहमिह ॥ २४ ॥ वीसासिऊणमेवं जो जायइ
घायगो न मोत्तवो । हंतवोच्चिय भन्नइ सो नूणं नीइसत्थेसु ॥ २५ ॥ इय चिन्तिय आयड्वियखग्गो तं हक्कए निवसु-
ओवि । "निक्करिओ इयरोवि हु रूसइ किं खत्तिओ नेव" ॥ २६ ॥ दोन्निवि वग्गणकरणक्कमभमणुब्भामियासिदुद्धरिसा ।
निप्पसरप्पहरपरा जुज्झंति समच्छरुक्करिसा ॥ २७ ॥ दंसेउं सिरघायं मोत्तुं पाएसु दिति मुनईओ (?) । निविसिय उच्छ-
लियावसरिउं च दोन्नि वियवन्ति ॥ २८ ॥ नेगोवि जयं पावइ दोण्हवि सत्थस्समप्पवीणत्ता । न समिज्जंति य जं ते
निच्चं चिय विजयसत्थसमा ॥ २९ ॥ अन्नोन्नखग्गसंघट्टभग्गवारंगखुडियअसिफलया । करकयतिक्खग्गखग्गवेणुणो ते
पुणो मिडिया ॥ ८३० ॥ मुक्कासिधेणुघायं वंचइ करणक्कमेण कुमरो से । रोसेण कुमरछुरियापहारलक्खं हरइ सोवि
॥ ३१ ॥ अवरोप्परवामकरप्पहारपडियासिधेणुणो दोवि । जुज्झंति निजुज्जेणं केसग्गहबाहुबंधेहिं ॥ ३२ ॥ निहयकेस-

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ २४ ॥

गहबाहुबंधकरघायजज्जरियदेहा । निवडंत्ति दडत्ति झडत्ति उट्टिउं पुणरवि भिडन्ति ॥ ३३ ॥ निट्टुरकुमारपायप्पहारव-
च्छय(त्थ)लताडिओ सुहडो । पडिओ धसत्ति घुम्मन्तनेत्तओ भूमिवट्टम्मि ॥ ३४ ॥ तो तब्भुयजुय उवरिं दाउं नियपयदुगं
धरियकेसो । घेतुं धराए छुरियं जा तस्स सिरं लुणइ कुमरो ॥ ३५ ॥ ता तेण नमो अरिहंताणं इच्चाइं पंचपरमेट्ठी ।
सरिया असारसंसारसायरुत्तारणतरिख ॥ ३६ ॥ तं सोउं हा हा हा साहम्मियमारणे महापावं । काऊण नूण नरए
उप्पयंतो दुहोहेहं ॥ ३७ ॥ इय जंपिरेण खामिय मुक्को सहसत्ति निवसुएण भडो । “अइकुवियाणवि करुणा जायइ जइ वा
कुलीणाण” ॥ ३८ ॥ सो चिंतइ नररयणं एसो जमणेण मारणपरोवि । मुक्को वेरीवि अहं “गुरूण गणणा न रिउकीडे ॥ ३९ ॥
होइ न सिरम्मि सिंगं अहमाणं उत्तमाणं य नराण । किंतु अकज्जे कज्जे य ते मुणिज्जंति वट्टंता” ॥ ४० ॥ एएण जीवियव्वं
दाउं दिन्नं समग्गमवि मग्गं । जायइ रज्जाईणं जं जीवंताणमुवओगो ॥ ४१ ॥ भुवणम्मिवि उवयारो न पाणदाणाओ सम-
हिओ अत्थि । पच्चुवयरिउमसत्तेहिं निण्हविज्जइ न सो जेण ॥ ४२ ॥ थेवंपि हु उवयारं मंनइ पुरिसो गिरिंदगरुययरं ।
निण्हवइ खलप्पयई पुरिसो उवयारलक्खंपि ॥ ४३ ॥ ता आराहेयव्वो एस मए देवयव्व सुगुरुव्व । जणउव्व जाव जीवं
परोवयारप्पसत्तमणो ॥ ४४ ॥ इय चिन्तिय उट्टेउं पणमिय तं पायपउमजुयलगो । जंपइ मह अवराहं खमसु महा-
यस कयपसाओ ॥ ४५ ॥ जइ न तुमं मुंचंतो संपइ मं पुरिसरयण हुंतो हं । ता मंसगिद्धगिद्धाइयाण भक्खं छुहंताण
॥ ४६ ॥ इण्हि तं चिय सरणं आमरणं तंपि मज्झ वज्झोवि । जमहं न हओ तुमए करुणारसपूरियमणेण ॥ ४७ ॥ दट्टुं
तं खामंतं जंपइ कुमरो अहो महासत्त । तुमए विवेइणावि हु किमिममवेरेवि पारद्धं ॥ ४८ ॥ जो जिणमए थिरमणो
सुमरइ मरणंमि पंचपरमिट्ठिं । तस्सेयारिसनिग्घणकम्मं जायइ अहो चोज्जं ॥ ४९ ॥ जइ मह कहणिज्जमिणं सुपुरिस
उवविसिय कहसु ता एत्थ । अहव अकहणिज्जं ता अच्छउ हियइच्छियं कुणसु ॥ ५० ॥ सो भणइ जस्स तणया पाणावि

दीपक-
पूजायां
भुवन-
प्रदीपकथा

॥ २४ ॥

हु तस्स किं न कहणिज्जं । इय जंपिय उवविसिउं सो कहइ निविट्ठकुमरस्स ॥ ५१ ॥ गुरुनयपत्तछाओ घणकसिणसुतार-
सारसरलक्खो । सुयणोव भरहखेत्ते वेयड्डो नाम अत्थि गिरी ॥ ५२ ॥ तम्मि एफुरंतमणिगणरहनेउरचक्कवालरमणि-
यणं । रयणमयं अत्थि पुरं रहनेउरचक्कवालंति ॥ ५३ ॥ दरियरिउवारवारणगणकुंभवियारणेक्कखरनहरो । तं परि-
पालइ सिरिरयणसेहरो नहयराहिवई ॥ ५४ ॥ तस्सत्थि सबसुद्धंतकंतकंताहिवत्तअहिसित्ता । हारस्सिरिब हारस्सिरी
पिया वित्तमुत्तगुणा ॥ ५५ ॥ अन्नोन्नरम्मपेम्माणुबंधवद्धंतमणपमोयाण । पंचविहविसयसत्ताण ताण कालो अइक्कमइ
॥ ५६ ॥ कइयावि हु रयणविमाणसेणिसिंगारियंबरो चलिओ । नंदीसरंमि सिद्धप्पडिमानमणाय खयरिंदो ॥ ५७ ॥
दाहिणिदिसिगयणेणं गच्छंतो नियइ सम्मुहमहीए । मणिमंदिरपुरवाहिं निगच्छंतं जणसमूहं ॥ ५८ ॥ तस्संतोनि-
तरलद्धयालिझणहणिरकिंकिणिगणाए । सिवियाए समारूढं अवलोयइ तरुणनररयणं ॥ ५९ ॥ दितं किवणवणीमग-
जायगदीणंधदुत्थलोयाण । वंछाविच्छेयकरं दाणे मणिकणयरित्थाइं ॥ ६० ॥ अवलोयंतं पुरतो लउडारसरासए
सपेच्छणए । उववूहिज्जंतं जय जीव तं चिरं इय जणासीहिं ॥ ६१ ॥ दाहिणपासमहासणनिविट्ठजणएण संसुवयणेण ।
समलंकियमप्पंतेण दाणक्कज्जम्मि कणयाई ॥ ६२ ॥ वामट्टाणपरिट्ठियगरिट्ठविट्ठरनिविट्ठजणणीए । कयलवणुत्तारणयं
सोयंसुयतंबिरच्छीए ॥ ६३ ॥ वज्जंतढक्कदुक्काभेरीभंकारभरियभुवणयलं । रम्मारासुज्जाणंमि गुरुयरिद्धीए संपत्तं ॥ ६४ ॥
॥ कुलयं ॥ को एस किं करिस्सइ इह इय बुद्धीए नहयरवईवि । तत्थुत्तिन्नो कंचणकमलगयं केवलं नियइ ॥ ६५ ॥
पालियसमगसत्तं विरइयल्लजीवकायरक्खंपि । सोमंपि मित्तरूवं सुरयपुरं बंभयारिंपि ॥ ६६ ॥ दट्ठुण केवलं नहयरे-
सरो भत्तिनिब्भरो नमइ । “धम्मत्थं पवित्तीओ जइ वा धम्मीण होन्ति सया” ॥ ६७ ॥ सिवियाए समुत्तिन्नो पणयफहू
माइपिअणुन्नातो । परिहरियालंकारो संवेगुल्लसियरोमंचो ॥ ६८ ॥ सो विज्जाहरवइणो अवलोयंतस्स भत्तिभरिय-

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ २५ ॥

मणो । समयविहिणा मुणिंदेण दिक्खिओ विहिय सिरलोयं ॥ ६९ ॥ गहणासेवणसिक्खाकहणंते नह्यरेसरो नमिउं ।
पुच्छइ किं वेरगं जमिमो मुणिनाह पवइओ ॥ ८७० ॥ आह पहू आयन्नसु खयरहिव अत्थि एत्थ नयरम्मि । अस-
मप्पयावसारो पयावसारोत्ति नरनाहो ॥ ७१ ॥ अवरं च एत्थ निवसंति दोन्नि दुन्नयपराओ महिलाओ । एक्काए पवं-
चमई नामं बीयाए पुण कुमई ॥ ७२ ॥ भज्जावईण विहडियपेम्माण कुणंति पेम्मसंधाणं । अच्चंतसुघडियाणवि तं
विहडावंति अन्नेसिं ॥ ७३ ॥ उच्चाडणविट्टेसणथंभयवसियरणमारणाईसु । पावकिरियासु सययं वट्टंति पमोयपुंनाउ
॥ ७४ ॥ कइयावि दोवि दुन्नयजायत्थारूढगरुयगवाओ । रिउसेणाओव सज्जियसराओ विवणीए मिलियाओ ॥ ७५ ॥
अन्नोन्ननिण्हवुप्पंनमंतुवसविहियगुरुविवायाणं । ताण सयासे मिलिओ बहुओ लोगो कुतूहलओ ॥ ७६ ॥ महफाडियं न
सक्को वि संद्धेउं तरइ इइ कुमइभणिये । इयराह तहा सीवेमि जह न से होइ संधीवि ॥ ७७ ॥ इय विवयंतीओ जणेण
ताओ नीयातो मंतिसंनिज्झे । विन्नायवइयरेणं तेणवि नरवइसमीवंमि ॥ ७८ ॥ नाऊण तप्पइन्नं राया विम्हिअमणो
पयंपेइ । कुणह इममिक्कवारं एयत्थे तुम्हमभउत्ति ॥ ७९ ॥ कुमई जंपइ दिणपंचगस्स मज्झंमि फोडिइस्सामि । सीवि-
स्सामि तमियराह पहु अहोरत्तमज्झेवि ॥ ८० ॥ इय विरइयप्पइन्नाओ ताओ नमिउं निवं दुयं दोवि । कयजणअच्छरि-
याओ पत्ताओ नियनियगिहेसु ॥ ८१ ॥ कुमईए चित्तिअं एत्थ अत्थि सुप(व)सुत्थिवित्थारो । नामेण अत्थसारो गरिट्ठ-
सिद्धी सरलदिद्धी ॥ ८२ ॥ नाययरो बहुलाहो वि कित्तिसारोत्ति अत्थि तस्स सुओ । उज्जलमाणसमुत्तिअपत्तसंतावले-
सोवि ॥ ८३ ॥ नवजुवणुल्लणाए अभग्गसोहग्गसंगयंगीए । कंतिमइए पियाए सह विलसइ सो सया सुहिओ ॥ ८४ ॥
नवरं कंतिमईए सरूवसिंगारगरुयगवाए । आलवियाए वि अहं न नया संभासियाविय नो ॥ ८५ ॥ ता तप्पइणो
कीएवि कुरंगनयणीए सह विहिय घडणं । साहेमि निवस्स जहा तीए महंतं दुहं होइ ॥ ८६ ॥ तप्पइणो पुण अयसो

दीपक-
पूजायां
शुवन-
प्रदीपकथा

॥ २५ ॥

दीपक-
पूजायां
भुवन-
प्रदीपकथा

संतोसो मञ्जु निवङ्गो दविणं । “अहव कयावन्नाणं अणत्थउप्पायणं सस्सं” ॥ ८७ ॥ ता एत्थ धणिधणोसरत्तणया तरुणी धणावली नामा । असई सयंपि ता तग्घडणं सह तेण काहामि ॥ ८८ ॥ इय चिंतिय तवेलं पत्ता सा कित्ति-
सारसन्नेज्जे । काऊण तमेगंते जंपए महुरक्खरगिराए ॥ ८९ ॥ सुहय तुमं पइ जंपेमि किंपि मा कुणसु पत्थणं विहलं ।
सो जंपइ ता संपइ साहसु सा भणइ निसुणेषु ॥ ८९० ॥ इह अत्थि धणोसरसेट्ठिणो सुया कमलकोमलोरुजुया ।
नियरूवनिजियरई नामेण धणावली बाला ॥ ९१ ॥ नियभवणमत्तवारणगयाए तीए कयाइ सच्चविओ । आगछन्तो तं
रम्मरूवजियरइवइविलासो ॥ ९२ ॥ सिंगारसस्ससमवयवयस्ससंदोहसोहियउवंतो । उत्तमउत्तुंगतुरंगवग्गणक्खणिय-
मणवित्ती ॥ ९३ ॥ अनिलंदोलणविलसिरसिहिपिच्छच्छत्तजायछायसुहो । हेलाए कीलयंतो जंपाडंपाहिं हयरयणं ॥ ९४ ॥
चलसरलधवललीलालसलोयणजुयलबहलजोण्हाए । परमामयवुट्ठिंपिव विकिरंतो सैमहरं तुरए ॥ ९५ ॥ सियसोणसाम-
मणिमयभूसणसयभूरिकिरणनियरेहिं । रयणाभरणेहिं पिव अलंकरंतो तुरंगंपि ॥ ९६ ॥ दद्धूण तुमं उम्मीलमाणनव-
नेहनिद्धनयणेहिं । आदिट्ठिपहं अवलोइओ बहूं तीए अवियण्हं ॥ ९७ ॥ सोहग्गरयणरोहण संमोहणमयणबाणसम
तुमए । दिट्ठिपहाइकंते वियंभिओ तीए विरहभरो ॥ ९८ ॥ चिंतंमि तुमं चित्ते तुहागिई तुज्झ नाममालवणे । सिविणे
समागमो ते सा बाला तम्मई जाया ॥ ९९ ॥ विरहानलजालावलिजलिरसरीराए तीए पारद्धो । संसुवयंसीहिं सयं
सययं सिसिरोवयारभरो ॥ १०० ॥ सतडक्कारं हारे तणुतावेणं फुडंति मुत्ताओ । सिमिसिमिय सुसन्तिच्चिय नवकुव-
लयनालमालाओ ॥ १ ॥ घणचंदणागुरुरसछडाउ छंकारपुव्वगं तीसे । तच्चंगसंगमेणं लगंतीओ वि परिसुसंति ॥ २ ॥
गोसावयस्सायस्संदिसाहिसेणिव्व मुयइ अंसूणि । भंजइ देहं जिंभाउओ भयइ परिभमइ एमेव ॥ ३ ॥ एवमवत्था सा

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ २६ ॥

तस्सहीहिं मह दंसिया तओ तीए । तं साहियं समगंपि तो अहं एत्थ संपत्ता ॥ ४ ॥ ता सुहय तुज्झ संगम-
आसच्चिय धरइ जीवियं तीए । अवहीरियाए तुमए मरणंचिय जेणिमं भणियं ॥ ५ ॥ “दूरयरदेसपरिसंठियस्स पिय-
संगमं वहंतस्स । आसाबंधोच्चिय माणुसस्स परिरक्खए जीयं” ॥ ६ ॥ ता मह उवरोहेणं अहवा तज्जीवियवकरुणाए ।
तं सरसु एकवारं दक्खिन्नदयाओ जं गरुए ॥ ७ ॥ इय जंपंती दंतगधरियपंचंगुलं नमिय तस्स । तच्चरणमिलिय-
भाला ठिया चिरं चिंतइ तओ सो ॥ ८ ॥ अकलंकं मज्झ कुलं सावि पुणो पोढराइणी बाला । एसा वि विणयपणया
किं काउं जुज्जए ता मे ॥ ९ ॥ एगत्थ अकज्जभयं अन्नत्तो मरइ सा मए मुक्का । पासदुगेवि बलग्गइ डमरुयगंठिब
मज्झ मणं ॥ ११० ॥ जं होयबं तं होउ ताणुरत्ताए विरहविहुराए । काहं समीहियमहं इय चित्तेउं तओ तेण ॥ ११॥
वज्जेउं मज्जायं मयलेउं निम्मलं जसप्पसरं । मोत्तुं कुलाहिमाणं अणुसरिऊणं कुसीलत्तं ॥ १२ ॥ चइऊणं सच्चरियं
अंगीकाऊण नरयगइगमणं । उज्जेउं सद्धम्मं भणियं जं भणसि तं काहं ॥ १३ ॥ तं सोउं तीउत्तं एसो विहिओ महा-
पसाओ मे । इय जंपिऊण पत्ता पासंमि धणावलीए सा ॥ १४ ॥ तं पइरिके काउं पयंपए सुयणु सुणसु वयणं मे ।
सा आह अंब जं किंपि जंपियबं तयं भणसु ॥ १५ ॥ तीयुत्तमत्थि इह अत्थिसत्थपविइन्नअत्थिवित्थारो । नामेण
कित्तिसारो पुत्तो वणिअत्थसारस्स ॥ १६ ॥ रूवेण मयणमुत्तिं कंतीए कलावइं मईए गुरुं । सक्कं सिंगारेणं जो
जिणइ धणेण धणयंपि ॥ १७ ॥ तेण तुमं सच्चविया नियमंदिरमत्तवारणासीणा । लीलालोयणलोयणजोण्हाभरपूरिय-
दियंता ॥ १८ ॥ दिट्ठाएवि सुयणु तए मयणसरप्पयरपहरजज्जरिओ । भवणम्मि कहंकहमवि संपत्तो सो अणुप्पहसो
॥ १९ ॥ तं विरहज्जरविहुरं दहइ जलदावि जलणजालव । संताविंति ससिकरा खयरंगारव तस्स तणुं ॥ १२० ॥
एमेव हसइ बालोव नियइ सुन्नं पिसायगहिउव । नच्चइ गायइ पलवइ मइरामयमत्तमुत्तिव ॥ २१ ॥ सबप्पणा पराय-

दीपक-
पूजायां
भुवन-
प्रदीपकथा

॥ २६ ॥

तत्माणसो दंसिओ वयस्सेण । मह कहिऊणं तुह दंसणाणुरायाओ वियलत्तं ॥ २२ ॥ तो तं संठावेउं तुह पासे हं समा-
 गया सुब्भु । ता नररयणस्स तुमं समीहियं कुणसु पसिऊण ॥ २३ ॥ तं सोउं सा असई नियमणऊम्मीलमाणउ-
 म्माया । जंपइ तुहोवरोहा अंब अकज्जंपि हु करिस्सं ॥ २४ ॥ तो तीए जंपियं पुबगोउरहारदेसदेवउले । आगंतुं
 मिलियवं निसाए पहरस्स तस्स तए ॥ २५ ॥ एवं निसुय तदुत्तीए तीए गंतूण कित्तिसारंते । नीओ देवउले सो धणा-
 वलीविय समणुपत्ता ॥ २६ ॥ कुमईए जंपियं इह पविसिय मज्झम्मि रमह सच्छंदं । लोयागमणालोयणपरा दुवारे-
 ह्मच्छिस्सं ॥ २७ ॥ तो मज्झपविट्ठेसुं तेसुकंठाविसंटुलंगेसु । तीए कहियं आरक्खियस्स गंतूण तं ज्झत्ति ॥ २८ ॥
 तो संनद्धधणुद्धरअसिखेडयकरभडेहिं चउपासं । परिवेढिय देवउलं स आह गोसे धरिस्समिमे ॥ २९ ॥ नो निगं-
 मप्पवेसा कस्सइ देया इहत्ति भणिय भडे । गंतूण मंतिनिवईण कहिय तवइयरं सुत्तो ॥ ९३० ॥ दट्ठूणं सेट्ठिसुओ
 देवउलं घडियभडदढावेढं । उब्भूयभूरिभयवेविरंगजट्ठी विचिंतेइ ॥ ३१ ॥ पेच्छ जहा मज्झ महावसणमिणं
 दुस्सहं समणुपत्तं । जीवियमरणसरूवे संदेहे जेण पडिओहं ॥ ३२ ॥ “पुबिल्लभवसमुब्भवपावप्पम्भारभावओ-
 वस्सं । सुनयाणंपि अवाया इति न किं कयअनीईणं” ॥ ३३ ॥ गोसे बंधेउं मं नेही आरक्खिओ विवणिवीहिं ।
 जणयाइजणसमक्खं विडंबिही विविहवियणाहिं ॥ ३४ ॥ तुच्छतरविसयलालसमणस्स मह केत्तियं इमं दुक्खं ।
 पररमणिरमणपावा णरए तमणंतसो होही ॥ ३५ ॥ न कयाइ कओ अनओ मए न अनईहिं सह पसंगोवि । एयं
 चिय गोत्तक्खयहेऊ पढमं कयमकज्जं ॥ ३६ ॥ अप्पविणासाय महापावुल्लासाय अयसपसराय । खलओक्करिसाय मए
 एयं दुबिलसियं विहियं ॥ ३७ ॥ मरणं दारिइं वा विएसवासो व सयणविरहो वा । हुंतु वरं एयाइं मा पुण एसो
 कुलकलंको ॥ ३८ ॥ न कुणंति जे परिक्खिय कज्जं ते दुक्खमंदिरं हुंति । प्हसिज्जंति जणेणं मइलिज्जंतिय अकित्तीए

दीपक-
 पूजायां
 भुवन-
 प्रदीपकथा

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ २७ ॥

॥ ३९ ॥ पंचिदियत्तमणुयत्तआरियक्खेत्तेसु सुकुलजम्माइं । सवंपि मे निरत्थयमकज्जकरणुज्जमा जायं ॥ ९४० ॥ न
कओ धम्मो न गुणा समज्जिया सज्जिया न सियकित्ती । चित्तालिहियनरस्स व मणुयत्तं मह मुहा जायं ॥ ४१ ॥
आबालकालओ बंभयारिणो जे कयवया जाया । ते पुन्नपयं न वयं विसएहिं विडंबिया इय जे ॥ ४२ ॥ जइ देवगुरु-
पसाया एयवसणाउ कहवि छुट्टिस्सं । गिण्हिस्सं ता नियमेण सबविरइवयं सुहयं ॥ ४३ ॥ एयं महाणुभावो चित्तइ
सद्धम्ममग्गमणुपत्तो । दूरं धणावलीवि य पकंपए भडभयुब्भंता ॥ ४४ ॥ एत्तोय पवंचमइं पहरिसउक्करिसिया कहइ
कुमई । इय फाडियं मएयं संधसु जइ संधिउं तरसि ॥ ४५ ॥ इय भणिय गयाए तीए सेट्ठिणो कहइ सा तमागंतुं ।
तो सो सुयतवसणो खणं भया निच्चलो जाओ ॥ ४६ ॥ तियसोव निज्जिमेसो निब्भरनिहोव नट्टमणविक्की । कयमोणो
सज्झाणो जायमुच्छोव निच्चेट्ठो ॥ ४७ ॥ किं कायवविमूढं तं दट्ठुं जंपए पवंचमई । किं सेट्ठि गरिट्ठमई विनट्ठबुद्धिब
लक्खियसि ॥ ४८ ॥ किं कायरोव कंपसि रणरसियभडोव धीरिमं धरसु । केत्तियमेत्तं कज्जं इमं कुसग्गीयबुद्धीण
॥ ४९ ॥ जइ वि कुमईए कहिए विहिओ रायेण भडदढावेढो । तुह तणओ मरणंतवसणं पत्तो जइवि इण्हि ॥ ९५० ॥
तहवि हु तहा जइस्सं न जहा दवक्खओ ल्हसइ न जसो । न विणस्सइ तुह तणओ जणाणुराओ न जह जाइ ॥ ५१ ॥
नवरं नियवहुयं मह अप्पसु तं देवमंदिरे खिविउं । जह वंचिय समईए सुहडे कट्ठुमि तं असइ ॥ ५२ ॥ गोसे वाह-
रिय निवो जंपइ जइ किंपि ता भणेज्ज तुमं । सपिओवि मह सुओ पडु निसाए रुसिउं कहिंपि गओ ॥ ५३ ॥ एवंति
भणिय बहुयं सिंगारिय से समप्पए सेट्ठी । नियसम्मयमहिलाओ मेलइ गंतुं सगेहे सा ॥ ५४ ॥ वज्जिरवद्धावणयच्छंद-
पणच्चंततरुणपरियरिया । अयसंकलसंदाणियकम्मकंतिमईए संजुत्ता ॥ ५५ ॥ सह मियमंजुस्सरतूरिण्हिं गायंतकामिणी-
कलिया । चलिया मंदं मंदं पत्ता य कमेण देवउले ॥ ५६ ॥ सवणासन्ने ठाउं किक्की(कंति)मइं जंपए पवंचमई । अन्तो गंतुं

दीपक-
पूजायां
शुवन-
प्रदीपकथा

॥ २७ ॥

तुमए असईवेसो नियसियबो ॥ ५७ ॥ ठायबं पइपासे होइ अणत्थो जहा न से गोसे । अप्पियनियनेवत्थं मह पासे पेसियवा सा ॥ ५८ ॥ इज जंपिऊण चलिया खलिया य भडेहिं इय भण्णतेहिं । लब्भइ न इह पवेसो रायाएसो जतो एसो ॥ ५९ ॥ एत्थ पविट्ठो चिट्ठइ रुद्धो असईजुतो नरो कोई । ता पूइज्जह गोसे देवयमिण्हि पुणो वलह ॥ ९६० ॥ तो तेसि पवंचमई वियरइ सवेसि कुसुमतंबोले । “दूरे इयरे थड्ढा वि हुंति दाणेणमणुकूला” ॥ ६१ ॥ पुन्नं मह दुहियाए उवजाइयमेत्थ तो इमा पत्ता । “अवरावि पूयणिज्जा देवी सप्पच्चया किन्नो” ॥ ६२ ॥ अज्ज इमाए तइज्जो उववासो आसि जं इमं वणियं । ता तुब्भे करुणाए एकमिमं चिय पवेसेह ॥ ६३ ॥ जइ अज्ज इमा अच्चइ न देवयं ता न भुंजए नूणं । ता मुत्तुमिमं एयाए जीवियवं पयच्छेह ॥ ६४ ॥ एत्थ ठिआ वि अम्हे भत्तिं देवीए गीयनट्टेहिं । पयडिस्सामो पसिउं ता कुणह इमंति तीउत्तं ॥ ६५ ॥ तो ते दक्खिन्नदयाहिं पेरिया बिंति भइणि तं चेव । एक्का गंतुं पूइत्तु देवयं झत्ति निगगच्छ ॥ ६६ ॥ तं सोउं कंतिमई पूयापडलं करे कलेऊण । देवउलम्मि पविट्ठा ठिया अणुट्ठिय जहुदिट्ठं ॥ ६७ ॥ नच्चणगाणवगाण ताण रमणीण पासमणुपत्ता । कंतिमईनेवत्थप्पच्छाइयतणुलया असई ॥ ६८ ॥ वज्जिरवद्धावणया वलिउ पत्ता पओलिदे सम्मि । रुवय—अद्धं दाउं विसज्जिया तूरिया तुरियं ॥ ६९ ॥ पहसंतीउ पविट्ठा पुट्ठाओ पउलिरक्खयभडेहिं । किं नो वज्जइ तूरं पढइ इमं तो पवंचमई ॥ ९७० ॥ अट्ठह तेत्तउं वज्जइ जेत्तउं पोलिहि बारु । अंइरुद्धो वि न रुब्भइ सहुं परिणिए भत्तारु ॥ ७१ ॥ रायसमीवंगीकयपुन्नपइन्ना अईव सा तुट्ठा । “थोवावि कज्जसिद्धी तोसकए किं पुण न बहुया” ॥ ७२ ॥ पुरम-ज्झमागयाओ विसज्जए सा सहीओ सवाओ । “सिद्धप्पओयणाणं किं कज्जं जणसमूहेण” ॥ ७३ ॥ वद्धाविऊण सेट्ठिं गंतूण निए गिहंमि सुत्ता सा । “निब्वित्ताणं निहा जायइ जइवा किमच्छरियं” ॥ ७४ ॥ सूरुग्गुमसमयम्मि वि संनज्झंतम्मि तम्मि

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ २८ ॥

भडविंदे । सपिओवि कित्तिसारो निग्गतुं ते पयंपेइ ॥ ७५ ॥ किं तुब्भे सन्नज्झह पिउणा अवमाणिओ गहिय भज्जं । इह वसिय निसिविरामे जाव विएसम्मि वच्चिस्सं ॥ ७६ ॥ ता इह पविट्ठमेत्तोवि वेढिओ कहह को विणासो मे । ते बेति निवामच्चे पुच्छसु जे तं धरावेति ॥ ७७ ॥ तेणुत्तं मह ताणवि तणओ न भओ जओ विसुद्धोहं । “किं काहि भवो वि हु विज्जो नीरोयदेहाए(ण)” ॥ ७८ ॥ इय भणिरे सेट्ठिसुए आरक्खियमंतिणो समणुपत्ता । दट्ठूण सेट्ठिपुत्तं सकलत्तं विम्हिया दोवि ॥ ७९ ॥ सुहडाण व तेसिं पि हु कहियं सबंपि कित्तिसारेण । रायसयासे नीओ भज्जाजुत्तो वि सो तेहिं ॥ ८० ॥ रायउले निज्जंतं तणयं नाउं समागओ सेट्ठी । “इयरेवि सायरच्चिय सुयणा किं पुण न नियपुत्ते” ॥ ८१ ॥ सुयसेट्ठिसुयनिवंतियनयणा पत्ता दुयं पवंचमई । “का संका सक्खं रायवयणपत्ताभयाणहवा” ॥ ८२ ॥ असमाणपवंचमइमईए विजियत्ति नागया कुमई । “तत्थ न जन्ति सयन्ना पराजओ जायए जत्थ” ॥ ८३ ॥ गंतूणत्थाणत्थं सबेवि निवं नमित्तु उवविट्ठा । “विणयप्पणई सस्सा सबत्थवि किं न नमणिज्जे” ॥ ८४ ॥ मंतिसयासा सोउं भणइ निवो कित्तिसार किं एयं । सो आह जह पहू मुणइ तह इमं किं अलीएण ॥ ८५ ॥ “सयमेव देव विसयाहिलासिणो पाणिणो सया तम्मि । जो पुण परोवएसो घयाहुई सा हुयासम्मि” ॥ ८६ ॥ इय जंपिय कुमइविप्पयारणुप्पन्नरायरसपमुहं । कहियं रत्तो “भन्नइ पमाणभूमीए नो अलियं” ॥ ८७ ॥ जेण सरीरेण कयं सहउ तयं देव निग्गहदुहाइं । “देए पच्छावि रिणे सइ दब्बे दिज्जइ न किं तं” ॥ ८८ ॥ आह निवो मा बीहसु जमेक्कवारं इमाण महिलाणं । अभओ मए विइन्नो फाडणसंधाणकोडयओ ॥ ८९ ॥ नामाणुसारिणिच्चिय कुमईए मई महा अणत्थयरी । “अहवा परिपज्जलियो दहणो दहणोच्चिय जहत्थो” ॥ ९० ॥ पेच्छ पवंचमईए भज्जं पक्खिविय कड्डिया असई । नो विन्नायं केणइ “बुद्धीए अगोयरो नत्थि” ॥ ९१ ॥ सेट्ठिसुय नो कयाइवि विस्ससियव्वं तए कुमहिलाण । जं संपइ विस्ससियस्स आगओ आसि तुह मच्चू ॥ ९२ ॥ विन्नवइ कित्ति-

दीपक-
पूजायां
श्रुवन-
प्रदीपकथा

॥ २८ ॥

दीपक-
पूजायां
भुवन-
प्रदीपकथा

सारो देवपसाएण जीवियव्वस्स । पत्तस्स चरिय चरणं भवहरणं सहलयं काहं ॥ ९३ ॥ जइ नो देवो देंतो पाणे मह
नूण ता अहं इण्हि । उभयभवसंभवाणवि चुक्कंतो चेव सोक्खाण ॥ ९४ ॥ रायाह वच्छ कस्सइ कयाइ भववासमहि-
वसंतस्स । दुक्कम्मेण अवाया ह्वंति ता मा समुबियसु ॥ ९५ ॥ मा कुणसु वयकिलेसं धम्मो संतस्स होइ गिहिणोवि ।
“को नाम कुणइ कट्ठं सइ कज्जे सोक्खसज्झम्मि” ॥ ९६ ॥ सो भणइ सामि एवं विडंबणा होइ जाण कज्झम्मि । मह
होउ तेहिं विसएहिं वयमहं संपइ गहिस्सं ॥ ९७ ॥ जंपइ सेट्ठी बुज्झवह देव एसेव जं सुओ मज्झ । करहपडियं व
भंडयमिमं विणा फुडइ हिययं मे ॥ ९८ ॥ पुत्तेणुत्तं जइ अज्ज पहु तए हं विणासिओ हुन्तो । हुंता केत्तियमेत्ता ता पुत्ता
मज्झ जणयस्स ॥ ९९ ॥ जणया जणणीउ पियाउ पुत्तया बंधुणो य संसारे । मुक्का भूरिभवेसुं ता मोहो कहह को तेसु
॥ १००० ॥ “परमत्थेणं न कयावि बल्लहो अत्थि कोइ कस्सावि । सोयइ सबोवि जणो नियकज्जं चेव सीयंतं” ॥ १ ॥
ता अहमवि नियकज्जप्पसाहणे उज्जओ इयाणिं पि । ता मा भवह भवंतो सबे धम्मंतरायपरा ॥ २ ॥ गहिऊण वयं
अज्जं भुंजिस्सं अन्नहा महाणसणं । तो नायनिबंधेणं निवेण मोयाविओ सेट्ठी ॥ ३ ॥ जणणीवि तत्थ पत्ता पुत्तेण कमे
नमित्तु विणयपरं । पाएसु लग्गिऊणं बलावि मोयाविया अप्पं ॥ ४ ॥ सम्माणितं विसज्जइ वत्थाईहिं सपियं सुयं सेट्ठिं ।
राया पवंचमइयंपि भणिय नायुज्जया होज्ज ॥ ५ ॥ कुमइंपि भणइ वाहरिय मा पुणो इय करेज्ज अन्नायं । पुणरुत्तं न
खम्मिस्सं ति भणिय तं पि हु विसज्जेइ ॥ ६ ॥ ण्हाणाइसबसिं गारसुंदरो सिवियमारुहिय पत्तो । इह एसो सेट्ठिसुओ
पवइओ तुज्झ पच्चक्खं ॥ ७ ॥ खयरारिहाय वेरग्गकारणं पुच्छियं जमेयस्स । तं कहियं “ता मोत्तुं कुसंगमायरह गुणि-
संगं ॥ ८ ॥ पायं विणस्सइच्चिय पत्तकुसंगो जणो सुवित्तोवि । उयरगओ असुइत्ते जुज्जइ परमोवि आहारो ॥ ९ ॥
सगुणंमि गुणाहाणं पावइ पत्तो जणो अजन्तोवि । रमणिनयणे कलुसंपि कज्जलं सोहसुवहइ ॥ १०१० ॥ कायवो

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ २९ ॥

गुणिसंगो तम्हा पुरिसेण उज्झिय कुसंगं । पत्ते सिणिद्धदुद्धे मुद्धोवि किमंबिलं पियइ” ॥ ११ ॥ खेयरवई पयंपइ पहु
सिद्धिवहूवरो इमो होही । जो एकम्मिंवि एवं पडिबुद्धो आवयाए भवे ॥ १२ ॥ पहु अम्हेवि हु पुन्नेकमंदिरं जेहिं
थावरे तित्थे । चलिण्हिं जंगमं तित्थमुत्तमं तमिह संपत्तो ॥ १३ ॥ एत्थंतरे करेणुक्खंधगओ छत्तअन्तरियतरणी ।
राया चउरंगबलो पत्तो केवलिकमे नमइ ॥ १४ ॥ वंदिय सेसे मुणिणो सलाहिउं पणमिउं च नवसाहुं । उवविट्ठो
तो वंदइ तस्संतेउरमवि समगं ॥ १५ ॥ तम्मज्जे निवकन्ना नियरूवजियामरी कणयवन्ना । पत्ता भत्तामरहत्थिमंथ-
रक्कमकयागमणा ॥ १६ ॥ लीलाचलच्छिविच्छोहखोहियासेसतरुणनरनियरा । दीवपहानामेणं सारसुहासारसियहासा
॥ १७ ॥ दट्ठूण केवलिं सा हच्छं मुच्छं गया मयंकमुही । सीओवयारसंपत्तचेयणा पुच्छिया पिउणा ॥ १८ ॥ किं
वच्छे मुच्छागमणकारणं तुह पयंपए सावि । पुच्छसु गुरुणो इय भणिय केवलिं नमिय उवविट्ठा ॥ १९ ॥ कयकर-
कोसो नमिऊण केवलिं पुच्छए निवो भयवं । किमु मुच्छिया मह सुया भणइ पहु निसुणसु नरिंद ॥ २० ॥
सरसाहिट्ठियपहियं सरसाहियसत्तुसुहडसंदोहं । सरसाहिलसियवासं पुरमत्थि विसालसालंति ॥ २१ ॥ रविउदया-
रद्धदिणंतमुक्कधणिभवणकयकुक्कम्मेण । पत्तारसआहारो अकिंचणो तत्थ अत्थि नरो ॥ २२ ॥ निम्मंसमुही नित्तेय-
कालदुब्बलकरालकाया से । मुत्तिमइचामुंडव भारिया आसि विगयासा ॥ २३ ॥ खंडणरंधणपीसणजलवहणगिह-
प्पमज्जणाईहिं । परघरपत्तकुभोयणकयट्ठिई गमइ दियहे सा ॥ २४ ॥ सिसिरे सहंति सीयाइं गेम्हसमयंमि तिवर-
वितावं । मलकलयकुचेलाइं दोन्निवि मुणिमंडलाइं व ॥ २५ ॥ जुन्नकुडीरयलायणकज्जे कइयावि दोवि दब्भत्थं ।
भमिराइं गुरुअरन्ने नियंति आयावयंतं मं ॥ २६ ॥ भणिया अकिंचणेणं भज्जा नमिमो इमस्स पयपउमं । जेणजेमो
अम्हे अब्भुत्तम-पुन्नपब्भारं ॥ २७ ॥ तो दोन्नि वि भत्तिवसप्पसरियरोमंचअंचियंगाणि । भूमियलमिलियभालयलमणहरं

दीपक-
पूजायां
भुवन-
प्रदीपकथा

॥ २९ ॥

मज्झ पणमन्ति ॥ २८ ॥ दहुं विसुद्धभावं तेसि मए तयणु उवविसेऊण । उवविट्ठाणं दिन्नो दोण्हवि सद्धम्मउवएसो
 ॥ २९ ॥ आयन्नह भो तुब्भे पंचिंदियजाइपमुहसामग्गि । पावेउं नायव्वाइं देवगुरुधम्मतत्ताइं ॥ १०३० ॥ रागदो-
 साईहिं दोसेहिं अदूसियं मुण्ह देवं । निग्गंथं गीयत्थं तत्तरयं जाणह गुरुं पि ॥ ३१ ॥ जइगिहिभेएहि दुहा बुज्झह
 धम्मं जिणेहिं पन्नत्तं । पढमं दसप्पयारं बारसभेयं पुणो वीयं ॥ ३२ ॥ जीवाजीवा पुन्नं पावासवसंवरो य निज्जरणा ।
 बंधो मोक्खो य इमं आयन्नह तत्तनवगं पि ॥ ३३ ॥ देवगुरुधम्मतत्तत्थसद्धाणेण होइ सम्मत्तं । मूलं सबुत्तममो-
 क्खकप्परुक्खस्स इममेव ॥ ३४ ॥ फलसलिलधूवदीवयअक्खयनेवज्जगंधकुसुमेहिं । पूयइ सम्महिट्ठी इय जिणमट्ठहिं वि
 पूयाहिं ॥ ३५ ॥ सवाउ वि अतरन्तो पईवपूयं करेइ जइ भवो । ता सा एक्कावि हरेइ तस्स पावाइं भणियं च ॥ ३६ ॥
 “जो देइ दीवयं जिणवरस्स पुरओ पराए भत्तीए । तेणेव तस्स डज्झइ पावपयंगो न संदेहो” ॥ ३७ ॥ मणुयत्तं संपत्तं मा
 नेह मुहा करेह सद्धम्मं । तुम्हाण हियं कहियं जुत्तमिमं चिय गुरुणहवा ॥ ३८ ॥ जंपंति दोवि नियजोगयाणुमाणेण
 तुम्हमाएसं । काहामो भयवं जं सुकएणम्हेहिं तं पत्तो ॥ ३९ ॥ इय जंपिय भत्तीए मं नमिउं दब्भभारए गहिउं ।
 दोन्निवि गयाइं गोहे भद्दगभावेण वट्ठंति ॥ १०४० ॥ नयरप्पहाणजिणदत्तसेट्ठिणो मंदिरंमि कम्माइं । कुबंताणं
 ताणं दोण्हवि दीवूसवो पत्तो ॥ ४१ ॥ दाऊण सेट्ठिणा सालिपूयघयपमुहमेवमुत्ताइं । सगिहे भुंजह जह जाइ तुम्ह
 वरिसोवि सोक्खेण ॥ ४२ ॥ ते बिंति अम्ह दंससु जिणेशरं सेट्ठि जेण तस्स पुरो । काऊण घएणं दीवयं वयं सुकय-
 मज्जेमो ॥ ४३ ॥ दट्ठूण धम्मबुद्धिं जातो तेसिं कयायरो सेट्ठी । “गरुयाइं परंमिवि पक्खवाइणो किन्न धम्मपरे”
 ॥ ४४ ॥ इण्हिपि चलह इय भणिय तेहिं सह जिणहरम्मि संचलितो । “अवरंपि पत्थियं कुणइ सज्जणो किं न पुण
 धम्मं” ॥ ४५ ॥ तिन्निवि पत्ताइं नियंति रुंदजिणमंदिरं गयणलग्गं । भूयतरुपत्तपंतित्तियतोरणसियदुवारग्गं ॥ ४६ ॥

दीपक-
 पूजायां
 भुवन-
 प्रदीपकथा

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ३० ॥

अनिलचलिरद्धयावलिर्किंकिणिगणघणरणज्झणारावो । घग्घरयखलहलस्सरमिस्सो सुहरइ नहं जत्थ ॥ ४७ ॥ मणि-
जणियदेवउलियामंडलविप्फुरियकिरणनिउरुंबो । रोहिणगिरिव रेहइ जणपुन्नागरिसिओव जहिं ॥ ४८ ॥ केवलनाणा-
लोओव जत्थ लंबंतमोत्तिओज्जोओ । फलिहमऊहसमूहो भवविवेओ विव विहाई ॥ ४९ ॥ डज्झिरकप्पूरागरुपरिमल-
मांसलियसुमणसामोओ । वित्थरइ जत्थ दूरं धम्मियजणपुन्नपसरोव ॥ १०५० ॥ सेट्ठी तेहिं समेओ पविसंतो तम्मि
नियइ अजियजिणं । जय जय जयत्ति भणइ य सीमंतयसंगिकरकोसो ॥ ५१ ॥ उवसंतकंतरूवं तेसिं तं दंसए
अजियदेवं । बहिरंगअंतरंगारिवग्गनिग्गहणपत्तजसं ॥ ५२ ॥ एसो समग्गसग्गापवग्गसुहसंगदायगो दूरं । ता एयं
पूएउं अप्पहियं कुणह इय भणइ ॥ ५३ ॥ तं सोउं ताइं मणप्फुरंतगुरुभत्तिभरधरंगाई । पसरियपरिओसवसुल्लसंतरो-
मंचनिचियाइं ॥ ५४ ॥ उल्लसियअमंदाणंदजायथोरंसुपूरियच्छीणि । परिकलयंताइं सजम्मजीवियव्वाण सहलत्तं ॥ ५५ ॥
सुरहिघएणं काऊण दीवए ताइं दोन्नि वि मुयंति । जिणपुरओ पणमन्ति य पहुं महीमिलियभालाई ॥ ५६ ॥ कुलयं ॥
तयणन्तरं पयाहिणपुरस्सरं नमिय रइयकरकोसो । सेट्ठि अजियजिणिंदं भत्तिभरो थोउमारद्वो ॥ ५७ ॥ “जस्सानमंति
सिरिसोणमणिपहापयडभत्तिरायव । अमरेसरा थुणिस्सामि तं पहुं अजियनाहमहं ॥ ५८ ॥ मणवयणनयणहत्था ते
धन्नाणं सुहा अजिय तुज्झ । सुमरणथवणालोयणपूयणकज्जेसु जे सज्जा ॥ ५९ ॥ वइसाहसेयतेरसितिहीए तं चत्तविजय-
वासोवि । पहु विजयोयरवासं अलंकरंतो कुणसि चोज्जं ॥ १०६० ॥ जायं तिजगुज्जोयं तं माहसियट्ठमीनिसीहम्मि ।
दट्ठूण ससंको लज्जिओव तव्वेलमत्थमिओ ॥ ६१ ॥ चइय तए चललच्छि वयं कयं माहसेयनवमीए । इयरोवि
अत्थिराए न रज्जए किं पुण तिनाणी ॥ ६२ ॥ पोसे सियाएक्कारसीए जेउं चलहुपहचंदं(?) । लोयालोयपयासं संजाय-
मणंतनाणं ते ॥ ६३ ॥ चेत्तसियपंचमीए तं सिद्धिवहूए संगमल्लीणो । इयरंपि मोहिउमलं रमणी किं केवलविरायं

दीपक-
पूजायां
भुवन-
प्रदीपकथा

॥ ३० ॥

॥ ६४ ॥ इय जायपंचकल्लाणमवि पहुं थुणिय चत्तकल्लाणं । मन्नेमिचंदपहुनय भवसायरतिन्नमत्ताणं ॥ ६५ ॥ सेट्टिस्स पक्खवाओ जिणिंदभत्तीए तेसु संजाओ । “अहवायरो गुरूणं सगुणे विगुणि पुण उवेहा” ॥ ६६ ॥ पुणरुत्तं पणयजिणो अकिंचणो सेट्टिणा सभज्जोवि । नेउं नियभवणे दिन्नबहुघओ पेसिओ सगिहे ॥ ६७ ॥ तम्मिबि भवम्मि जिणभत्ति-
भावओऽकिंचणो धणी जाओ । “अहव न तं कल्लाणं जिणपूयाए न जं होई” ॥ ६८ ॥ कइयावि आउअंते मज्झिमपरि-
णामओ मरिय जातो । भुवणप्पईवनामो पुत्तो निवकुलपईवस्स ॥ ६९ ॥ तेणेवय भावेणं तब्भज्जा मरिउमेत्थ उप्पन्ना ।
एसेवय तुह तणया जिणदीवयपूयपुन्नेण ॥ १०७० ॥ इह पत्ता मं पेच्छिय जाईसरणेण मुच्छियया एसा । निव पुच्छियं
तए जं तं मुच्छाकारणं कहियं ॥ ७१ ॥ नमिय गुरुं भणइ सुया रिद्धी पहु तुह पसायओ एसा । मह सपियस्सवि
जाया “किंवा न हवइ गुरुपसाया” ॥ ७२ ॥ सोऊण कुमरिचरियं जिणपूयाकयमई जणो सव्वो । रायाइओ गुरूणं नमिय
नियट्ठाणमणुपत्तो ॥ ७३ ॥ नयकेवलिकमो नहयरेसरो मणिविमाणविंदेण । नंदीसरंमि पत्तो वलिओयऽभिवंदिय
जिणंदे ॥ ७४ ॥ नवरं रायसुयादंसणाइअणुरायभरपरायत्तो । निवपासे संपत्तो पणयपरो पत्थए कंनं ॥ ७५ ॥ रायाह
नहयरेसर जुत्तमिणं किंतु पुच्छिमो कन्नं । “जावज्जीवियकज्जे काउं जुत्तो न उवरोहो” ॥ ७६ ॥ तो वाहरिया पत्ता निव-
तियं रइयरम्मसिंगारा । बाला लीलालससरललोयणुल्लासलसिरमुही ॥ ७७ ॥ काउं पसायमाइसह ताय इय भणइ
पिउकमे नमिउं । तो से सायरखयरिंदपत्थणं साहए राया ॥ ७८ ॥ सा आह ताय लग्गइ अंगे सोहग्गसंगओ सो मे ।
पुबभवुब्भवभत्ता अग्गी वा इह भवे नन्नो ॥ ७९ ॥ नायसुयाअणुबंधो सम्माणिय नहयरं विसज्जेइ । सोवि गतो
वेयट्ठे “निक्कज्जं किं विएसेण” ॥ १०८० ॥ चित्तइ नहयरनाहो हिययगया दूमए मयच्छी मां । विरहजरजलणजालाजलि-
रंगं न(त)ट्ठभल्लिव ॥ ८१ ॥ सा मं न मन्नइच्चिय ठाउमसत्तो न तं विणाहमवि । ता हरणमेव जुत्तं महनिवतणयाए

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ३१ ॥

इण्हिपि ॥ ८२ ॥ अहवा किं हरणेणं सइ कुमरे तंमि सह न सा होही । त्वा सं पछंमं चिय हणेमि इय चित्तिउं ज्ञप्ति
॥ ८३ ॥ एगोच्चिय निसि निगंतुमुवगओ कुमरवासभवणंते । मारणमईए अहवा “इत्थीलुद्धाण किमकज्जं” ॥ ८४ ॥
तिसिरदुवालसभुयएकतणुल्यारद्धपेच्छणयच्छउमा । तमिहाणीओ तेणं मंतेणुग्घाडिय पओलिं ॥ ८५ ॥ तो सहसा
संजातो सुहडो आयड्डियासिदुद्धरिसो । साहिक्खेवं रइयम्मि रणभरे सो जितो तुमए ॥ ८६ ॥ “जे सत्थप्पडिकूला
जे वा वीसत्थघाइणो कुडिला । नियमेण पढंतिच्चिय ते पुरिसा पावपहरहया” ॥ ८७ ॥ ता कुमर सो अहं नियदयाए
हणणारिहोवि जो तुमए । मुक्कोत्ति मए कहिओ तुह पुरओ निययवुत्तंतो ॥ ८८ ॥ इय जह खयरओ सुयं तह कुम-
रेणावि जाइसरणेण । सबंचिय सच्चवियं सिविणयदिट्ठं तवेलं ॥ ८९ ॥ भणियं च खयर तुमए जह कहिओ तह
मएवि पुवभवो । दिट्ठो जाइस्सरणेण तयणु तं खेयरो भणइ ॥ ९० ॥ ता चलसु तुमं मुत्तूण मंदिरेहमवि जामि
सट्ठाणे । इय जंपिय तमणुट्ठिय नहयरनाहो गओ सपुरे ॥ ९१ ॥ परिभावियपुवभवप्पियाणुरायप्पइन्नकरणस्स ।
उम्मीलिओ महंतो अणुराओ रायतणयस्स ॥ ९२ ॥ चिंतइ तेच्चिय धन्ना जेसिं नियवल्लहेहिं जुत्ताण । विविहविलासेहिं
मुहुत्तमेत्तमिव जंति दिवसाइं ॥ ९३ ॥ जह जाइ वल्लहजणे मणो तहा जइ तणूवि वच्चन्ती । ता नून न हुंतं चिय
कस्सइ तविरहविहुरन्तं ॥ ९४ ॥ नूनं जागरणाओ विरहीण वरं समेइ जइ निहा । जा दूइयव वल्लहसंजोगं कुणइ
सहसत्ति ॥ ९५ ॥ कामुकलियाउ मणे नयणेसु अलद्धलक्खया जाया । दाहो देहे वल्लहअलाहओ तस्स चिन्ताए
॥ ९६ ॥ वल्लहविरहविणोयप्पारद्धहयाइकीलकिरियस्स । गच्छन्ति वासरा विरहियस्स कुमरस्स किच्छेण ॥ ९७ ॥
एत्थंतरंमि पत्तो कुमरिपिउपेसिओ महामंती । अत्थाणत्थं निवइं नमिउं विन्नवइ विणएण ॥ ९८ ॥ पहु मणिमंदिर-
नयरे पयावसारोत्ति नरवई अत्थि । दीवपहामलदेहा दीवपहाभिहसुया तस्स ॥ ९९ ॥ पत्ता केवलिपासं जाइसरणेण

दीपक-
पूजायां
भुवन-
प्रदीपकथा

॥ ३१ ॥

मुच्छिया बाला । निवपुच्छिएण कहिओ केवलिणा तीए पुबभवो ॥ ११०० ॥ इय भणिय तेण सबं सवित्थरं साहियं
 नरिंदस्स । ता जा पुबभवुब्भवपिए कुमारेणुरत्ता सा ॥ १ ॥ भणियं च खयरवइणा विवाहिउं पत्थियावि न तीए ।
 पडिबंनं तव्वयणं कुमरं पइ जायरायाए ॥ २ ॥ तुह तणयअलाहविओयदाहदज्झंतगणवणा बाला । लहइ न सुहलवमवि
 जलिरजलणजालोलिकलियव ॥ ३ ॥ धाईए इव अरईए असुहत्थीए वयंसियाएव । दासीहिं व संगहिया कामुकलि-
 याहिं सा दूरं ॥ ४ ॥ ता पट्ट पेससु कुमरं परिणयणकए कुरंगनयणीए । जह होइ जीवियं से “गुरूण दुहिए न
 जमुवेहा” ॥ ५ ॥ रायाह सा सइच्चिय जा पुबभवप्पियम्मि अणुरत्ता । सिविणेवि जं सईणं रमइ मणो नन्नरमणम्मि
 ॥ ६ ॥ इय भणिय समाइट्ठो कुमरो वीवाहिउं नरिंदसुयं । वच्छागच्छसु तो सो नमिय निवाणं सिरे धरइ ॥ ७ ॥
 सम्माणिकुण मंतिं संवाहिय नियसुओ समंतेण । चउरंगचमूचको पट्टविओ हिट्टहियएण ॥ ८ ॥ अणवरयकयपयाणो सो
 मणिमंदिरपुरंमि संपत्तो । “ठाणं चलिरो मंदोवि पावए किं न सिग्घगई” ॥ ९ ॥ पट्टओय(पत्तोय)वत्थकयहट्टसोहगुरुमंचतो-
 रणधयम्मि । रायंगरुहो रत्ता रिद्धीए पवेसिओ नयरे ॥ १११० ॥ आवासिओ समप्पियपासाए कणयकलसकमणीए ।
 नरवइकारावियभोयणाइगुरुगोरबमहग्घो ॥ ११ ॥ लग्गदिणे हयगयठियसामंतावेढिओ गयारूढो । छत्तद्वयचामरचय-
 रायालंकारकमणीओ ॥ १२ ॥ वज्जिरजयआउज्जो पत्तो वीवाहमंदिरदुवारे । रइयायारो पविसिय उवविट्ठो कंनयापासे
 ॥ १३ ॥ इट्ठं से तीए करं करेण गहिउं पयाहिणियजलणो । उवविसिय रायकुमरेहिं तयणु सम्माणिओ लोओ ॥ १४ ॥
 तो नियकलत्तकलिओ चलिओ चडिउं करेणुरायम्मि । रिद्धीए नियाबासे पत्तो कीलइ सह पियाए ॥ १५ ॥ ससुरय-
 सम्माणुम्मीलमाणतोसो दिणाण दसगं सो । तत्थच्छिय नमिय निवं सकलसो नियपुरे पत्तो ॥ १६ ॥ रत्ता रिद्धीए
 पुरे सहट्टसोहे पवेसितो कुमरो । नवपरिणीयं पुत्तं मोत्तुं को गोरवट्ठाणं ॥ १७ ॥ पणओ पिउणो पयसयदलम्मि

दीपक-
 पूजायां
 भुवन-
 प्रदीपकथा

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ३२ ॥

सपिओवि पत्तआसीसो । नमिउं जणणिं चलिओ सुद्धंतेच्चिय ठिया बहुया ॥ १८ ॥ पियुपयसेवासत्तस्स तस्स कुमरस्स
जंति दिवसाइं । तं अहिसिंचइ राया रज्जे रिद्धीए कइयावि ॥ १९ ॥ गीयत्थगुरुसयासे पत्तवओ कयतवो पहयपावो ।
उप्पन्नविमलनाणो रायरिसी सिवपुरं पत्तो ॥ ११२० ॥ नवराया निरवज्जं पालइ रज्जं पयासए नीइं । ताडइ चरडे मन्नइ
महायणं अज्जइ जसं सो ॥ २१ ॥ वंदइ गुरुणो पूयइ जिणेसरे संघमच्चए निच्चं । कारवइ विभूईए रहजत्तात्तो जिणिं-
दाणं ॥ २२ ॥ इय वच्चंते काले कयाइ दीवयपहाए उप्पन्नो । पुत्तो उत्तमलक्खणगणलंछियहत्थपायतलो ॥ २३ ॥
विरइयवद्धावणओ रयणपईवोत्ति कुणइ पुत्तस्स । नामं संमाणेउं सब्बजणं नरवई हिट्ठो ॥ २४ ॥ वरिसाइं पंच
पालित्तु पाढिओ तयणु जोवणं पत्तो । वीवाहिओ य उम्मत्तजोवणाओ निवसुयाओ ॥ २५ ॥ समयंतरम्मि कम्मवि
राया रयणीए तुरियपहरम्मि । जागरमाणो सद्धम्ममग्गमणुच्चित्तिउं लगो ॥ २६ ॥ दीवयमेत्ताएवि मे पूयाए असरिसा
सिरी जाया । सुहुमाउ वि वडवीयातो जायए नहलिहो साही ॥ २७ ॥ थोवावि धम्मकिरिया भावेण कया महाफला
होई । लहुयावि दीवयसिहा उज्जोयइ मरुयमवि गेहं ॥ २८ ॥ जे पुण कुवंति वयं ते सिद्धिवहूवरा धुवं हुन्ति । “अच्च-
न्भुयकल्लाणे अप्पायत्ते पमाओ को” ॥ २९ ॥ ता दाउं रज्जसिरिं पभायसमए वयं गहिस्सामि । इय चित्तिय सुहलग्गे
रज्जे अहिसिंचइ कुमारं ॥ ११३० ॥ आरुहिय रयणसिवियं दितो दाणाइं वज्जिराउज्जो । सूरीण चरणसारामिहाण पासे
समणुपत्तो ॥ ३१ ॥ सकलत्तो कइवयरायसंगतो तेहिं दिक्खितो राया । जातो य साहुसिक्खावियक्खणो तक्खणे
दक्खो ॥ ३२ ॥ उक्किट्ठअट्ठमासंततवविसेसट्ठियट्ठिसंट्ठाणो । पडिबोहियभवो जायकेवलो मोक्खमणुपत्तो ॥ ३३ ॥
दीवयपूया भुवणप्पईवरन्नो जहा महाफलया । जाया तह अन्नस्सवि संपज्जइ तीए ता जयह ॥ ३४ ॥ ❀ दीपपूजा ❀

卐 卐 卐 卐 卐 भुवणप्पईवराया दीवयपूयाए साहिओ तुम्ह । भुवणप्पमोयगनिवं निसुणह नेवज्जपूयाए ॥ ३५ ॥ 卐 卐 卐 卐 卐

दीपक-
पूजायां
भुवन-
प्रदीपकथा

॥ ३२ ॥

सवुत्तमेकरायं समत्थि बहुलसिररायरयणंपि । भुवणतिलयाभिहपुरं कुरंगसमनयणरमणियणं ॥ ३६ ॥ जम्मि
 मणिभवणपरंपरापहापहयरयणितिमिरम्मि । वासहरडज्झिरागरुधूमो उप्पायइ निसं व ॥ ३७ ॥ परमहिओ सुहयगतो
 सचंदहासो दुहावि सबत्थ । भुवणाणंदो नामेण नरवई अत्थि तत्थ थिरो ॥ ३८ ॥ तस्सत्थि सबसुद्धंतसारपयसंढिया
 सलील्लगई । कमलमुही भुवणसिरित्ति रायहंसिब पियभज्जा ॥ ३९ ॥ तीए मणं आणंदइ पुत्तो भुवणप्पमोयओ दूरं ।
 भुवणप्पमोयओ नाम कामसमरुवरम्मतणू ॥ ११४० ॥ सद्धम्मसरुच्छेइयकुक्कम्मपरपत्तकेवलसिरीओ । अणुसरि-
 असासयसुहो जइब जो सहइ समरसिओ ॥ ४१ ॥ कइया वि सो करेणुक्खंधगतो छत्तअंतरिअतरणी । तरुणीकरसं-
 चालिअसिअचामरविअज्जमाणतणु ॥ ४२ ॥ नाणाजाणट्टियामत्तमंडलामंडलीयकयवेढो । चलिओ कुमरो आराममुत्तमं
 पेच्छिउं सबलो ॥ ४३ ॥ भूरिकविंजलकलिअं दुहावि जं ठि(वि)उसपामरकुलब । सहइ सुवन्नासणसंगयं सया राय-
 भवणं च ॥ ४४ ॥ पत्तो य तम्मि पविसइ तालीहिं तालसालतलकलिउं । कुवलीकयलीलवलीलवंगनारंगचंगम्मि
 ॥ ४५ ॥ अवरारवरमणीयारामपरंपरपरिब्भमणखिन्ने । मुत्तुं गयमल्लीणो अंबयवणदक्खमंडवए ॥ ४६ ॥ अंबयसा-
 हागयवज्जकिरणभरकिन्नकणयदंडंमि । दोलापल्लंके तूलियाए आरुहिय उवविट्ठो ॥ ४७ ॥ पारक्कधणुद्धरकुंतकरनरा
 कुमरपिट्ठिमणुसरिया । पुरओ उवविट्ठा मंडलीयसामंतमंतिसुया ॥ ४८ ॥ पडुपडहमंजुमद्दलआलवणीवेणुसहसंमिस्सं ।
 पारद्धं गाएउं चरियं कुमरस्स रमणीहिं ॥ ४९ ॥ कुमरो वि मणोगयरायवासणावसअलद्धलक्खत्थो । ईसिप्पकं-
 पिरसिरो वीणं वायइ नियकरेहिं ॥ ११५० ॥ एत्थंतरंमि गयणाओ मणिमयाभरणभूसियसरीरो । अवयरिउं
 संपत्तो कुमरपुरो किंनरीनियरो ॥ ५१ ॥ तम्मज्झाओ उत्तमरूवाए किंनरीए एक्काए । नमिय सविणयं पेच्छण-
 यपेच्छमम्भत्थिओ कुमरो ॥ ५२ ॥ संपत्ताएसाए महापसाओत्ति जंपिउं तीए । पारद्धं पेच्छणयं कुमरपुरो परियण-

नैवेद्य-
 पूजायां
 भुवन-
 प्रमोदक-
 कथा

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ३३ ॥

जुयाए ॥ ५३ ॥ वज्जंतवेणुवीणासराणुविद्धेण दिवराएण । हुंफियकंपियकुरलियमुदियकागलियरूवेण ॥ ५४ ॥ गुंजं-
तमइलुहामपडुहुडुक्काणुसरियतालरवं । गाएउं पारद्धं कुमारचरियं मिउसरेण ॥ ५५ ॥ तवेउमुवक्कंतं तम्मज्झा किंनरीए
पवराए । मणिमयरसणारणझणिरकणयकिंकिणिक्कलावाए ॥ ५६ ॥ पसरावसरणभमिभमुहभंगकरणक्कमंगहारेहिं । नच्चइ
सा करविन्नासवसपसप्पंतनयणेहिं ॥ ५७ ॥ निब्भच्छियमिउकलकंठकूइयं रायमालवेऊण । नच्चंती सा गायइ कुमरगुणे
चंदकरधवले ॥ ५८ ॥ तन्नट्टगीयदिन्नावहाणिया कुमरपमुहसवसहा । जाया तदेक्कदिट्ठी अचलंगी चित्तलिहियव ॥ ५९ ॥
पसरंतीए पसरंति उच्छलंतीए उच्छलंति समं । तीए जणनयणाइं सययं सेवयकुलाइं व ॥ ११६० ॥ अवहियहियओ
जाओ रायसुओ तीए गीयनट्टेहिं । दाउमणो नियहारं तमच्छिसन्नाए वाहरइ ॥ ६१ ॥ तो सा चलिया रणझणिर-
किंकिणी किंवि कंपमाणथणी । नवनेहरसभरालसनयणेहिं पलोइरी कुमरं ॥ ६२ ॥ सो वि हु नियहत्थेहिं थणत्थले
जाव ठावए हारं । ता तीए झत्ति आलिंगिऊण नीओ नहयलेण ॥ ६३ ॥ सहसच्चिय सेसोवि हु तिरोहितो किंनरीजणो
सयलो । कुमरंगरक्खसरंभभवभयुब्भंतनयणोव ॥ ६४ ॥ जावारोवियधणुहा धणुद्धरा तमणुपक्खिवंति सरे । जावुच्छलंति
तं पइ फारक्का खग्गवग्गकरा ॥ ६५ ॥ तीए ता रायसुओ नरनयणअगोयरे नहे नीओ । जाओ य गयच्छाओ परिवारो
कुमरहरणम्मि ॥ ६६ ॥ गंतुं सहाए कहियं रत्तो मित्तेहिं कुमरअवहरणं । तं सोउं सो जातो मुच्छाए अचेयणो सपिओ
॥ ६७ ॥ सिसिरकिरियासमुवलद्धचेयणो रुयइ दुहभरक्कंतो । पागयनरोव सह पिययमाए सुयविरहविहुराए ॥ ६८ ॥
हा सूरकुमर हा धवलचमरवीइयसरीर हा धीर । वुड्ढावत्थं मुत्तूण मं गओ कत्थ तं कहसु ॥ ६९ ॥ हा कुंददसण हा
विगयवसण हा ईसिहसणपरिलसण । हा कोमलकेस हहा सुवेस हा रंजियसदेस ॥ ११७० ॥ हा जणयभत्त हा
सारसत्त हा नायदेवगुरुत्त । हा पुरिसरयण हा गरिमगयण हा अमियसमवयण ॥ ७१ ॥ को जाय तुमं मुत्तुं पहाय-

नैवेद्य-
पूजायां
भुवन-
प्रमोदक-
कथा

॥ ३३ ॥

समएवि मे कमे नमिही । को वा रयणाभरणे दाही वंदीण परितुट्ठो ॥ ७२ ॥ सिंगारसुंदरंगो अप्फालितो करेण को
 कुंभं । आणंदिस्सइ पउरे करेणुकीलारसं पत्तो ॥ ७३ ॥ मंडलियमंतिसीमंतमित्तदासंगरक्खपडिहारा । कुमरावहार-
 गुरुसोयसल्लिया तत्थ कंदंति ॥ ७४ ॥ एत्थंतरंमि अत्थाणकणयथंभाउ रयणपुत्तलिया । उत्तरिया मणिमंजीरमंजुझंकार-
 रमणीया ॥ ७५ ॥ लीलाए चंकमंती पत्ता रायंतियं भणइ एवं । आयन्नसु निव सुयहरणकारणं चयसु सोयभरं ॥ ७६ ॥
 दट्ठूण सालिहंजियपुत्तलियं विम्हिओ सपरिवारो । भणइ निवो भद्दासणमलंकिउं कहसु मह देवि ॥ ७७ ॥ तो सालिहं-
 जिया सा उवविट्ठा तम्मि आसणे अहवा । “कीरइ अन्नस्स वि विणयपत्थियं किं न नरवइणो” ॥ ७८ ॥ अच्चंतविम्हिय-
 मणो सपरियणो सो निसामिउं लग्गो । कलकंठविलसिरसरा रंनो सा साहिउं लग्गा ॥ ७९ ॥ बहुसामो वि सुतारो
 सुपत्तनयसुंदरोवि नयरहिओ । अचलो विसवयावि हु वेयड्ढो अत्थि गिरिराया ॥ ११८० ॥ तत्थत्थिभूरिभूमिगभ-
 वणेहिं एकभूमिगविमाणं । सग्गंपि निज्जिणंतं रहनेउरचक्कवालपुरं ॥ ८१ ॥ नियतणुतेयविणिज्जियकणयपहो तत्थ अत्थि
 कणयपहो । खयरबई बहुविज्जाबलदुल्लिओ ललियदेहो ॥ ८२ ॥ चाईकयकणयसिरि कणयसिरीनाम अत्थि से
 कंता । देवगुरूणं पणया पणयावज्जियसयलसयणा ॥ ८३ ॥ सोहग्गेणं गोरिं रूवेण रइं सइं पडुत्तेण । अणुकुव्वंती
 कम्मा समत्थि से भुवणलच्छित्ति ॥ ८४ ॥ उव्वणजोव्वणजुत्ता विलसिरलायंनपुंनगत्तावि । असईदासीसहियावि च्छेय-
 निस्सेससहियावि ॥ ८५ ॥ कयउव्वभडंगभोगा विनट्ठनिस्सेसरोगसोगावि । विंनाणगुणवियड्ढावि थीकलाविसयपोढावि
 ॥ ८६ ॥ जणयजणणीवयंसीदासीहिं सया भणिज्जमाणावि । ण कुणइ मणयंपि मणो पुरिसं पइ वीयमोहव ॥ ८७ ॥
 कुलयं । सिंगारिखंपि पुरिसं दट्ठूणं कुट्ठियंव नियदिट्ठिं । मउलिज्जंतिं वालइ उवेयवसेण सहसत्ति ॥ ८८ ॥ चित्तट्ठियं पि
 दट्ठुं रुट्ठव नरं परंमुही होई । सिविणयसच्चवियंपि हु न नियइ पुरिसं ससुरयंब ॥ ८९ ॥ पावकहं व निवारइ कहिज्ज-

नैवेद्य-
 पूजायां
 भुवन-
 प्रमोदक-
 कथा

भीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ३४ ॥

माणिं पि पुरिसचरियकहं । कज्जेवि नरं नालवइ विहियगोवज्झमिव बाला ॥ ११९० ॥ एवरूवं दुहियं दट्ठूण विचितए
खयरराया । कस्सेसा दायवा मए नरवेसिणी कन्ना ॥ ११ ॥ दंसिज्जए इमाए जो जो सो सो वरो न पडिहाइ ।
आहारोव अरोयगरोगकंतस्स सबस्स ॥ १२ ॥ देववसा जइ जायइ सीलब्भंसो इमाए ता होइ । गोत्तम्मि गुरुकलंको
पावमिमाए अकित्ती मे ॥ १३ ॥ इय चिन्तासंतत्तो वुत्तो कन्ताए नरवई एवं । मा तम्मसु पिय पुच्छसु वरमइसय-
नाणिणमिमीए ॥ १४ ॥ बहुमन्नियपियवयणो तणयं गहिउं गओ विदेहं सो । माणिक्कपुरारामे दट्ठूणं केवलं नमइ
॥ १५ ॥ उवविसिऊणं सोऊण देसणं पत्तअन्तरो नमिउं । पुच्छइ किं मह दुहिया पट्टु पुरिसवेसिणी जाया ॥ १६ ॥
तो भणइ विमलनाणी आयन्नसु राय कारणमिमीए । जेणेसा संजाया विदेसपरा पुरिसविसए ॥ १७ ॥ सालीणजणा-
वासे रइरूवकुलंगणे जणियसोहो । हसियसरोवसरोहे सालिपुराभिहपुरे रम्मे ॥ १८ ॥ अत्थि नयज्जियबहुधणदाण-
कयत्थी कयत्थिसंघाओ । सालिप्पियाभिहाणो धणिप्पहाणो धणी विणई ॥ १९ ॥ जुयलं ॥ अवरोवि खत्तिओ तत्थ
अत्थि रणसूरनामओ चाई । नवरं तणुविहवो “नो पायं चाइम्मि वसइ सिरी” ॥ १२०० ॥ जओ—चाइयणकरपरं-
परंपरियत्तणजायगरुयखेयव । अत्था किविणघरत्था सत्थावत्था सुयंतिव ॥ १ ॥ तरसोभयहावि पिया विणयवई नय-
परा सुसीला य । ईसीसि साहिमाणा “अहव न दोसं विणा कोई” ॥ २ ॥ भत्ता पियमणुवत्तइ पियावि पइणोणुवत्तए
चित्तं । वद्धइ दोण्हवि पणओ “जइवा नेहो नयड्डाण” ॥ ३ ॥ सालिप्पियस्स कज्जाइं साहए सो वि देइ दवणं से ।
“न निओ वि कुणइ कज्जं मुहियाए किं पुनन्नजणो” ॥ ४ ॥ जं किंपि लहइ कत्थइ समप्पए आणितं पियाए सो । “पाणावि
जम्मि देया तत्थ अदेयं किमवि नत्थि” ॥ ५ ॥ सालिप्पिएण कइयावि पेसिओ सो वहुए आणयणे । चलिओ संदण-
पुरनयरम्मगमणुसरिय संनद्धो ॥ ६ ॥ पत्तो अडईए वहुमयसत्ताए वि अमयसत्ताए । जीए सचित्तकाया अमाणसंगावि

नैवेद्य-
पूजायां
भुवन-
प्रमोदक-
कथा

॥ ३४ ॥

तिरियोहा ॥ ७ ॥ तीए सो नियइ वडाइवियडविडवीहिसंकडिल्लाए । खरतरणिनिहियनयणं आयावंतं मुणिं एगं ॥ ८ ॥
दिट्ठो य तेण उप्पाडियासिरोहो भडो तमभिहणिउं । जंतो भित्तीए इव खलिओ मुणिओगहमहीए ॥ ९ ॥ उगगहमइक्क-
मेउं अतरंतो चउदिसिं परिब्भमिरो । दिंतोव भत्तिजुत्तो पयाहिणाओ मुसाहुस्स ॥ १२१० ॥ रे मुंड तुंडभंगं काउं तं
निच्छएण मारिस्सं । इय जंपिरो मुणिं पणमिउं च पडिओ अहोवयणो ॥ ११ ॥ पडियं झडत्ति खगं मुक्कं व करेण
दूरतरयम्मि । मुणिमारणअज्झवसायजायगुरुपावभीएण ॥ १२ ॥ पच्छाहुत्तं वलियं बाहुजुयं साहुवहनिवित्तं व । गंतु-
मणीहंता इव पत्ता पाया सिरे तस्स ॥ १३ ॥ जातो गीवाभंगो रुहिरं नीहरइ तस्स वयणातो । अहवा जं चित्तिज्जइ
परस्स तं अत्तणो एइ ॥ १४ ॥ उद्धट्ठियंमि खग्गे उच्छलिओ सो तयग्गमारूढो । परिभमइ गुरुरएणं वंसारूढो नड-
नरोव ॥ १५ ॥ एत्थंतरे अणब्भा विज्जुव नहाओ झत्ति अवइंना । एक्का अमरी पिंजरियदिसिमुहा देहदित्तीए ॥ १६ ॥
कुंडलकिरीडकेऊरकडयहारोहसोहधरदेहा । तिपयाहिणिउं नमिउं च सा ठिया साहुणो पुरओ ॥ १७ ॥ दट्ठूण तमच्छरियं
रणसूरो मुणिसमीवमल्लीणो । पणमिय कयंजलिउडो उवविट्ठो समुचियट्ठणे ॥ १८ ॥ एत्थंतरे निसंनो उस्सग्गं पारिऊण
साहूवि । भणियं च देवयाए पुणरुत्तं पणमिऊणमिमं ॥ १९ ॥ पट्ठु अहमिमाए अडईए सामिणी इह समागयेण तए ।
नूणं कया पवित्ता असमप्पसमेकरसिएणं ॥ १२२० ॥ एसो हु पच्चणीओ पावप्पा कोइ तुम्ह हणणत्थं । इंतो एवं-
विहिओ मए अदिस्साए खलिऊण ॥ २१ ॥ भणइ मुणी कयकरुणा देवि इमं मुयसु जाव नो मरई । उवसग्गगहण-
कज्जे आगच्छामो वयं जमिह ॥ २२ ॥ साहूणमलंकारो खंतिच्चिय देवि नो पुणो कोवो । उवसग्गपरे नूणं तीए विसओ
जओ भणियं ॥ २३ ॥ जं खमसि दोसवंते सो तुह खंतीए होइ अवयासो । अह न खमसि को तुह अविसयाए खंतीए
वावारो ॥ २४ ॥ मुत्तुं मुणिमज्जायं कोवं थोवंपि जइ जई कुणइ । ता सुयतवाइ सबं निरत्थयं तस्स जेणुत्तं ॥ २५ ॥

नैवेद्य-
पूजायां
भुवन-
प्रमोदक-
कथा

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ३५ ॥

पठउ सुयं धरउ वयं कुणउ तवं चरउ बंभचेराइ । तहवि तयं सवंपिहु निरत्थयं कोववसयस्स ॥ २६ ॥ अम्हाण देवि
एयं वयसवस्सं रिउंमि कुविएवि । अक्कोसाइ कुणंते लाहोत्ति विभावणं जेण ॥ २७ ॥ अक्कोसहणणमारणधम्मब्भंसाण-
वालसुलभाण । लाभं मन्नइ धीरो जहोत्तराणं अभावम्मि ॥ २८ ॥ अम्हाण मोक्खपुरपत्थियाणमेएण काउमारद्धं ।
साहेज्जमओ एसो उवयारी मुंच ता एयं ॥ २९ ॥ सोऊण साहुदेसणमसमप्पसमामयप्पवहसरिसं । रंजियहियया देवी
पयंपिउं एवमारद्धा ॥ १२३० ॥ धन्नोसि तुमं मुणिरयण तिबतवतेयलद्धिजुत्तोवि । काउं खममिमवयारयंपि मित्तं व
मोइंतो ॥ ३१ ॥ एवं पसंसिय मुणिं अदिट्ठबंधाउ तं भडं मुत्तुं । धम्ममइ संजाया देवी सहसत्ति मुणिवयणा ॥ ३२ ॥
सोवि भडो पयलगो अवराहं खामए नियं मुणिणो । “दूरंपि पाणदाया पुज्जो अवरोवि उवयारी” ॥ ३३ ॥ भणइ य तइ
सोमेवि हु सच्चविए कलुसियं मणो मज्झ । अमरकरे वि हु दिट्ठे कमलं संकुयइ जमजोगं ॥ ३४ ॥ मारणपरे रिउ-
म्मिवि तुह पहु हियए पवट्ठिओ पसमो । दाहकरेवि निदाहे सीयं चिय होइ हिमसेले ॥ ३५ ॥ ता मज्झ देहि दिक्खं
पावाओ इमाओ नन्नहा मोक्खो । “वेरग्गे जं न कयं नूणं तं दुक्करं पच्छा” ॥ ३६ ॥ तो से दिन्ना दिक्खा मुणिणा देवीए
अप्पिओ वेसो । धम्मज्जयम्मि जइवा मूलं मोक्खस्स साहेज्जं ॥ ३७ ॥ नवदिक्खियं पसंसिय सट्ठाणे देवया गया
इत्ति । दट्ठूण तमच्छरियं भणइ मुणिं नमिय रणसूरो ॥ ३८ ॥ दुक्करदिक्खाए ते मज्झमसत्तस्स कहसु गिहिधम्मं ।
“दिज्जइ न जओ दुद्धं रोइंमि रसाहिए अहवा” ॥ ३९ ॥ भणइ मुणी गयरायं देवं आयरसु उज्झिय सरायं । मुत्तूण
कामधेणुं किं गिण्हइ गइहिं कोवि ॥ १२४० ॥ नाणालोए गुरुणो गिण्हसु रविणोव जयपवित्तकरे । परिहरिऊण कुगुरुणो
वहलनिसीहेव तमबहुले ॥ ४१ ॥ अंगीकरेसु धम्मं सोक्खकरं दुहयरं चइय पावं । मुत्तुमजरमरममयं को मच्चुकरं गरं
गिलइ ॥ ४२ ॥ कप्पदुमं व वंछियफलं आयरसु उत्तमं तत्तं । किंपागं पिव संमोहकारयं मा पुण अतत्तं ॥ ४३ ॥

नैवेद्य-
पूजायां
भुवन-
प्रमोदक-
कथा

॥ ३५ ॥

चत्तारिवि एयाहं सुदेवगुरुधम्मतत्तरूवाहं । नारयतिरियनरामरगईउ चउरो अवहरन्ति ॥ ४४ ॥ एयं पवयणसारं काउ-
मसत्तो समग्गमवि भवो । एकंचिय जिणपूयं कुणंति भव्वा जिणिंदाण ॥ ४५ ॥ सव्वाओ वि य सत्तो काउं नेवज्जपूयमे-
कंपि । कुवंतो दुक्कम्मं पाणी पडिहणइ सबंपि ॥ ४६ ॥ भुज्जइ जंवा तंवा रविउदयत्थमणमज्झयारम्मि । दिज्जइ जिणस्स
ता भो कयाइ थोवंपि पुन्नकए ॥ ४७ ॥ पाविज्जइ परलोए अणंतमप्पंपि इहभवे दिन्नं । धन्नं ववियं थोवंपि फलइ तं नूण
बहुगुणियं ॥ ४८ ॥ नियविहवसमुचिएहिं महुराहारेहिं मोयगाईहिं । जिणमच्चन्ता सासयतित्तिं पावन्ति भणियं च ॥ ४९ ॥
“खणतित्तिएण लब्भइ नेवज्जेणं जमक्खया तित्ती । तं सासयसिवसुहतित्तिं तित्थनाहस्स माहप्पं” ॥ १२५० ॥ ता जइ
सासयसिवसुहतित्तिं वंछसि अहो महासत्त । ता कुणसु देवपूयं दाउं भत्तीए नेवज्जं ॥ ५१ ॥ सो आह अज्ज पत्ता चिंता-
मणिकामधेणुकप्पदुमा । रंनम्मिवि जं जायं मह पहु तुहदंसणममोहं ॥ ५२ ॥ ता इहपरलोयहियं कहियं तुब्भेहिं जं तयं
काहं । को नाम सिरिमुर्विति प्हणइ पायप्पहारेण ॥ ५३ ॥ इय जंपिय नमिय मुणिं चलिओ संदणपुरम्मि संपत्तो । मोया-
विय सालिप्पियवहुयं गहिउं तयं वलिओ ॥ ५४ ॥ गुरुवेयवाहणेहिं थेवदिणेहिं पि नियपुरे पत्तो । पणमित्तु मोयगा
सासुयाए बहुयाए उवणीया ॥ ५५ ॥ तीए वि सयणभवणेसु पेसिया समुचियक्कमेणं ते । अहवा उचियायरणं कुलंगणाणं
कुलायारो ॥ ५६ ॥ बहुदक्खेलानालियरक्खंडकप्पूरमिस्सिओ एगो । दिन्नो रणसूरस्सावि मोयगो माणयपमाणो ॥ ५७ ॥
बंधुरगंधं तं गिणिहऊण लग्गो सगेहमग्गे सो । अंतो रमतसद्धम्मपरिणई चिंतए एवं ॥ ५८ ॥ एएण भक्खिएणं जाव-
ज्जीवं न होहिही तित्ती । जाव मुहे ता सुरसो एसो पोट्टंगतो असुई ॥ ५९ ॥ ता इमिणा सुरसेणं भक्खेण करेमि
देवनेवज्जं । जं मह पच्छा दुलहो एवंविह उत्तमाहारो ॥ १२६० ॥ इय चिंतिऊण वलिउं चलिओ मग्गे जिणिंदभवणस्स ।
“अहव पमातो काउं किं जुज्जइ धम्मकम्मम्मि” ॥ ६१ ॥ गच्छंतो संपत्तो जिणालयं नियइ सुरविमाणंव । अनिलचलद्धय-

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ३६ ॥

रणझणिरकिंकिणीनियररमणीयं ॥ ६२ ॥ जम्मि जिणसम्मुहानिलचालियबलिनिहियसेयकुसुमाइं । पूएउंव जिणिंदं जंताइं
जवेण सोहंति ॥ ६३ ॥ पुण्फोवहारचुंबणपराइं बहुचंचरीयचक्काइं । जम्मि जिणवंदयतुट्टकम्मनियलाइंव सहन्तिं
॥ ६४ ॥ तम्मि पविट्ठो पेच्छइ पसंतकंतं जिणेसरं रिसहं । जय जय जय तिजयपहुत्ति जंपिरो नमइ भत्तीए
॥ ६५ ॥ चित्तब्भंतरअसमुल्लसंतबहुमाणजायरोमंचो । आणंदवसपवित्तं सुविसरजलधोयगंडयलो ॥ ६६ ॥ तं पाव-
मोयगं मोयगं सयं मुयइ सामिकरकमले । सहलत्तं कलयंतो सजम्मजीवियनरत्ताणं ॥ ६७ ॥ पुणरवि पणमित्तु पहुं
खोणीमंडलमिलन्तभालयलं । पत्तो निययावासे सो उक्कंठियपियापासे ॥ ६८ ॥ अन्नोन्नं मिलियाणं ताणुप्पन्नो महासु-
हुक्करिसो । “अवरे वि निए मिलिए होइ सुहं किं न कंताए” ॥ ६९ ॥ कइया वि तस्स कंता वुत्ता सालिप्पियप्पिय-
यमाए । किं रूवरसो सो तुह पियस्स जो मोयगो दिन्नो ॥ १२७० ॥ तं सोउं सा चिंतइ किं मह न पिण्ण दिन्न-
मद्धंपि । “जइवा न वल्लहेवि हु लोहपराणं हवइ नेहो” ॥ ७१ ॥ नियघरजुत्ताजुत्ता वत्ता नन्नस्स साहिउं जुत्ता । इय
चित्तिय तीउत्तं अच्चंतं तम्मि रसवत्ता ॥ ७२ ॥ धणरहियाणवि गेहे लोओ पेसइ जमुत्तमं वत्थुं । किं पुण ससुरकु-
लम्मि वि सेसओ तम्मिवि धणट्ठे ॥ ७३ ॥ इय जंपिय नियगेहे पत्ता पियविसयजायअवमाणा । विप्फुरियफारअरई
उवविट्ठा दूरमुब्बिगा ॥ ७४ ॥ वामकरक्खित्तमुही सरलस्सासा अलद्धलक्खत्थी । पियगयअणप्पकुवियप्पकप्पणुप्पन्न-
संतावा ॥ ७५ ॥ चिंतइ पिण्णमविभइय मज्झ न कयाइ अत्तणा भुत्तं । अज्जं तु सुयमिमं “नो दीसइ किं जीवमाणेहिं”
॥ ७६ ॥ तं चिय निवससि महमाणसंमि न तरामि तं विणा ठाउं । इय मायावयणेहिं अहमप्पवसा कया तेण ॥ ७७ ॥
धुत्तपउत्तीहिं नरा एवं रमणीओ वेलवेऊण । निम्मल्लमालियाउव कयकज्जा ज्झत्ति उज्झंति ॥ ७८ ॥ मंदमईओ अविवेइ-
णीओ तुच्छाओ अपढियसुयाओ । वरईओ विप्पयारिय विडा विडंबंति विलयाओ ॥ ७९ ॥ जेत्तियमेत्ता विज्जा हुंति

नैवेद्य-
पूजायां
भुवन-
प्रमोदक-
कथा

॥ ३६ ॥

पवंधावि तेत्तिया नूणं । तो पुरिसेहिं सवसयाओ सुद्धमहिलाओ कीरंति ॥ १२८० ॥ दुबिलसियाइं काउं कुवियपियाए तमुत्तरं दिंति । नियसच्छयाए सवा(सच्चा) इमेत्ति मंनंति तो ताओ ॥ ८१ ॥ इय चिंतावसअच्चंतजायवरविसयविस-यविद्देसा । तं चेव गरुयवेरग्गकारणं धरइ हिययंमि ॥ ८२ ॥ पइविद्देसवसाएवि तीए मुक्कं न विनयकरणिज्जं । “लंघंति न रुद्धाओवि कुलवहुयाओ कुलायारं” ॥ ८३ ॥ तेणेवय वेरग्गेण भत्तुणो मोइऊणमत्ताणं । पडिवन्ना बालतवं नवरं न मुयइ पिण्णुसयं ॥ ८४ ॥ रणसूरो पुण सरलस्सहावओ सरइ नियगुरुक्कमणे । दीणाइयाण दाणाइं देइ न करेइ अन्नायं ॥ ८५ ॥ एवं मज्झिमपरिणामवससमज्जियनराउ निवरिद्धी । मरिऊण भुवणतिलयाभिहपुरनिवनंदणो जाओ ८६ ॥ तब्भज्जावि तवज्जियविज्जाहररिद्धिभोयसंभारा । मरिय सुया तुह जाया रहनेउरचक्कवालपुरे ॥ ८७ ॥ पुबिल(ल)भवम्मि मया पुरिसवेसेण संजुया जमिमा । इह जम्मेवि तमुवहइ तुह सुया निव नरवेसं ॥ ८८ ॥ भणियं केवलिणा नहयरिंद तुह कंनयाए पुरिसम्मि । विद्देसकारणमिमं पयासियं पुच्छमाणस्स ॥ ८९ ॥ तं सोउं जाईस-रणनाणविन्नायनियभवा भणइ । पहु तं तहेव सच्चं तुब्भेहिं जहा समक्खायं ॥ १२९० ॥ तो सो ससुओ नयकेवली गओ नियपुरे खयरराया । जाया य निट्ठियप्पा नियाभिमाणे भुवणलच्छी ॥ ९१ ॥ चिंतइ महाणुभावेण तेण तइया न विरइयमजुत्तं । जं मोयगेण विहिया पूया देवाहिदेवस्स ॥ ९२ ॥ तइया दइए सरले वि दुबियप्पं पक्कप्पमाणीए । महिलाण मए पयडीकयं धुवं तुच्छपयइत्तं ॥ ९३ ॥ जइ हं तं पुच्छंती ता सो तइयावि मह पयासंतो । जं पुच्छिण्ण तेणं कयाइ वट्ठोत्तरं न कयं ॥ ९४ ॥ इय चिंतंती जाया पियम्मि पोढाणुराइणी बाला । नियदुबिलसियसुमरणउब्बि-विरफुरियरणरणया ॥ ९५ ॥ चत्तो रत्तोवि पिओ भवम्मि पुवे इमाए कुवियप्पा । इय चिंतिय कुविण्णव कामेण सरेहिं पइया सा ॥ ९६ ॥ दाहो वाहो कंपो हियए नयणेसु देहजट्ठीए । तवेलंचिय तीए संजाया सत्तिया भावा ॥ ९७ ॥

नैवेद्य-
पूजायां
भुवन-
प्रमोदक-
कथा

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ३७ ॥

अरईसूयगसिक्कारवसविणिक्खंतरत्तदंतपहं । हिययंमि अमायन्तं उवमइ पियाणुरायं व ॥ ९८ ॥ असुहपसरप्पकंपिर-
करजुयनहसुत्तिकंतिपसरेण । धवलंती चंदणरसपंकेणव ताविलं देहं ॥ ९९ ॥ इय पसरियनियपियविरहतावदावगि-
दज्झमाणतणू । उवैयावेयवसा बाला कट्ठं दसं पत्ता ॥ १३०० ॥ गरुयाणुणयपुरस्सरपुच्छंतसहीण साहिओ तीए ।
पुवप्पियम्मि भुवणप्पमोयगे निवसुए नेहो ॥ १ ॥ भणई य जइ तमहं पुवभवपियं हे सहीओ न लहेमि । देमि धुवं
ता जलणस्स आहुइं नियसरीरेण ॥ २ ॥ नहयरनाहस्स सहीहिं साहिओ तीए निवसुए राओ । तो से तोसो जाओ
सुयाए कुमराणुरत्ताए ॥ ३ ॥ जंपइ पन्नत्तिं देवयं निवो देवि आणसु कुमारं । अच्चाहियं न जायइ जा महजीवियस-
मसुयाए ॥ ४ ॥ तो इह देवी पत्ता पत्ते कुमरम्मि रम्ममुज्जाणं । काऊण किंनरीपेच्छणच्छलं तीए हरिओ सो ॥ ५ ॥
नेउं रहनेउरचक्कवालनयरम्मि नहयरिंदस्स । सो उवणीओ तीए सह कुमरीए पमोएण ॥ ६ ॥ कयगोरवेण कुमरस्स
राइणा कहिय कंनयाचरियं । भणियं पुवभवपियं परिणसु तं वच्छ मह दुहियं ॥ ७ ॥ तं सोउं जाईसरणनायनियपुव-
जम्मवुत्तंतो । जंपइ तए जमुत्तं काहं सबंपि तं किंतु ॥ ८ ॥ हरिए मए ममंबापिऊण जायं भविस्सइ दुहंतं । जेण न
होहिंति पट्ठणि ताणि नियपाणधरणस्स ॥ ९ ॥ तयणु नहयरनिवेणं कुमारकुसलप्पउत्तिकहणकए । तुम्हंतियम्मि पंन-
त्तिदेवया पेसिया एत्थ ॥ १३१० ॥ एयं समहिट्ठिय सालिभंजियं कणयथंभयग्गाओ । अवयरिय मए कहिओ तुह
सुयअवहरणवुत्तंतो ॥ ११ ॥ इय भणिऊणुच्छलिउं सट्ठाणे सालिहंजिया पत्ता । अत्थाणजणो सबोवि विम्हिओ नरव-
इप्पमुहो ॥ १२ ॥ जंपंति सबसामंतमंतिणो देव पेच्छ अच्छरियं । जं जंपंति सजीवारमणीओव रयणपडिमाओ
॥ १३ ॥ देवोच्चिय पुन्नपयं जस्स सयं खेयरी ठिया बहुया । किं कामदुहा धेणू अभदनरगेहमल्लियइ ॥ १४ ॥ एवं
जंपंताणं ताणं सो वासरो वइकंतो । माणियसुहनिदाणं झडित्ति रयणिवि अवसरिया ॥ १५ ॥ काऊण दिणयरोदय-

नैवेद्य-
पूजायां
भुवन-
प्रमोदक-
कथा

॥ ३७ ॥

करणिज्जं रइयरम्मसिंगारो । उवविसइ सहाए निवो नमंतसामंतमन्तियणो ॥ १६ ॥ एत्थंतरे निलचलइयावलीरण-
 झणन्तकिंकिणियं । मणिकिरणभरियभुवणं विमाणविंदं समणुपत्तं ॥ १७ ॥ गयणंगणमुक्कविमाणचक्का नीहरिय नहरय-
 निवेहिं । अणुगम्मंतो सालयभुयलगो आगओ कुमरो ॥ १८ ॥ अत्थाणसन्निविट्ठं जणयं पणमइ महिमिलियमउली ।
 तेणावि गाढमालिं गिऊणमापुच्छिओ कुसलं ॥ १९ ॥ पुणरुत्तं पणमिय भणइ ताव कुसलं तुहप्पसाएण । कयजणपिय-
 प्पणई उवविट्ठो पिउपयासन्ने ॥ १३२० ॥ सह नहयराहिवइणा रंना काऊणमुचियपडिवत्तिं । उववेसिओ निए सो
 मणिमयसीहासणद्धम्मि ॥ २१ ॥ सेसावि खयरपहुणो पणमिय दिन्नासणेसु उवविट्ठा । पण्याए बहुआए भव पुत्तवइत्ति
 भणइ निवो ॥ २२ ॥ तो सा पणमित्तु कुमारमायरं वामपासमुवविट्ठा । सुयहरणाविणयं खमसु राय इय भणइ खय-
 रवई ॥ २३ ॥ जइ न हरावेंतो हं तणयं ता सुया मरंती मे । विहिओ मए अनाओ इमो सुयाजीवणनिमित्तं ॥ २४ ॥
 रायाह एस अनओ न होइ खयरिंद नणु इमा नीई । “समयाणुवत्तणं बहुगुणं च जं सो नरिंदनओ” ॥ २५ ॥ खयरा-
 हिव बहुसुहमिच्छिरेहिं कट्ठं सहिज्जए थोवं । किमणंतसिवसुहत्थे कट्ठं न कुणंति मुणिवसहा ॥ २६ ॥ विणओच्चिय एसो
 अविणओवि अहियं नरिंद तुह मन्ने । कन्ना तए विइन्ना जं मह भूगोयरसुयस्स ॥ २७ ॥ इय जंपिय सम्माणो तस्स
 कतो राइणा खयरपहुणो । परिवारजुयस्स जहा सविम्हओ सो ट्ठिओ दूरं ॥ २८ ॥ एवं नरवरसम्माणकरणसंजा-
 यसमहियसिणेहा । ठाऊणं दिवसदुगं सट्ठाणे खेयरा पत्ता ॥ २९ ॥ नवकंतासंजुत्तो विविहविणोएहिं कीलइ कुमारो ।
 उवविसइ य अत्थाणे पिउपासे उभयसंझंपि ॥ १३३० ॥ कइयावि परभवोच्चियसुकज्जकरणज्जएण नरवइणा । गुरुरिद्धि-
 वित्थरेणं कुमरो अहिसिंचिओ रज्जे ॥ ३१ ॥ तो मोहमल्लनामस्स सूरिणो पायपउममणुसरिउं । गहिया दिक्खा रंना
 तविय तवं सो सिवं पत्तो ॥ ३२ ॥ नवनिवई वि नएणं पालेइ पयं विणिग्गहइ दुट्ठे । समुवज्जइ विमलजसं कुणइ य

नैवेद्य-
 पूजायां
 भुवन-
 प्रमोदक-
 कथा

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ३८ ॥

सद्वन्मकिरियाओ ॥ ३३ ॥ कइयावि रणज्झणमाणकिंकिणीगणविमाणमारुहिउं । गंतुं मंदरनंदीसरेसु सासयजिणे
थुणइ ॥ ३४ ॥ सुहसिविणसूइयसुयं कइयावि प्पसविया भुवणलच्छी । भुवणाभरणोत्ति कयं नामं सम्माणिय जणं
से ॥ ३५ ॥ बालत्तमइक्कंतो गाहियवावत्तरीकलो कुमरो । अच्चन्भुयरूवातो विवाहितो रायकन्नातो ॥ ३६ ॥ समयं-
तरम्मि रज्जे भुवणाभरणं निवेसिउं राया । विहियवओ वरनाणी होउं पत्तो महाणंदं ॥ ३७ ॥ नेवज्जेणं पूया जहा
कया राइणा इमेण तहा । सासयसिवसुहकज्जे कज्जा अवरेणवि जणेण ॥ ३८ ॥ ॐ ॥ नैवेद्यपूजा ॥ ॐ

卐 卐 卐 卐 卐 भुवणप्पमोयगनिवो कहिओ नेवज्जपूयमभिसरिउं । इण्हि तु वासपूयाए गंधबंधुरकहं भणिमो ॥ ३९ ॥ 卐 卐 卐 卐 卐

रम्मारामसरोवरपुक्खरिणिविरायमाणचउपासं । वसुहासारं नयरं समत्थि वित्थिन्नपायारं ॥ १३४० ॥ नहस-
न्निहफालिहगयणलग्गजिणहरसिरग्गमग्गठिओ । खणमेत्तं लक्खिज्जइ जम्मि रवी रयणकलसोव ॥ ४१ ॥ रयणियर-
किरणसियकित्तिबंधुरो कित्तिबंधुरो नाम । फुरियप्पयावपसरो पयावइ अत्थि तत्थ पुरे ॥ ४२ ॥ धरणिधररइयसेवो
जो विजयाणंदकारओ दूरं । अहिजाइकयविणासो चिरायए गरुडपक्खिव ॥ ४३ ॥ सबुत्तमपत्ताहियच्छायापरमालिया
सुहप्पसवा । लइयव कित्तिलइया समत्थि रन्नो महादेवी ॥ ४४ ॥ तीएत्थि तणुत्थसुगंधबंधुरो गंधबंधुरो नाम ।
कुमरो अमरोवमरूवरम्मयारमणिमणहरणो ॥ ४५ ॥ सुकया सियवन्नधरं सिरंव उव्वइ जो नियसरीरं । परमहसिय-
गुणजुत्तं मुहमिव रयणाभरणजायं ॥ ४६ ॥ नरनाहमंडलेसरसामंतमहन्तमंतिपुत्तेहिं । सययं सेविज्जंतो कालं
अइवाहइ कुमारो ॥ ४७ ॥ कइयावि नियप्पासायचंदसालागवक्खमल्लीणो । विविहविणोयक्खित्तो जा चिट्ठइ सह
वयस्सेहिं ॥ ४८ ॥ ताव सहसत्ति एगो कीरो नियपक्खनीलकन्तीए । हरियालीकलियंपिव नहं कुणंतो समणुपत्तो ॥ ४९ ॥

वासपूजायां
गन्धबन्धुर-
कथा

॥ ३८ ॥

वासपूजायां
गन्धबन्धुर-
कथा

अच्छरियं जणयन्तो जणस्स कुमरकमे नमेउं सो । महुरगिरं पयडक्खरमेवुं विन्नविउमारद्धो ॥ १३५० ॥ आरामाहिय-
वासो रायसुओ रत्तवयणविन्नासो । तुममिव कुमर अहंपि हु तेणाहं तं समल्लीणो ॥ ५१ ॥ ता आयन्नसु कज्जेणमागतो
जेण विन्नवेमि तयं । निक्कज्जाओ पवित्तीओ हुंति जइवा न सउणाण ॥ ५२ ॥ तं सोऊण पयंपइ कुमरो कीराहिराय
उवविसिउं । रयणासणम्मि साहसु तो सो उवविसिय साहेइ ॥ ५३ ॥ अत्थिरयाहियतुरयं अत्थिरयाहियसुवन्न-
वरदाणं । अत्थिरयाहियजणं उदयाणंदाभिहं नयरं ॥ ५४ ॥ तम्मि नमिरनरेसरसिरसोणमणिप्पहापिसंगपओ । उदि-
यप्पयावराया समत्थि वित्थरियजसपसरो ॥ ५५ ॥ सच्छप्पयई कालुस्सहारिणी सारसोहसंजुत्ता । उदयावलिव
उदयावली पिया अत्थि नरवइणो ॥ ५६ ॥ विलसंतविमलसंखाकयसयवत्तालिचक्खसंखोहा । उदयस्सिरित्ति उदय-
स्सिरिव तीए समत्थि सुया ॥ ५७ ॥ सरलसहावा नियनासियव सिहणस्सिरिव सुपवित्ता । दूरं रत्तं अहरं व धरइ
जा वयणविन्नासं ॥ ५८ ॥ निरुवमरूवं कमणीयजोवणं तं समग्गसोहग्गं । अवलोइउं जुवाणा वहंति दूरं मणुम्मायं
॥ ५९ ॥ दट्ठूण तट्ठहरिणच्छिपेच्छियं तीए नीइनिउणा वि । मुणिणोवि अणप्पवसा हवन्ति किं निब्विवेयातो
॥ १३६० ॥ कइयावि सा सहीयणसहिया सिंगारगारवग्घविया । आरुहिय कणयमणिमयसुहासणं चलिरसियचमरा
॥ ६१ ॥ मुत्तावचूलविलसंतलत्तअंतरियतरणिकरपसरा । सहयारसारमुज्जाणमागया कीलिउं बाला ॥ ६२ ॥ परि-
पक्कफुट्टदाडिमबीयावलिनिद्धदन्तपंतीहिं । हसइव जं नरेसरसुयासमागमणतोसेण ॥ ६३ ॥ विलसंतकुसुमलइयासिय-
कलियाचक्कवालकलियं जं । कुमरीसंगवसुल्लसियपुलयपब्भारभरियंव ॥ ६४ ॥ अंबयवणकयलीहरदक्खामंडवमणोमि-
रामंमि । तंमि पविट्ठा बहुकुसुमपरिमलब्भमिरभमरंमि ॥ ६५ ॥ पेच्छइ अतुच्छअच्छरियकारयं नरमुहं मऊरं सा ।
विलसिरसुतारचंदयविरायमाणं नहयलंब ॥ ६६ ॥ मुत्तावलइयमरगयकुंडलकरच्छुरियनिम्मलकवोलं । चंदणमयणा-

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ३९ ॥

हीरेहरइयबहुभंगिपत्तंव ॥ ६७ ॥ भमरउलकालकुंतलधम्मिल्लुल्लसियसियकुसुममालं । सामचउदसिनिदिसिदिस्सविमलरय-
णीयरकलंव ॥ ६८ ॥ दट्ठं कुमरिं नियचरणचारुसंचाररणिरघघरिओ । गंतूण संमुहो भणइ कुमरि तुह सागयं एत्थ
॥ ६९ ॥ एहि इहं च वणंतो कयलीहरए सदक्खमंडवए । उवविसिउं आयन्नसु जं किंपि अहं तुह कहेमि ॥ १३७० ॥
तं अवलोइय अच्चब्भुएकहेउं सहीउ सा भणइ । कोऊहलमवलोयह जमिमो दीसइ नरमऊरो ॥ ७१ ॥ तह वाहरइ
सविणयं मं किंपि हु मज्झ कहिउमिच्छन्तो । ता तं आयन्नेमो उववसिउं साहए जमिमो ॥ ७२ ॥ जंपंति ताउ सामिणि
तुम्हाऽऽणच्चिय पमाणमम्हाण । कज्जेसु समग्गेसु वि किं पुण एवंविहच्छरिए ॥ ७३ ॥ तं सोउं मुक्कसुहासणावि कुमरी
सुहासणे ठाइ । उवविट्ठासु सहीसुं कहिउं लग्गो नरमऊरो ॥ ७४ ॥ अत्थि गरिट्ठसुरट्ठाविसिट्ठवसुहावयंससंकासं ।
वसुहावयंसयं नाम नयरमइरम्मरमणियणं ॥ ७५ ॥ रयणावयंसयनिवो तं पालइ जो रणागयंपि रिउं । अस्सत्थ-
मुभयहाविहु मुंचइ अस्सत्थमवि सदओ ॥ ७६ ॥ तत्थ निवमाणणिज्जो पुज्जो पउराण पउरगुणभवणं । दीहरदिट्ठी सेट्ठी
निवसइ नयवद्धणो नाम ॥ ७७ ॥ तस्सत्थि भाइपुत्तो सुरूववंतो धणावहो नाम । उवरयजणउत्ति करेइ तस्स
गुरुगोरवं सेट्ठी ॥ ७८ ॥ मुत्तूण नियंगरुहे वियरइ वत्थाइ तस्स परमं से । अहव “गुरुयासयाणं अप्पपरवियारणा
नत्थि” ॥ ७९ ॥ परिणाविओ य उम्मीलमाणनवजोवणाभिरामतणुं । धणसेट्ठिसुयं नामेण धणवइं सीलकुलभवणं
॥ १३८० ॥ कइयावि हु असुहोदयवसओ सो सेट्ठिमाह मह ताय । वियरसु घरस्सिरीए अद्धं भिन्नो भविस्समहं
॥ ८१ ॥ तं सोऊण पयंपइ सेट्ठी किं वच्छ एवमुल्लवसि । तं मोत्तुं को अंनो घरस्सिरीसामिओ कहसु ॥ ८२ ॥
अच्चब्भुयभोयअमाणदाणकज्जे धणवयं कुणसु । अणुकूलंमि मए वच्छ तुज्झ को नाम पडिकूलो ॥ ८३ ॥ अवरं च
तमेगागी पडिवालसु जाव पुत्तउप्पत्तिं । नूणं जं न मुणेमो वियंभियं विहिविलासस्स ॥ ८४ ॥ इय जंपिओवि न मुयइ

वासपूजायां
गन्धबन्धुर-
कथा

॥ ३९ ॥

वासपूजायां
गन्धबन्धुर-
कथा

कुग्गाहं तयणु ससुरयस्सावि । न कुणइ भणियमजोग्गाणहवा कत्तो गुणाहाणं ॥ ८५ ॥ तो एगंते कंताए जंपिओ नाह
एव किं भणसि । मा पेच्छसु अच्छीहिं हियएण सुदीहमिक्खेसु ॥ ८६ ॥ निंञ्चितं संपज्जइ सवंपि ठियाण गुरुसमीवंसि ।
लवणंपि सचिंताए भविही भिन्नट्टियाण पुणो ॥ ८७ ॥ कस्सइ पुत्तेण इमा लच्छी उल्लसइ नज्जइ न एयं । ता का
नाम कुबुद्धी तुम्हाणं भवह जं भिन्ना ॥ ८८ ॥ इय तीउत्तो जंपइ तुच्छमई तं न पेच्छसि किमेयं । अहमेगागी एयं
गरुयकुडुवं सिरी जाइ ॥ ८९ ॥ इय जंपिय सेट्टिसयासओ सिरिं विभइउं ठिओ भिन्नो । कारावियं च गरुयं
तिभूमियं तेण धवलहरं ॥ ९० ॥ पारद्धो ववहरिउं जलथलमग्गेसु भूरिदविणे स । बुद्धिनिमित्तं दितो दवं पहुयाइवी
न लेइ ॥ ९१ ॥ तुरयारूढो माऊरल्लत्तअंतरियतरणिसंतावो । हिंडइ वणिउत्तवूहावेठिओ रम्मासिंगारो ॥ ९२ ॥ नो
सयणाण न मित्ताण नेव लिंगीण जायगाणवि नो । वियरइ कस्सइ किंपि हु दितिं दइयंपि वारेइ ॥ ९३ ॥ कूडव-
वहारेहिं हत्थं चिय वच्छ गच्छिही लच्छी । इय सेट्टिपउत्तो भणइ ताय सगिहं विचिंतेसु ॥ ९४ ॥ गहियधणाओ
लोगोवि किंपि से देइ सेट्टिलज्जाए । “दूरे गुरुण आणा तेसिं लज्जावि सिरिजणणी” ॥ ९५ ॥ देव(व)वसेणं कालक्कमेण
पंचत्तमुवगओ सेट्ठी । पच्छा सो निस्संको अहियअरे कुणइ ववहारे ॥ ९६ ॥ अह तस्स असुहवसओ सिरी समग्गावि
नासिउं लग्गा । मग्गिजंतो लोगो दुवयणे देइ नो दवं ॥ ९७ ॥ देसंतरेसु वि ठिया वणिउत्ता जायभूरिधणलाहा । दिट्ठावि
लोहिउमलं लच्छी किं नो सहत्थगया ॥ ९८ ॥ सो निक्खिणिही नूणं दाहइ न कयाइ मं सुपत्ताण । इय भीयव
सिरी भिन्नपवहणा सायरे मग्गा ॥ ९९ ॥ देइ न कणंपि कस्सइ एसो बहुधन्नसंगहपरोवि । इय भाविअ कुविण्णव
दड्ढा जलणेण कोट्टारा ॥ १०० ॥ नवि जाओ नयभोगो किमस्स ता निरुवयारिदविणेण । इय चिंतिऊणव तयं
नीयं खत्तेण चोरेहि ॥ १ ॥ इंगालच्चिय जाया धणे निहाणीकए कुक्कम्मवसा । अवरदविणज्जणासा कुओ करत्थे विण-

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
शृजाष्टकम्
॥ ४० ॥

स्सन्ते ॥ २ ॥ सयमवि दिन्नं न लहइ जणाओ कत्तो कलंतरधणं सो । “उयरट्टियतणयासा का अंगुलिलग्गसुयमरणे”
॥ ३ ॥ मग्गियजणनीयाइं न मग्गमाणोवि लहइ रित्थाइं । नियवत्थुं न लब्भइ जत्थ कहिं तत्थ परवत्थुं ॥ ४ ॥
ससुरेणावि विइन्नं बहुवाराओ धणं तयंपि गयं । “पत्तावि सिरी ज्झिज्झइ नूणमकल्लाणकलियाण” ॥ ५ ॥ किं बहुणा
संजायं दवं सबंपि से कहासेसं । तो दट्ठुं सीयंतं कंतं कंता विहियविणया ॥ ६ ॥ उल्लवइ दइय तइया न कयं कस्सावि
जंपियं तुमए । जइवा दइवाभिहयाण होइ एवंविहकुबुद्धी ॥ ७ ॥ इय जंपिऊण तीए ववहारकए समप्पियं पइणो ।
निययाभरणं अहवा “पइभत्ता होइ कुलकंता” ॥ ८ ॥ तंपि हु कइवि हु दिवसेहिं पेसियं तेण पुव्वधणमग्गे । अहवा जं जं
खिप्पइ हुयासणो दहइ तं तंपि ॥ ९ ॥ पच्छारच्छाइंवि विक्किऊण भुत्ताइं तेण सवाइं । आयविहूणे वित्ते वइज्जमाणे
कुओ रिद्धी ॥ १४१० ॥ घरहट्ठोवरि गहिऊण कंचणे भक्खियंमि तेसिंपि । मुक्को अहव अभग्गाण जाइ पिउदिन्न-
मवि रज्जं ॥ ११ ॥ जोसिं देयं दवं न तेसि पासाउ लहइ अवरत्थ । गंतुं तो तत्थेवय निवसइ अच्चंतदोगच्चो ॥ १२ ॥
जो वसिओ धवलहरे विचित्तचित्ते तिभूमिए सययं । सो वसइ ताव जलसीयधूमिओ जलकुडीरम्मि ॥ १३ ॥ जो
मंदपवणपरितरलसिक्किरिच्छायमस्सिओ भमिओ । विक्कयकज्जे सो भमइ कट्ठहारकयच्छाओ ॥ १४ ॥ जो संसुत्तो
दोलाचलंतपल्लंकतूलियासु सया । सो सुयइ दब्भसत्थरयमुवगओ बाहुउवहाणो ॥ १५ ॥ पडिजहरंबरेहिं सिंगारो
जेण सबया विहिओ । बहुल्लिदडंडियाइं परिहइ सो मलिणवत्थाइं ॥ १६ ॥ जो गरुयतुरंगसुहासणेसु आरुहिय सबया
भमिओ । परियडइ फुडणखंजंतपयजुत्तो सोणुवाहणओ ॥ १७ ॥ नवरं इस्सरियम्मिव दारिदेवि हु पिया न तं मुयइ ।
“उदयक्खएसु दइए समचित्ताओ सईउ सया” ॥ १८ ॥ अइसुहिओ होउं सो अच्चंतं दुहभरं समणुहवइ । पाविय संपुन्न-
सिरी किं खंडिज्झइ नय मयंको ॥ १९ ॥ समयंतरम्मि कम्मवि वीवाहे सेट्ठिपुत्तकन्नाए । पारद्धे नयरजणो निमंतिओ

वासपूजायां
गन्धबन्धुर-
कथा

॥ ४० ॥

भोयणनिमित्तं ॥ १४२० ॥ सो चिंतइ अज्ज निमंतणं इहागच्छिही अओ मज्झ । वत्तणकज्जे जुज्झइ खडाइआह-
रणगमणं नो ॥ २१ ॥ गेहेच्चिय अच्छिस्सं जमिह निमंतयनरो खडप्फुडिही । इय चिंततो तत्थ ट्ठिओ दिणप्पहर-
जुयलं जा ॥ २२ ॥ मज्झंदिणेवि जाए जा को वि न से निमंतओ पत्तो । ता परिभावइ एवं नाहं नाओ गिहठि-
ओत्ति ॥ २३ ॥ ता जामि तत्थ सयमवि नियघरगमणम्मि मज्झ का लज्जा । अगयस्स पुणो सयणा लहु रुसिस्संति
जा जीवं ॥ २४ ॥ इय कहियं कन्ताए सा जंपइ नाह मोहमूढोसि । धणिणो सहोयरेणवि दरिद्रिणा किं न लज्जन्ति
॥ २५ ॥ नाह कुचेलोत्ति दरिद्रिओत्ति ववहारकरणअखमोत्ति । न निमंतिओ धुवं कुणसु नियमणे मा तुमं भंतिं
॥ २६ ॥ न कयाइ मज्झ भणियं तए कयं कुणसु संपयंपि तुमं । जं पडिहाइ मणे तं जइ जंपिय सा ठिया मोणे
॥ २७ ॥ इय संगयंपि भणिरिं अवगंनिय तं गओ स वीवाहे । “अहव हियाहियविसये कुओ विवेओ जडमईणं”
॥ २८ ॥ अब्भुक्खणभद्दासणउववेसणपायसोहणप्पमुहं । विरइज्जंतिं पेच्छइ पडिवत्तिं ईसरजणस्स ॥ २९ ॥ तंबो-
लकरे विरइयविलेवणे पत्तपट्टउयघत्थे । भुत्तुत्तरे पलोयइ निग्गच्छन्ते धणट्ठनरे ॥ ३० ॥ अब्भुक्खणंपि न लहइ आस-
णपयसोयणाइ कत्तो सो । तो तंबकडाहिजलेणब्भुक्खिय धोयए पाए ॥ ३१ ॥ उवविट्ठो पडिवालइ आमंतणमत्तणो
निरिक्खइ य । वाहरिय गोरवेणं भोइज्जंतं परजणंपि ॥ ३२ ॥ विहिय अदिस्सीकरणेव तम्मि दिट्ठिंपि न खिवए
कोवि । दूरे चिट्ठउ पक्कं न वंजणप्पमुहभोज्जं से ॥ ३३ ॥ तस्स तह संठियस्सवि दिणमद्धप्पहरसेसयं जायं । भोज्जत्थे
निवसन्ति पेच्छइ पज्जंतपंतिं सो ॥ ३४ ॥ चिंतइ य किं अवन्ना इमाणमह्वाउलत्तमच्चंतं । जं मह नियडा भोयणकज्जे
नीया न चेव अहं ॥ ३५ ॥ ता जामि सममिमेहिं भुंजामि निए गिहंमि का लज्जा । एवं परिभावन्तो पत्तो नर-
पंतिमज्झंमि ॥ ३६ ॥ दोपासरुंदभद्दासणोवविट्ठाण ईसरनराणं । मज्झे उवविट्ठो गहियभायणो विट्ठरे नीए ॥ ३७ ॥

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ४१ ॥

पित्तलपडिग्गहट्टियगुरुपरियलजुयलमिलणअंतरियं । भूमिगयभायणं से नयणाणमगोयरं जायं ॥ ३८ ॥ खज्जूरद-
क्खदाडिमअंबयखारक्खसक्कराईयं । दिन्नं अन्नाण न दायगेण से भायणं दिट्ठं ॥ ३९ ॥ तह सालिसूवसालणयसप्पि-
पक्कन्नपेयपमुहाण । किंपि न विखत्तं अहिस्सभूमितलमुक्कथाले से ॥ १४४० ॥ दट्ठूण दहिविमिस्सं भुंजंतो फुरियगरुय-
अवमाणो । सिररइयभायणो तेसिमग्गओ नच्चिरो पढइ ॥ ४१ ॥ “हे दारिद्व नमस्तुभ्यं सिद्धोऽहं त्वत्प्रसादतः । जग-
त्पश्यामि येनाहं न मां पश्यति कश्चन” ॥ ४२ ॥ एए मह जणयसहोयरस्स पुत्तत्ति भायरो मज्झ । भाउज्जायाउ इमाउ
भाइणिज्जा इमे सवे ॥ ४३ ॥ जह मंततंतविज्जाइएहिं सिद्धा हवन्ति अहिस्सा । जाणह तहा ममंपि हु नूणं दारिद-
सिद्धोत्ति ॥ ४४ ॥ जइ होमि न सिद्धोहं ता दिट्ठो किं निएहिं वि इमेहिं । सयणेहिं सवेहिंवि भोयणकरणोवविट्ठोवि
॥ ४५ ॥ सोजंनं सुहिभावं सयणत्तं परिचयं च दक्खिन्नं । कुणइ धणड्डेण समं दरिहिणा नेव सब्बजणो ॥ ४६ ॥
जे भोयणवत्थाइव्ववहारे काउमक्खमा नूणं । जह मह तह अन्नाणवि न कीरए कावि पडिवत्ती ॥ ४७ ॥ सुद्धा जाई
सवुत्तमं कुलं निम्मला कलाओवि । धणरहियाण न किंचिवि सयावि जेणेरिसं भणियं ॥ ४८ ॥ “जाई कुलं कलाओ
तिन्निवि पविसंतु कंदरे विवरे । अत्थोच्चिय परिवड्डु जेण गुणा पायडा हुंति” ॥ ४९ ॥ केणावि कारणेणं न इमेहिं
पलोइतो इय भणंतो । नीहरिउं सो अवमाणदूमिओ नियगिहं पत्तो ॥ १४५० ॥ पिय मइ वारंतीएवि न ट्ठिओ ता एत्ति-
यस्स जोगो तं । इय जंपिरीए भज्जाए भोइओ सीयरब्बाइ ॥ ५१ ॥ दारिदेणं दूरं दूमिज्जंतस्स तस्स वच्चन्ति । दिवसा
विसायवसयस्स अन्नया सो गओ रत्ते ॥ ५२ ॥ पेच्छइ य तरुछायाए संनिविट्ठे मुणीसरे संते । सिद्धंतसुंदरक्खे
दक्खे सिक्खाए साहूण ॥ ५३ ॥ जे समयग्गंथा इव सहंति आयावरवाणसमवाया । विन्नाया धम्मकहापण्हवायरण-
परमाया ॥ ५४ ॥ धणनाससयणपरिहवडुस्सहदोगच्चदूमियगणो सो । ते दट्ठूण सुहोदयवसओ तेसिं गतो पासं ॥ ५५ ॥

वासपूजायां
गन्धवन्धुर-
कथा

॥ ४१ ॥

वासपूजायां
गन्धवन्धुर-
कथा

भक्तिभरनिम्भरंगो पणमिय पयकमलमिलियभालयलो । उवविट्ठो जंपइ पढु गिहिजोगं कहह मह धम्मं ॥ ५६ ॥
आह पढू आयन्नसु नारयतेरिच्छनरसुरविभेया । भवइ भवो चउभेओ दुहमेवय चउसुवि गईसु ॥ ५७ ॥ पाणि-
वहप्पमुहमहापावा निवडंति पाणिणोणेगे । नरएसु तेसु वि सहंति वेयणं विरसमारसिरा ॥ ५८ ॥ तिरियनरभवंतरिया
पुणरुत्तणुभूयसव्वनरयदुहा । बहुसो वि तिरिच्छंते सहन्ति समुवज्जिऊण दुहं ॥ ५९ ॥ सासयविरोहवहाहदो-
हमंसासिमारणाईणि । असुहाइं समणुहविऊण केवि अज्जंति मणुयत्तं ॥ १४६० ॥ तम्मि वि धम्मविरहिया दीणा दारिद-
दुहभरकंता । विहलीहूयमणोरहमाला परिभवपयं हुंति ॥ ६१ ॥ देवावि परप्पेसत्तदुसहईसाविसायवियलंगा । अत्ता-
णामकयसुकयं निंदंता दुहमणुहवंति ॥ ६२ ॥ एवं पावंति सुहं न गइचउकेवि धम्मपरिहीणा । धणवज्जियव्व विवणीए
नियमणोभिमयवरवत्थुं ॥ ६३ ॥ ता धम्मोच्चिय कज्जो दुविहो सो साहुगिहिविभेएहिं । पढमे दसेव भेया भेया
वीयम्मि बारस उ ॥ ६४ ॥ संमत्तजुया दोन्निवि दिंति सिवं तंपि मुणसु संमत्तं । गयरायदेव-निगंथसुगुरु-नवत्तस-
इहणा ॥ ६५ ॥ एगयरंपि असत्तो धंमं काउं करेइ भावेणं । अट्ठप्पयारपूयं जिणाण जं सा वि सिवजणणी ॥ ६६ ॥
नेवज्जकुसुमअक्खयदीवयफलसालिधूववासेहिं । इय अट्ठविहा पूया कया जिणिंदाण भवहरणी ॥ ६७ ॥ अट्ठवि काउ-
मसत्तो सत्तो जइ कुणइ वासपूयंपि । तित्थेसरस्स ता जाइ तस्स पावं जओ भणियं ॥ ६८ ॥ धणसारहरिणनाही-
सुयंधवरवासखेयपूयमिसा । जिणपवणसंगमेणव पावरयं दूरमुड्डेइ ॥ ६९ ॥ ता धम्मसील पत्तं मणुयत्तं मा मुहा तुमं
नेसु । समुवज्जसु वासेहिंवि पूइत्तु जिणं परमपुन्नं ॥ १४७० ॥ इय सोउं सो सद्धम्मदेसणं सूरिणो नमिय भणइ । पढु
मह मंहापसाओ कओ इमं साहिउं धम्मं ॥ ७१ ॥ नूण निरीहा तुब्भे परोवयारेक्कवद्धवावारा । जं मह दरिदियस्सवि
एवं धम्मं समाइसह ॥ ७२ ॥ इय जंपिय पणयगुरु गहियतणार्ह गओ गिहे नियए । कहिओ य भारियाए पूयाफल-

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ४२ ॥

सवणवुत्तंतो ॥ ७३ ॥ तीउत्तमहम्मफलं पिय तुह सवंपि कुणसु ता धम्मं । जेण न भवंतरेवि हु विडंबणा एरिसी होइ ॥ ७४ ॥ तेणुत्तमिमं काहं जंपेउं गंधियावणम्मि गओ । तेण भारयमुल्लेणं गहिया सवुत्तमा वासा ॥ ७५ ॥ तत्तो हिययब्भन्तरवियंभिओहामभत्तिपब्भारो । जिणमंदिरंमि चलिओ रयणमए तम्मि पत्तो य ॥ ७६ ॥ सच्छप्फालिहदी-
हरदंडेनिलपसरिया सियवडाया । जम्मि सुरेहिंवि नज्जइ सविम्हयं गयणगंगव ॥ ७७ ॥ कंकेलितमालवणेसु जस्स पविसंति रयणकरदंडा । रागहोसवणारयणमुक्कजिणरायवाणव ॥ ७८ ॥ तो सो पहिट्ठचित्तो तम्मि पविट्ठो विसिट्ठ-
जिणभवणे । उवसन्तकन्तरूवं अवलोयइ उसहजिणनाहं ॥ ७९ ॥ तो विप्फुरंतबहुमाणपसरवसपुलयकलियतणुजट्ठी । आणंदअंसुजलभरपक्खालियवयणवच्छयलो ॥ १४८० ॥ उल्लसियमणो वियसन्तलोयणो कुणइ सुरहिवासेहिं । पूं पहुणो नियजम्मसहलयं मन्नमाणो सो ॥ ८१ ॥ असरिसबहुमाणवसो पुणरुत्तं भूमितलमिलियभालो । पणमिय पलोइय चिरं जिणेसरं आगतो सगिहे ॥ ८२ ॥ कहियं पियाए वासेहि जिणवरो पूइओत्ति तो सावि । बंधइ अणुवमपुन्नं पसंस-
माणी इमं अट्ठं ॥ ८३ ॥ कइयावि दोवि निययाउअंतमणुसरिय मरिय जायाइं । अमरत्तेणं आरणकप्पे सुररायसरि-
साइं ॥ ८४ ॥ एगवीससागराइं भुत्तं सुरलोयलच्छिविच्छड्डं । सिद्धाययणजिणञ्चणकरणज्जियसुकयसंभारा ॥ ८५ ॥ चविय तओ वसुहासारपट्टणे कित्तिबंधुरनिवस्स । जाओ धणावहसुरो पुत्तो असमाणगुणजुत्तो ॥ ८६ ॥ धणवइ-
अमरोवि पुणो उदयाणंदे पुरम्मि उप्पन्ना । उदियप्पयावरन्नो कन्ना उदयस्सिरी नाम ॥ ८७ ॥ हुंतो हं पुवभवे तुह जणओ मरिय बारसमकप्पे । बावीससायराऊ संजाओ भासुरो अमरो ॥ ८८ ॥ तं जोवणमणुपत्ता पत्ता कीलाकए इहुज्जाणे । पुवविदेहा वलिओ वंदिय जंगमजिणिंदे हं ॥ ८९ ॥ मह दिट्ठिपहे पत्ता उल्लसिओ पुवभवभवो नेहो । नाया य ओहिणा पुवभवसुया तं तओ ज्झत्ति ॥ १४९० ॥ कयनरमऊररूवेण एत्थ उववेसिउं मए कुमरि । तुह पुवभवा

वासपूजायां
गन्धबन्धुर-
कथा

॥ ४२ ॥

दोन्निवि कहिया नियभवदुगेण समं ॥ ९१ ॥ तं सोउं कुमरी जाइसरणसच्चवियपुबभवचरिया । सिरिगंधबंधुरम्मि
अणुरत्ता पुबभवदइए ॥ ९२ ॥ तो झत्ति नरमऊरो चलकुंडलहारकंठकयसोहो । जाओ अमरो बहुरविपयावप-
ब्भारदुनिरिक्खो ॥ ९३ ॥ तो सा कयप्पणामा पूयइ तं सुरहिपरमवत्थूहिं । “इयरम्मि वि कुलबाला विणयवई किन्न
जणयंमि” ॥ ९४ ॥ जंपइ य ताय तुमए जह कहियं तह मएवि सच्चवियं । पुबभवदुगचरियं सिविणे दिवसाणुभूयं व
॥ ९५ ॥ ता तुमए मह कहिओ जो पुबभवुब्भवो पिओ कुमरो । इण्हिपि तं वरिस्सं “सईओ न नरंतरमईओ” ॥ ९६ ॥
आह सुरो रिद्धीकरी पूया अणुमोइयावि तुह जाया । फलइ बहुं थेवंपिहु बीयं ववियं सुभूमीए ॥ ९७ ॥ तो दिट्ठपच्चया
तं करेज्ज धम्मज्जमं सया वच्छे । “निच्छइए कल्लाणे न पमाओ जुज्जए जइवा” ॥ ९८ ॥ एवं धम्मवएसं दाउं सहसा
तिरोहिओ तियसो । कुमरी वि गंधबंधुरकुमरे रत्ता गया सगिहे ॥ ९९ ॥ न मुणइ छुहं न पावइ निहं न वियाणए
तिसं बाला । जलणज्जालाजलियं व विरहविहुरा वहइ देहं ॥ १०० ॥ मन्नइ वीयं व सा चित्तसालियं मुम्मुरंपिव मुणालं ।
आभरणं दुम्मरणं व पावपूरं व कप्पूरं ॥ १ ॥ एवमवत्थं कुमरिं दहूण सहीओ तीए नरवइणो । सार्हिति पुबभवभवद-
इए रत्ता तुह सुयत्ति ॥ २ ॥ नाऊण निवेणवि सहिमुहेण दुहियाए पुबभवदइयं । कन्नंपि जाणिउं पियविओयसहणा-
सहं दूरं ॥ ३ ॥ तवेलंच्चिय मंडलियमंति सामंतधाइसंजुत्ता । बलकलिया पट्टविया सयंवरा कन्नया तुज्झ ॥ ४ ॥ तीए
अहं सत्थकहाकवविणोएसु सव्वया सच्चिवो । तो तं मोयावेउं तं वद्धाविउमिहं पत्तो ॥ ५ ॥ चउपंचदिवसमज्झे सावि हु
तुह पुबभवपिया एही । इय विन्नविउं कुमरं कीरो मोणं समलीणो ॥ ६ ॥ तं सोउं जाईसरणनायनियपुबभवदुगो
कुमरो । कुमरिं पइ जायदढाणुरायवसपरवसो जाओ ॥ ७ ॥ चिंतइ तइया दइया निच्चंपि हियं पयंपमाणीवि । न
मए तिणं व गणिया अहो अहंकारमूढेण ॥ ८ ॥ दुहंतोवि दरिदोवि दुम्महोवि हु सईए तीए अहं । ईसरसेट्टिसुयाएवि

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ४३ ॥

पुबभवे नेव परिहरिओ ॥ ९ ॥ ताहमवि पुबभवभवकंतं मोतुं न काहमन्नपियं । रंजिज्जइ इहभविएवि किं न परभवभवे-
रत्ते ॥ १५१० ॥ इय परिभाविय विज्जावणट्ट नियमुद्धियाउ कीरस्सा । निक्खिवइ चरणजुयले कंठमि पुणो रयणकडयं
॥ ११ ॥ भणइय कीर तुमं उभयहावि सउणो कहेसि कल्लणं । नहि निग्गुणाण एवंरूपवित्ती हवइ नियमा ॥ १२ ॥
ता तं गंतुं कुमरीए कहसु कीरेस इय मह पइन्नं । तीए जहा संपज्जइ मह विसए मणसमाहाणं ॥ १३ ॥ आएसोत्ति
भणित्ता तयणु सुओ उड्डिऊण संपत्तो । कुमरीपासे सोऊण तं ठिया सावि संतुट्ठा ॥ १४ ॥ कुमरवयंसेहिं इमं सबं पि हु
साहियं नरिंदस्स । तं सोउं तेणुत्तं किमजुत्तमिमम्मि कल्लणे ॥ १५ ॥ जं गुरुयरायकुमरी सयंवरा एइ गुरुनिवसुयस्स ।
इहभवभवावि किं पुण भवन्तरूपत्तअणुराया ॥ १६ ॥ इय जंपिय कारविया पुरसोहा राइणा पहिट्ठेण । मोतुं वीवाहमहं
गिहीण परमूसवो नन्नो ॥ १७ ॥ पच्चोणीए तीए पेसइ सामन्तमंतिमंडलिए । “गोरवमियरेवि गुरू विरयइ किं नोणुरायपरे”
॥ १८ ॥ आवासदाणसम्माणकरणसमुहपसागयं तीसे । विहियमियरोवि अतिहि पुज्जो किं पुण नरिंदसुया ॥ १९ ॥
उत्तमलग्गे कुमरो कुमरिं वीवाहिओ नरिंदेण । कुलवुड्डिकरे कज्जे किं कोइ पमायमायरइ ॥ १५२० ॥ तीए सह विसय
सोक्खं माणइ कुणइ य सुधम्मकम्मं सो । इहलोइयपरलोइयकज्जेसु समुज्जया गरुया ॥ २१ ॥ समयंतरम्मि कम्मवि
कुमरं रज्जंमि ठविय नरनाहो । कयपवज्जो संजायकेवलो मोक्खमणुपत्तो ॥ २२ ॥ नवनिवई नीईए पालइ रज्जं अमि-
हवइ दुट्ठे । सिट्ठे पूयइ, मन्नइ महायणं गुणिगुणे थुणइ ॥ २३ ॥ एवं निरवज्जसरज्जकज्जकरणुज्जयस्स नरवइणो ।
जंति दिणाइं दिणमणिकरभरसरिसप्पयावस्स ॥ २४ ॥ जाओ कयाइ देवीए तीए सुहलक्खणो सुओ तस्स । काउं
वद्धावणयं नामं गुणवंधुरोत्ति कयं ॥ २५ ॥ लालिज्जंतो धाईहिं वद्धिओ जाव पंचवरिसाइं । परिपाढिओ य अज्झा-
वएहिं सबाउ वि कलाओ ॥ २६ ॥ पत्तो य जौवणं तरुणकामिणी नयणमणहरं रंता । परिणाविओ नरिंदाण रम्मरूवाओ

वासपूजायां
गन्धवन्धुर-
कथा

॥ ४३ ॥

कन्नाओ ॥ २७ ॥ ददुं तं रज्जमहाभरधरणसमत्थमुत्तमे लग्गे । अहिसिंचइ नियरज्जे राया रिद्धिप्पबंधेण ॥ २८ ॥
 काराविऊण जिणइंदमंदिराइं गिरिंदरुंदाइं । सूरीहिं पइट्ठाविय मणिमयतिथिसरे तेसु ॥ २९ ॥ सिद्धंतपोत्थयाइं लिहा-
 विउं पृइउं च सिरिसंधं । घोसाविउं अमारिं मोयाविय सबगुत्तिनरे ॥ १५३० ॥ आरुहिय रयणसिवियं दिंतो दाणाइं
 दीणदुत्थाण । गुरुरिद्धीए गंतूण सुगुरुपासंमि पवइओ ॥ ३१ ॥ अहिगयसुयसब्भावा पाउब्भूयप्पभूयसंवैगो । निम्मू-
 लुम्मूलियघाइकम्मवसपत्तनवनानो ॥ ३२ ॥ महुस्सरसहेसणपडिबोहियभूरिसवसंधाओ । संपत्तो सो सासयसोक्ख-
 समिद्धीए सिद्धीए ॥ ३३ ॥ एयस्स वासपूया जह जाया सिद्धिसोक्खसंजणणी । तह अन्नस्सवि जायइ जइयवं ता सया
 तीए ॥ ३४ ॥ ॥ वासपूजा ॥ इय तिहुयणसामिअणन्तनाहकहियम्मि अट्टपूयफले । बहुमाणपसअकलिओ कयंबपरिमल-
 महीनाहो ॥ ३५ ॥ ॥ इति श्रीअनंतनाथचरित्रगतपूजाष्टककथानकानि । समाप्तोयं ग्रन्थः ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु ॥
 ॥ श्रीः ॥ यादृशं पुस्तकं वीक्ष्य तादृशं लिखितं मया ॥ हीनाधिक्यैः स्वरैर्वर्णैरस्माकं दूषणं नहि ॥ १ ॥ * * ॥

धम्मधरुद्धरणमहावराहजिणचंदसुरिसिस्साण । सिरिअम्मएवसूरीण पायपंकयपरेणेह ॥ १ ॥ सिरिविजयसेणगणहर-
 कणिट्ठजसदेवसूरिजेट्ठेहि । सिरिनेमिचंदसूरीहिं भवलोओवएसट्ठा ॥ २ ॥ सयमेव कयाउ अणंतसामिजिणरायचारु-
 चरियाउ । पूयट्ठगमुद्धरियं तं नंदउ तिहुयणं जा उ ॥ ३ ॥ पच्चक्खरगणणाए सिलोगमाणेणमेत्थ जायाइं । पूयट्ठगम्मि
 सयरीसमहियअट्टारससयाइं ॥ ४ ॥ छ ॥ ग्रंथाग्रं १८७० ॥ छ ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥ * ॥ * ॥ * ॥

वासपूजायां
 गन्धबन्धुर-
 कथा

❀❀ संपादकीय निवेदन ❀❀

अनंत कल्याणकारी श्री अनंतनाथप्रभु प्रसादित अतिसुन्दर कथाओंसे युक्त श्री पूजाष्टक वाचकोंके करकमलोंमें समर्पण करते अति आनंद होता है, इस चरित्रकी प्रेसकापी संवत् १९९४ में सूरत में ही तैयार हो चुकी थी, परंतु प्रकाशित करनेका खर्च भारी तो इस वर्ष पंन्यासप्रवर श्री सुमति विजयजी गणिवर्यादिकी प्रेरणा द्वारा इन गृहस्थोने प्राप्त किया है,

सहायक नाम	मुकाम	नकल
शाह रायचंद गुलाबचंद	अच्छारी	२००
„ दलाजी जेताजी	कोपरली	१२५
„ धनराज खीमचंद	वापी	१२०
„ रायचंद हरखचंद	„	१००
„ छगनलाल प्रेमचंद	„	५१
„ कस्तुरचंद धनाजी	अच्छारी	५१
„ मगनीराम रामसुख	वापी	५०
„ हरखचंद वालाजी	„	५०
„ चूनीलाल जसरूपजी	„	५०
„ ज्वेरचंद प्रेमचंद	देगाम	५०
शाह केसरीचंद परागजी	कोपरली	५०

सहायक नाम	मुकाम
शाह धनजी ज्वेरभाइ	वापी
„ नगीनचंद धूलाजी	„
„ रायचंद प्रागजी	„
„ पूनमचंद वीरचंद	„

विद्वान् वाचक और व्याख्याता इस ग्रंथरत्नसे अनंतलाभ उठावें इति शम्

आ. विजयक्षमाभद्रसूरि

मोरी बेडा (मारवाड)

अक्षयतृतीया सं. १९९७